॥ रामकथा ॥

मोरारिबापू

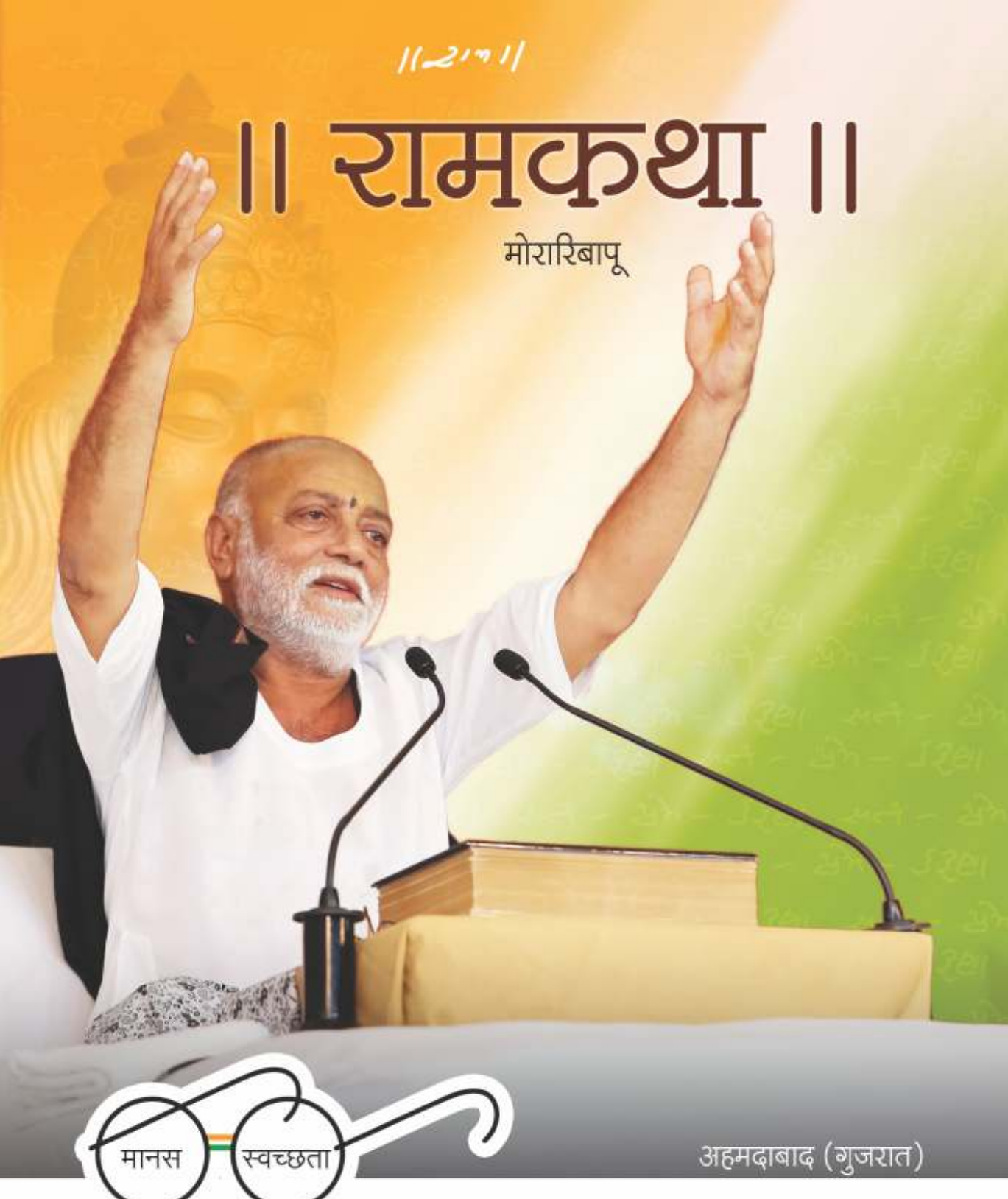

मानस स्वच्छता

अहमदाबाद (गुजरात)

लीला सगुन तो कहहिं बखानी। सोइ स्वच्छता करइ मल हानी।।
एक कलप एहि बिधि अवतारा। चरित पवित्र किए संसारा।।

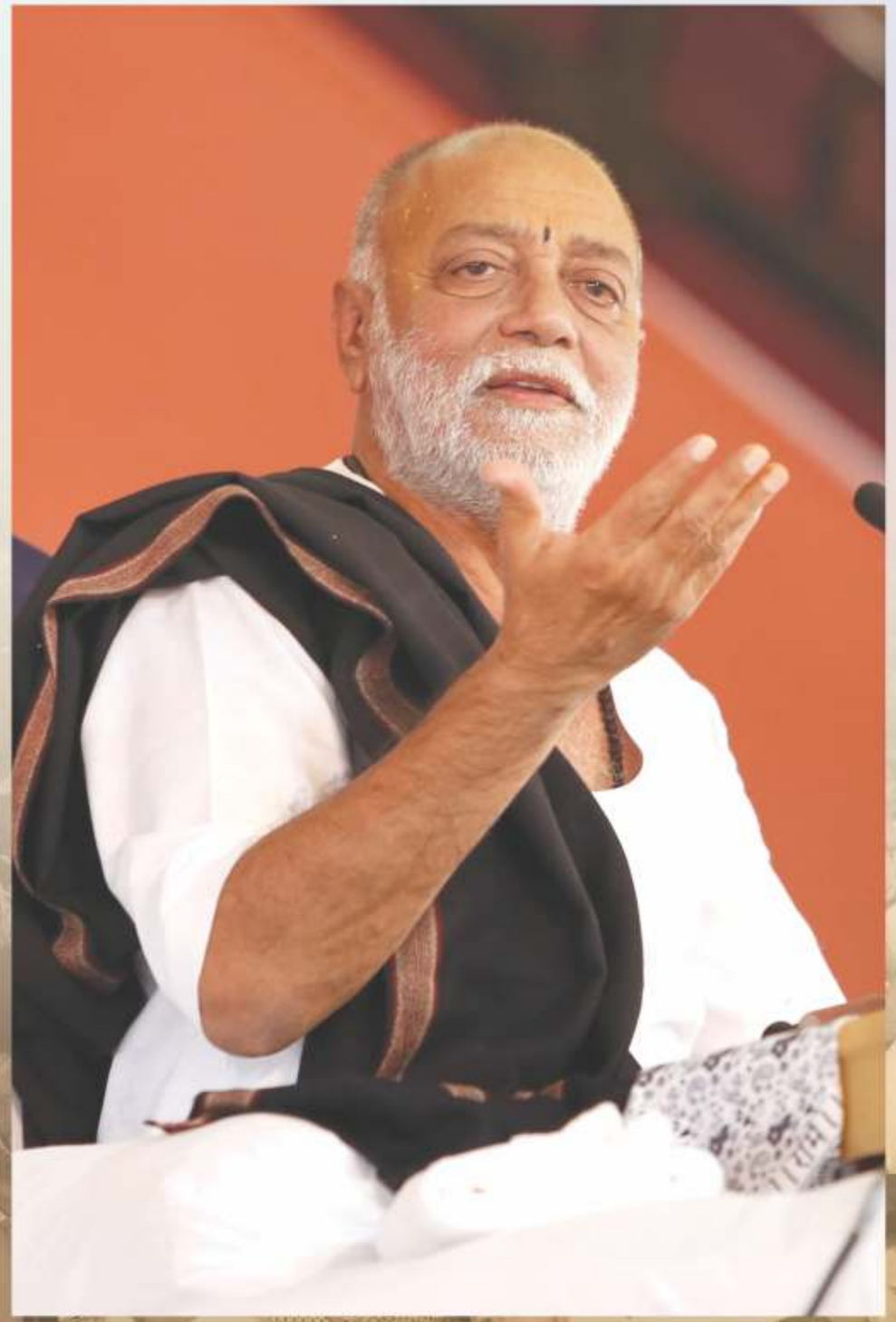

।। रामकथा ।।

मानस–स्वच्छता

मोरारिबापू

अहमदाबाद (गुजरात)

दिनांक : १२-१२-२०१५ से २०-१२-२०१५

कथा-क्रमांक : ७८५

प्रकाशन :

फ़रवरी, २०१७

प्रकाशक

श्री चित्रकूटधाम ट्रस्ट,

तलगाजरडा (गुजरात)

www.chitrakutdhamtalgajarda.org

कोपीराईट

© श्री चित्रकूटधाम ट्रस्ट

संपादक

नीतिन वडगामा

nitin.vadgama@yahoo.com

हिन्दी अनुवाद

प्रो. कमल महेता

रामकथा पुस्तक प्राप्ति सम्पर्क–सूत्र :

ramkathabook@gmail.com
+91 704 534 2969 (only sms)

ग्राफिक्स

स्वर एनिम्स

प्रेम–पियाला

अहमदाबाद (गुजरात) में दिनांक १२–१२–२०१५ से २०–१२–२०१५ दरम्यान मोरारिबापू की रामकथा का गायन हुआ। 'मानस–स्वच्छता' विषय पर केन्द्रित रामकथा के अंतर्गत बापू ने विशिष्ट शैली में स्वच्छता की महत्ता बताई। विश्ववंद्य महात्मा गांधी के स्वच्छता विषयक विचार को ग्रहण कर, हमारे आदरणीय प्रधानमंत्रीश्री ने राष्ट्रीय स्तर पर स्वच्छता अभियान शुरू किया। इस विचार को बापू ने व्यासपीठ के माध्यम से अपने ढंग से प्रस्तुत किया।

'मानस–स्वच्छता' रामकथा द्वारा बापू ने बाह्य स्वच्छता और भीतरी पवित्रता की विशेष महिमा की। ऊपरी स्वच्छता और भीतरी पवित्रता श्रेष्ठ स्वच्छता अभियान है, ऐसे सूत्रात्मक निवेदन के साथ बापू ने यह भी कहा कि 'रामायण के कई पात्र और प्रसंग बाहर से बहुत ही स्वच्छ है पर भीतर से पवित्र नहीं है। कई पात्र और प्रसंग बाहर से बहुत ही पवित्र है पर भीतर से स्वच्छ नहीं दिखाई देते। जबकि कई पात्र और प्रसंग आंतर–बाह्य स्वच्छ और पवित्र है। कुछ पात्रों और प्रसंगों के दृष्टांत द्वारा बापू ने यह बात अच्छी तरह से समझाई।

बापू ने कहा, रामकथा का हेतु आंतर–बाह्य मैल को दूर करना है। हमारे ऋषिमुनियों ने, बुद्धपुरुषों ने और हमारे सद्ग्रंथों ने समाज आंतर्–बाह्य पवित्र रहे ऐसे आदिकाल से प्रयत्न किए हैं। वेदकाल से किए गए वैश्विक स्वच्छता अभियान का सूक्ष्म स्तर पर समादर कर 'रामायण' और 'महाभारत' जैसे ग्रंथों द्वारा हमारें अमंगल को नष्ट कर मंगल की स्थापना की प्रवृत्ति भी स्वच्छता अभियान है, ऐसा बापू ने कहा। छ: सौ वर्ष पूर्व निम्न स्तरीय समाज में हरिकीर्तन करने गए नरसिंह मेहता ने आंतर–बाह्य मैल को दूर करने का प्रयत्न किया था, इसका पूरा आदर के साथ उल्लेख भी बापू ने किया था।

'राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान' केवल दंभ और पाखंड नहीं होना चाहिए।' ऐसा कहकर बापू ने नौ दिनों की कथा द्वारा समाज में एक मेसेज जायेगा इसका आनंद व्यक्त किया था। 'मानस–स्वच्छता' रामकथा द्वारा, 'मानस' के परिप्रेक्ष्य में बापू ने आंतर–बाह्य स्वच्छता और पवित्रता का विचारप्रेरक संदेश दिया था।

–नीतिन वडगामा

बाह्य स्वच्छता और भीतरी पवित्रता यह श्रेष्ठ स्वच्छता अभियान है

लीला सगुन तो कहहिं बखानी। सोइ स्वच्छता करइ मल हानी।।

एक कलप एहि बिधि अवतारा। चरित पवित्र किए संसारा।।

बाप, अहमदाबाद के आंगन में पुन: एक विशेष उद्देश्य सह रामकथा का अनुष्ठान या तो प्रेमयज्ञ शुरू हो रहा है। आरंभ में प्रेमयज्ञ का दीप जिनके हाथों प्रज्वलित हुआ ऐसे सब आदरणीय महानुभाव, तुलसी वल्लभनिधि ट्रस्ट के गिरीशभाई से लेकर सभी गुरुजन। आप सब मेरे श्रोता भाई-बहन, सबको कथा के आरंभ में व्यासपीठ से मेरे प्रणाम।

मुझे एक सूचि दी गई कि अहमदाबाद में यह मेरी बीसवीं कथा है। इसका अर्थ यह है कि अहमदाबाद में मैंने बहुत काम किया है। हम सब जानते हैं कि एक बहुत पवित्र उद्देश्य के लिए हमने रिवरफ्रन्ट पर कीडनी के दर्दियों के लिए आदरणीय डोक्टर पद्मश्री त्रिवेदी साहब को दिया वचन पूरा किया। इस बार पूरा राष्ट्र, गांधीबापू के विचारों को ग्रहण कर रहा है। यह विचार अपने तरीके से सर्वाधिक लोगों तक पहुंचे इसलिए एक पूरा स्वच्छता अभियान चल रहा है। विश्ववंदनीय गांधीबापू का यह स्वच्छता का विचार है। दिल्ही से ये अभियान आगे बढ़ा है। घोषणा हुई। आदरणीय पी.एम.साहब ने की। हमारे राज्य में और सभी जगह अपने-अपने ढंग से चल रहा है। गिरीशभाई ने कहा, इस बार की कथा स्वच्छता अभियान पर दीजिए। मैंने आह्वान स्वीकार किया ऐसा नहीं पर उन्होंने मुझे पान से मुंह मीठा करवाया। क्योंकि यह तुलसी वल्लभ ट्रस्ट है। इसके साथ वल्लभाचार्य का नाम जुड़ा हुआ है। मैंने हवेली के पान को स्वीकार किया। मुझे यह विचार पसंद है। उनकी इच्छा तीन हजार शौचालय बनाने की है। यह वैष्णवी मनोरथ है। भगवान उनकी मदद करे। हनुमानजी को प्रार्थना कि यह सब सफल हो। मैं व्यासपीठ पर से तलगाजरडा चित्रकूटधाम में बिराजमान श्री हनुमानजी की प्रसादी रूप इस अभियान में एक लाख रूपये का चेक अर्पण करता हूं। यह मत मानिए कि परस्पर समझौता होता है! मैं ऐसा साधु नहीं हूं। मैं तुलसी वल्लभनिधि को चेक भेजूंगा। आपके इस सफाई अभियान में एक तुलसीपत्र समझिए।

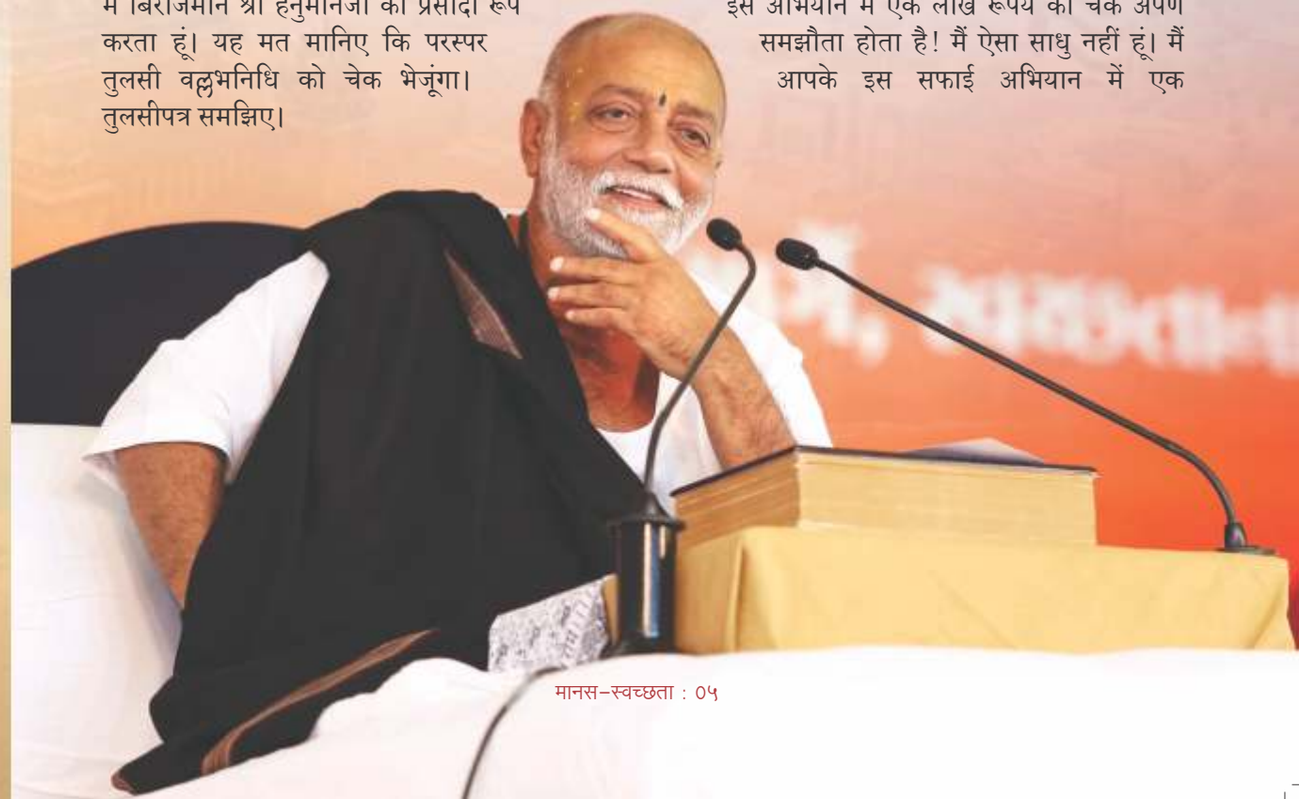

मेरा तो वह जीवनकार्य स्वच्छता का अभियान है। बाकी के अभियान तो बाद में शुरू हुए हैं। शौचालय के लिए तो रमणबापा के संकल्प द्वारा बारडोली में वर्षो पूर्व कथा का आयोजन किया था। हेतु बड़ा सुंदर है। आयोजकों का जो भी लक्ष्यांक हो, हनुमानजी इसमें सहाय करे ऐसा शुभ भाव जोड़कर मैं तुलसीपत्र अर्पण करता हूं। जब मेरे पास यह विचार आया, मुझे अंकित ने कहा, आप पत्रिका पर कुछ लिख दीजिए। तब मैंने दो वाक्य लिख दिए कि बाह्य स्वच्छता और भीतरी पवित्रता यह श्रेष्ठ स्वच्छ अभियान है। अखबारी रिपोर्ट अनुसार कहूं तो अपने देश के महामहिम आदरणीय राष्ट्रपति महोदय प्रणवदा थोड़े दिन पहले गुजरात में थे और गुजरात विद्यापीठ पदवीदान समारंभ में प्रवचन दिया जो मैंने अखबारों में पढ़ा। उन्होंने कहा, हमारे मन की स्वच्छता, विचारों की स्वच्छता भी बहुत आवश्यक है। मुझे लगता है कि हम बाह्य स्वच्छ रहे और आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखें।

हमारे ऊपर मैल होता है। हमारे कपड़ों पर धूल जम जाती है। ऊपर से जो होता है वह मैल है और अंदर से मल है। मैल और मल में बाह्य-आंतर फ़र्क है। हमें सत्संग द्वारा, रामकथा के हमारे वार्तालाप द्वारा, संवाद द्वारा ये दूर हो जाय ऐसा प्रयत्न करना है। मैं आपके साथ संवाद करूंगा। यह मेरी रीति है। मैं बोलूंगा; आप भी सहभागी बनिए। मैं आपसे बातचीत करता रहूंगा तो इस मंथन से कुछ सार निकले क्योंकि हम सद्भाव से एकत्र हुए हैं। मैंने दो-चार कार्यक्रमों में पौराणिक कथा रखी है कि समुद्रमंथन के समय देवतागण और असुरों ने द्वेषभाव छोड़कर, स्पर्धाभाव छोड़कर मंथन किया होता तो चौदह रत्न ही न निकले होते। किन्तु अगणित निकले होते। पर स्पर्धा और द्वेष से हुआ। हमें मंथन बिना द्वेष के बातचीत द्वारा, संवाद द्वारा करना है। सद्भाव से एकत्र हुए हैं। आपकी व्यासपीठ के प्रति आदर, मेरे प्रति ममता के द्वारा एक संवाद बना रहे हैं। अनेक रत्न निकल सकते हैं। वैचारिक और चिंतन के रत्न जो हमें भीतर से पवित्र कर सके। बाप, इस कथा का हेतु ऊपरी मैल दूर हो और अंदर से मल दूर हो ऐसा है। वेदांत में 'मल', 'आवरण', 'विक्षेप' तीन शब्द है। सरोवर के नीचे मल है, मिट्टी है, कीचड़ है यह यदि कुरेदा जाय तो पूरा सरोवर मैला हो जाय। हम तल को देख नहीं पाते।

'मानस-स्वच्छता' इस कथा का नाम देता हूं। 'रामायण' में एक ही बार 'स्वच्छता' शब्द आया है -

लीला सगुन तो कहहिं बखानी।
सोइ स्वच्छता करइ मल हानी।।

शुद्धि, विशुद्धि, शुद्ध, पवित्र, स्वच्छता सभी के अलग-अलग अर्थ है। पर ऊपरी स्तर से ये सभी प्राय: सगोत्री शब्द है। अत: इस कथा में मैं दो शब्द 'स्वच्छता' और 'पवित्रता' लूंगा। कथा गायन द्वारा गुरुकृपा से निमित्त बनूं। और पूरा होश में रहता हूं। आप शुभकामना देना कि मेरा यह होश बना रहे। यह मैं दिल से कहता हूं, साहब! आपको लगे बापू आशिष दे। यह ठीक है। आपकी उदारता है। छोटे-छोटे आदमियों की भी शुभकामना जरूरी है ताकि होश में रहूं। आध्यात्मिक जगत में कहा जाता है कि बुद्धपुरुष का पतन नहीं होता। चाहे न हुआ हो, होगा भी नहीं पर बुद्धपुरुष जागृत रहे यह जरूरी है। हम होश में रहे। बाप, मुझे तो यहां बोलना है, आपके साथ बोलूंगा। मैं आपको भी पूछुंगा। रामकथा को केन्द्र में रखकर आपके प्रश्न भी लूंगा।

'रामायण' के सभी पात्रों का दर्शन हमें बाहर से स्वच्छ कर सकते हैं। अंदर से पवित्र कर सकते हैं। हम होश में रहे इसीलिए ये प्रयोग चल रहे हैं। मैं क्यों ये कथाएं करता हूं? मुझे कई लोग कहते हैं बापू, आप कितनी कथाएं करेंगे? कितनी हो चुकी? सयाने सलाह भी देते हैं, कथाएं कुछ कम कीजिए। बीच में कम भी की थी। पर अब ज्यादा कर दी है। पहले मैं चौबीस कथाएं करता था फिर कम कर अठारह और फिर पंद्रह कर दी। अब फिर चौबीस करता हूं। बीस से चौबीस। फिर मुझे लगता है, यह न करूं तो क्या करूं? कहीं होश गंवा बैठे तो? अत: मैं आपसे बातें करना चाहता हूं। ताकि हम बाहर से स्वच्छ रहे। बाहर से तो हम स्वच्छ रहते ही है। रोज स्नान कर कपड़े बदलते हैं। स्वच्छ वस्त्र पहनते हैं। पर मन का क्या?

तुलसीदासजी 'विनय' में कहते हैं, जनम-जनम का मल लगा है। जनम-जनम का अंत:करण के साथ मल लगा है। बाह्य मैल तो निकल सकता है पर

भीतर का मल तो ऐसे संवाद आयोजित कर निकाल पायेंगे। कल मुझसे पूछा गया, 'बापू, यह कथा प्रासंगिक है?' मैंने कहा, मैं करता हूं तो मुझे प्रासंगिक लगेगी। यदि प्रासंगिक न हो तो आप क्यों सुनते हैं? बात तो वही की वही आयेगी। दशरथजी के यहां रामजनम होगा, फिर ब्याह के लिए जनकपुर जायेंगे। फिर वन में जायेंगे। फिर सीता का अपहरण होगा और फिर भगवान रावण को निर्वाण देंगे। फिर रामराज्य की स्थापना होगी। इसके सिवा कुछ नहीं होगा। मैं विनोद में कहता हूं, राम वनमें ही जायेंगे, वोशिंग्टन नहीं जायेंगे! यही कथा मुझे कहनी है। सूरज की किरन हररोज नई लगती है। गंगा का एक-एक बिंदु रोज नया लगता है। उसी तरह आपकी शुभकामना से मोरारिबापू को रामकथा रोज नई लगती है। कहां जाऊं? मुझे तो यह रोज नया लगता है। कोई न कोई बात मिलने पर प्रासंगिक लगती है। अत: आपके साथ संवाद करने का अवसर ईश्वर देता है। अभी कथाएं बढ़ा दी है। कथाएं न करे तो और क्या करे?

बाप, स्वच्छता अभियान हेतु हो रही इस रामकथा में जो भी एकत्रित होगा फलस्वरूप से शौचालय बनाने का संस्था का हेतु होगा वही होगा। पर अपने अंतर का मल जाय यह भी बहुत आवश्यक है। इसीमें से कुछ होगा ऐसा मुझे लग रहा है। तो 'स्वच्छता' और 'पवित्रता' शब्द लेकर रामकथा करेंगे। 'रामचरित मानस' में गोस्वामीजी एक बार 'स्वच्छता' शब्द का प्रयोग कर पवित्र, शुद्ध आदि द्वारा अलग-अलग अवसर पर अलग-अलग पात्रों को निमित्त बनाकर प्रकाश डालते हैं। मुझे गुरुकृपा से जो भी उमड़ेगा आपसे बातें करता रहूंगा। बाप, 'रामायण' में कई पात्र ऐसे हैं, प्रसंग भी ऐसे हैं कि बाहर से स्वच्छ लगे पर भीतर से पवित्र नहीं है। 'रामायण' में कई प्रसंग और पात्र ऐसे भी है जिसका आंतर्-बाह्य पवित्र और स्वच्छ है। 'मासानां मार्गशीर्षोऽहम्।' 'भगवद्गीता' में कृष्ण ने कहा है कि बारह महिनों में मार्गशीर्ष माह मेरी विभूति है। अपने पंचागानुसार यह शुरू हो चुका है। 'मानस' में ऐसी कितनी विभूतियां है जो परोक्ष है। तुलसी ने सुंदर सूत्रपात किया है, 'गुपुत प्रगट जहँ जो जेहि खानिक।' मैं भी आश्चर्य से घिरा हूं। सहसा आपकी शुभकामना से, गुरुकृपा से कुछ कडकता है तब लगता है इसमें बहुत कुछ पड़ा है। साहब! मैं एक प्रश्न पूछुं? कहिए, हां। बच्चों की तरह बोलिए। यहां बच्चों की तरह आईए। मैं भी आपके साथ बच्चों की तरह रहूंगा। यहां सारे ऊपरी मैल बाहर रखकर ही आईयेगा।

अगर वो अज़नबी है तो मेरे जहन में रहता क्यों है?
अगर वो संगदिल है तो शीशे का मसीहा क्यों है?

पता नहीं चलता है, समझ में नहीं आता कितना बड़ा अस्तित्व है! कितने रहस्यों से भरा हुआ! मैं आपसे एक प्रश्न पूछना चाहता हूं। हमारे सारे दु:ख मिट जाए, जिन्दगी में कोई दु:ख न रहे तो अच्छा है या बुरा? सोच समझकर जवाब देना। जल्दबाजी में मत कहना कि हम आध्यात्मिक है। बच्चे बनकर बात कीजिएगा। सातवीं कक्षा से आगे मत जाईयेगा। यार, मेरी हैसियत सातवीं कक्षा तक की है! हमारे दु:ख मिट जाए यह हमें पसंद है या ना पसंद? ईमानदारी से कहियेगा। दु:ख मिटे यह पसंद है या नहीं? जिसने भी कहा है भाई, दु:ख मिट जाय तो अच्छा नहीं है। यह उनकी ऊंचाई है कि उन्हें लगता है दु:ख मिट जाय तो हरिस्मरण शायद भूल जाय। कुंता माँ चाहती है, दु:ख के पहाड़ उन पर टूट पड़े जिससे कृष्ण विस्मृत न हो। ऐसी भी भूमिका होती है। हम है वहां तक कुछ हो, दु:ख मिटे यह अच्छा लगे यार। हम तो अभी तक वहां नहीं पहुंचे। हार्ट एटेक हो यह अच्छा है या न आए वह अच्छा है? जवाब दीजिए। यह सीधी बात है यार! आप जो माने वो ठीक है। इतना बड़ा क्लास। सभी के जवाब सुनने मुश्किल है।

दूसरा प्रश्न पूछता हूं, संशय मिटे यह अच्छा है या नहीं? मन की शंका मिट जाय, वहम टल जाय यह अच्छा है या नहीं? अच्छा है न? 'रामचरित मानस' ये मानता है बाप कि रामकथा से दु:ख मिटेंगे पर संशय नहीं। साधु की कथा सुनने से संशय मिटता है। 'रामायण' में स्पष्ट लिखा है कि रामकथा के श्रवण से दु:ख भागे हैं पर वहम भागा है विश्वास की स्थापना हुई हनुमानजी जैसे संत की कथा सुनकर। यहां 'साधु' शब्द रखता हूं। हनुमानजी जैसे साधुचरित हो। भले ही पेन्ट में हो। मुझे क्या फ़र्क पड़ता है? भले ही हाफ़ पेन्ट में हो। मैंने थोड़े दिनों से यह सूत्र कहना शुरू किया है। मुझ पर

नहीं, इस रामकथा पर भरोसा रखियेगा। हमारे जीवन में समस्याएं आती हैं इससे पहले ही समाधान आ चुका होता है। रावण से ही पहले हनुमान आ चुके थे। पर उस समय हम दुविधा में होते हैं। रावण मृत्युदंड की धमकी देता है तब हनुमानजी पहले से ही थे। हनुमान माने समाधान। रावण माने जीवन की समस्याएं। दशमुखी समस्याएं। बीस भुजाली समस्याएं। विशालकायी समस्याएं। अपने पूर्वजों ने सिखाया है कि हम जब सभी जगह से हार जाते हैं तब कहते हैं, हे हरि! ऊंचाई पर देखने का सिखाया है। वहीं कहीं हनुमान छिपा है। नरसैया गाता है -

मारी हूंडी स्वीकारो महाराज रे, शामळा गिरधारी.

हूंडी स्वीकार की गई है। चाहे तब स्वीकारी की गई है। दूसरी पंक्ति है -

मारो एक तमे आधार रे, शामळा गिरधारी.

●

दृढ इन चरनन केरो भरोसो, दृढ इन चरनन केरो,
श्री वल्लभ नख चन्द्र छटा बिन, सब जग मांहे अंधेरो ...

अवसर देखकर हनुमानजी प्रकट हुए। पहले मुद्रिका जानकी के हाथ में डाली। मुद्रिका पर 'राम' लिखा था। अग्नि मांगते थे तो लगा कि अशोक ने मुझे अंगार दिया है। मैं जलूं इसलिए मदद की। अशोक मुझे शोकमुक्त करना चाहते है। ऐसा भाव जगा। 'चकित चित्तव मुदरी पहचानी।' यह तो भगवान राम ने दी हुई मुद्रिका है। यहां कहां से आई? यह तो मुझे गुरुकृपा से ऐसे अवसर मिलते हैं और होश में होने पर बोलता रहता हूं कि 'मानस-मुद्रिका' पर मैं नौ दिन बोला हूं कि यह मुद्रिका क्या है? तुलसी कहते हैं, जानकीजी हाथ में मुद्रिका लेकर मैथिली भाषा में बातें करती है, हे बहन, अयोध्या की राज्यलक्ष्मी ने राम का त्याग किया, बनवास दिया। मैंने सुवर्ण मृग का सत्कार कर अपने पैरों पर कुल्हाड़ा मारा! मैंने भी राम का त्याग किया। राज्यलक्ष्मी नारी जाति, मैं भी नारीजाति और मुद्रिका तू भी नारीजाति। तू भी राम का त्याग कर आई? कल समाज में नारी पर कोई विश्वास नहीं करेगा। बाप! तू कहां से आई? मुद्रिका उनके साथ बातें करती हैं। भीतरी आवाज़ सच्ची हो तो कोई बारहखडी से बाहर की शब्दावलि सुनाई दे। जानकी के मन में आया कि यह मुद्रिका यहां कहां से आई? हनुमानजी को लगा कि मैं जल्दी बोलूं। तब उन्होंने प्रथम प्रयोग रामकथा का किया है। रामकथा ने सीता का केवल दु:ख मिटाया है, वहम नहीं।

रामचंद्र गुन बरनैं लागा।
सुनतहिं सीता कर दुख भागा।।

हनुमानजी रामकथा सुनाने लगे जानकीजी के दु:ख भागने लगे। सीताजी को लगा कि दु:ख तो दूर हुए पर यह संदेशवाहक कौन है? जानकी ने संदेह किया -

नर बानरहि संग कहु कैसें।
कही कथा भइ संगति जैसे।।

जानकीजी को हनुमान पर संदेह हुआ। रामकथा से दु:ख दूर हुए। पर संदेह नहीं गया। पूछा, बानर को मानव से कैसे संग हुआ? कहां राम महामानव? नहीं, महामानव राम के लिए हमने 'मर्यादा पुरुषोत्तम' का शब्दप्रयोग किया है पर राम सिर्फ़ मर्यादा पुरुषोत्तम नहीं, विवेक पुरुषोत्तम भी है। मेरी दृष्टि से राम का मर्यादा पुरुषोत्तम होने की अपेक्षा विवेक पुरुषोत्तम होना विशेष है। जो मर्यादा बांधता है जब कि विवेक मुक्त करता है। विवेक तो ज्ञान का सगोत्री शब्द होने के नाते ज्ञानमुक्ति प्रदाता है।

ग्यान मोच्छप्रद बेद बखाना।

हनुमानजी ने अपनी कथा कही। एक संग होने पर कहना पड़ा। नहीं तो व्यक्ति निजी कथा नहीं सुनाता। रामकथा कहने से दु:ख भागे। फिर हनुमानजी को कहना पड़ा कि आपको खोजने राम-लक्ष्मण निकले। मुझे सुग्रीव ने बताया। फिर मिलने गया। फिर ऐसा-वैसा हुआ। फिर हनुमानजी को अपनी कथा कहनी पड़ी।

बाप, एक बिनती करूं, यह 'बाप-बाप' बोलूं तब तालियां न बजाये। मैं शुरूआत करूं 'बाप' और आप तालियां बजानी शुरू करे भाव से; पर यह मेरा सहसंबोधन है। मैं इस शब्द का स्वाद लेता हूं वह तालियां बजने से टूट जाता है। आपका अहोभाव समझता हूं। मैंने दो-तीन बार कहा, तालियां मत बजाईए। सच्ची दाद तो वह होती है, सुनते-सुनते सन्नाटा छा जाय। आप सिर्फ़ अनुभव कर सके। हम ऐसा महसूस हो कि हम कहां बैठे हैं? यह आखिरी दाद है। ओसमाण एक शे'र गाता है कि इससे बढ़कर क्या दाद हो सकती है कि-

इससे बढ़कर और क्या मिलत हमें दादे-वफ़ा,
हम तेरे नाम से दुनिया में पहचाने गये ।

हे हरि, तेरे नाम से, हे चौपाई, तेरे गान से दुनिया हमें जानती है। यार, हममें कभी भी अहंकार न आए। हम जीव है। अब तो मैं कहता हूं, जंतु है। 'गीता' का शब्द पकड़ा है। इस अखिल ब्रह्मांड हम स्वयं को जंतु कहे यह भी घमंड है। हम कुछ भी नहीं है। पर मैं हूं ना यह आता ही रहता है। अत: हम निमित्त मात्र नहीं बन सकते। निर्धारित कार्य पूरे होने में देरी हो जाती है। समय लगता है नहीं तो घटना घट जाय। कुछेक कथा सुनने पर संशय होता है -

तबहिं होइ सब संसय भंगा।
जब कहु काल करिअ सतसंगा।।

तो, हनुमानजी कहते, हम इतना कर डाले। हुकम होने पर यह कर डाले। जानकीजी को संदेह हुआ कि रामजी ने जो बानर एकत्र किए हैं ये तेरे जैसे हैं कि बड़े हैं? उस समय हनुमानजी ने जानकी के सामने दिव्यरूप प्रकट किया। हनुमानजी की कथा सुनकर, दर्शन कर जानकीजी के संदेह का नाश हुआ। भरोसा हुआ। मेरा कहना है, रामकथा दु:ख दूर करे पर हनुमानजी जैसे संत की कथा वहम का नाश करे। वहमी कभी सुखी नहीं होता। यह काठियावाड की बोली है साहब! वहम की कोई दवाई नहीं है। सुविधापूर्ण जीवन में वहम-शंका का कीड़ा परेशान करता है। 'भगवद्गीताकार' योगेश्वर ने तो मृत्यु तक पहुंचाया है। 'संशयात्मा विनस्यति', ऐसा है बाप!

हम चाहते हैं कि प्रभु, कथा से हमारे दु:ख, हमारी चिंता मिट जाय। हम कुंता तक नहीं पहुंचे हैं। हमारे स्वभाव में नहीं है कि सभी वस्तुओं का स्वीकार करे। जो प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार ले उसे दु:ख लगता नहीं। ये बोलने में आसान है, समझना कठिन है। इसके लिए हमें खुद परीक्षा देनी पड़े। स्वीकारो तो गया समझो। स्वीकार महामंत्र है। साधक को हरि भजते-भजते वहां तक तैयारी करनी पड़े कि प्रशंसा या निंदा का स्वीकार कर लेना है। बातें आसान होती है। पर हमें प्रयत्न तो करना चाहिए। होश में रहना चाहिए। मैं आपके सामने बोलूं तो आपको यह मान नहीं लेना चाहिए कि बापू तो उसमें से बाहर निकल गए। दूसरों की नहीं जानता पर मेरे साथ मंथन चल रहा है साहब! द्वेषमुक्त चित्त से गा सकेंगे और सुनेंगे तो चौदह नहीं, चौदह सौ रत्न निकलेंगे।

हम एक ज़हाज के मुसाफिर हैं। याद रखिए। मैं बोलता हूं, आप सुनते हैं। जैसा आप बोलेंगे, मैं सुन लूंगा। बातचीत से कुछ निकले। यह रामकथा इसीलिए है कि संवाद से सर्जन हो। इस संवाद में से बाह्य स्वच्छता और भीतरी पवित्रता निर्मित हो तो धन्य हो जाए। यह उपदेश दृष्टि नहीं है। दिल से कहता हूं, यह नम्रता नहीं है। मैं जो अनुभव करता हूं, आपको कहता हूं। हम आदमी है, साहब!

रामकथा दु:ख मिटायेगी, संतकथा वहम मिटायेगी। साहब, वहम जैसी कोई पीड़ा नहीं है। कितना ही सुख हो पर एक बार शंका हो जाय तो भयंकर है। आपकी शुभकामना से प्रभुकथा मुझे हररोज नई लगती है। नहीं तो थक जाय। आप भी कहां थकते हैं? मुझे कईयों ने कहा, ये सब लाईव टेलिकास्ट हो रहा है फिर मंडप में सुनने कौन आयेगा? साहब, पैर फैलाकर चाय पीते टी.वी. में लाईव क्यों न देखें? पर मेरा अनुभव तो रोज नया है कि घर में टी.वी. है, लाईव टेलिकास्ट है, फिर भी लोग मंडप में क्यों आते हैं? यह समझ में नहीं आता! यह किसका जादू है? यह व्यासपीठ के प्रति आदर है। आपकी ममता व्यासपीठ से होने के कारण हम साथ मिलकर बात करते हैं। मैं आप पर उपदेश का बोझ थोपना नहीं चाहता। साहब, उपदेश देने की अपनी हैसियत नहीं है। हम छोटी-सी बात समझ ले तो बस है साहब! एकाद सूत्र पकड़ में आ जाना चाहिए, साहब!

तो 'रामायण' में कितने ही पात्र ऊपर से स्वच्छ है, अंदर से अपवित्र है। कितने अंदर से बहुत ही पवित्र है, ऊपर से स्वच्छ नहीं है। कुछेक घटना ऐसी है, प्रसंग ऐसे हैं जो आंतर्-बाह्य बिलकुल पवित्र है। ऐसे

‘मानस’ के पात्रों को केन्द्र में रखकर हम नौ दिन तक रामकथा की बातें करेंगे। एक मंगल मनोरथ स्वच्छता अभियान में राजगद्दी अपने-अपने ढंग से काम करे, सभी राज्य अपने-अपने ढंग से काम करे। मेरी व्यासगद्दी मेरे ढंग से काम करे। इसी तरह हम आगे बढ़ें। अभी पीठ पर से सोचता हूं कि हमारे यहां ‘पीठ’ शब्द आया। फिर ‘विद्यापठ’ शब्द आया। शंकराचार्य की पीठ। और फिर ‘मठ’ शब्द आया। ‘पीठ’ शब्द कितना पवित्र है! बहुत बड़ा ज्ञानपीठ एवोर्ड दिया जाता है। डर लगता है अत: होश में रहने की शुभकामना मागता हूं कि होश में रहना चाहिए। कहीं व्यासपीठ की पीठ ना मिटे, मठ न मिटे, मढ न मिटे, कहीं दुकान की बैठक न हो जाय! लेन-देन न हो, बाप! व्यासपीठ की बहुत जिम्मेदारी है। मैं आपकी शुभकामना से होश में रहना चाहता हूं। और ऐसे ही हम होश में साथ में रहेंगे तो हम बाहर के स्वच्छता अभियान, भीतर की पवित्रता अभियान यह हमें प्रसन्नता देते हैं। ऐसा भरोसा अनुचित नहीं है। आज की कथा की यही भूमिका है।

‘रामचरित मानस’ के सात सोपान ‘बालकांड’, ‘अयोध्या’, ‘अरण्य’, ‘किष्किन्धा’, ‘सुन्दर’, ‘लंका’, ‘उत्तरकांड’ से आप परिचित है। प्रथम ‘बालकांड’ है। उसके मंगलाचरण के सात मंत्र तुलसी ने लिखे हैं -

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि।
मङ्गलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ।।

वाणी और विनायक की स्तुति कर मंगलाचरण किया है। स्वान्त: सुख के लिए यह रचना कर रहा हूं, ऐसा एक संकल्प उन्होंने लिखा है। फिर लोकवाणी में, लोकबोली में कहने के लिए तुलसी ने श्लोक के शृंग से गंगा को छोटे से छोटे आदमी तक पहुंचाने के लिए लोकवाणी का प्रयोग किया। पांच सोरठें में पंचदेव की वंदना की। शिव, दुर्गा, सूर्य, विष्णु और गणेश की वंदना की। फिर गुरुवंदना से शास्त्र का आरंभ होता है।

मेरी व्यक्तिगत मान्यता है, आप सब स्वीकारे यह जरूरी नहीं है। मुझे अभी ऐसा लगता है, चौबीस अवतार हुए। ‘रामचरित मानस’ पच्चीसवां अवतार है। मैं मानता हूं, मोरारिबापू के लिए यह पचीसवां अवतार है। ऐसे पचीसवें अवतार की इस कथा को कल से शुरू करूंगा। गुरुवंदना को गा लें -

बंदऊँ गुरु पद पदुम परागा।
सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।।

‘मानस’ का प्रथम प्रकरण गुरुवंदना है। गुरु की कृपादृष्टि पवित्र हुई तो पूरा जगत वंदनीय दिखने लगा। ‘सीय राम मय सब जग जानी।’ गुरुकृपा से पूरा जगत सीताराममय लगता है। फिर ‘रामायण’ के पात्रों की वंदना करते परिचय देते-देते हनुमानजी की वंदना की है। यह मेरी दृष्टि से नितांत आवश्यक है। ‘विनयपत्रिका’ की हनुमंतवंदना की दो पंक्ति से आज की कथा को विराम देता हूं।

मंगल-मूरति मारुत-नंदन।
सकल अमंगल मूल-निकंदन।।
पवनतनय संतन-हितकारी।
हृदय बिराजत अवध-बिहारी।।

श्री हनुमानजी महाराज की वंदना की फिर अन्य पात्रों की वंदना की। क्रम में सीतारामजी की वंदना और फिर रामनाम की वंदना विस्तारपूर्वक की है।

‘रामायण’ के सभी पात्रों का दर्शन हमें बाहर से स्वच्छ कर सकते हैं, अंदर से पवित्र कर सकते हैं। क्यों मैं ये कथाएं कहता रहता हूं? मुझे कई लोग कहते हैं, बापू, अब और कितनी कथाएं? सयाने लोग सलाह भी देते हैं, कथाएं कम कीजिए। मुझे होता है ये न करूं तो ओर क्या करूं? कहीं होश गंवा बैठे तो? अत: मैं आप-से बातें करना चाहता हूं कि हम बाहर से स्वच्छ रह सकते हैं। और बाहर से तो हम स्वच्छ रहते ही हैं। रोज स्नान करते हैं, वस्त्र बदलते हैं, धुले कपड़े पहनते हैं पर मन का क्या? बाह्य मैल तो शायद इस तरह निकाल पायेंगे पर भीतरी मल तो ऐसे संवाद आयोजित कर निकाल पायेंगे।

मेरी श्रद्धा अनुसार ‘रामचरित मानस’ पचीसवां अवतार है

इस कथा का केन्द्रीय विचार ‘मानस-स्वच्छता’ है। जिसे हम आचरण में रख सके इसीलिए यह प्रेमयज्ञ रचा गया है। ‘बालकांड’ की दो पंक्तियों का आश्रय लिया है। भगवान की लीला और भगवान का चरित्र यों तो दोनों एक ही अर्थ में प्रयुक्त लिए जा सकते हैं। सयाने शब्द की तह तक पहुंचे तो अनेक अर्थ दे सकते हैं। जो शब्दसाधना करते हैं, जिन्होंने शब्द द्वारा समाजसेवा की है। ऐसे महापुरुष, ऐसे सायने हमें कई अर्थ दे सकते हैं। उनमें से हमारे स्वभाव के अनुकूल लगे ऐसा कोई विचार लेकर हम आंगन को स्वच्छ रख सकते हैं; अंत:करण को पवित्र रख सकते हैं। सार यह है कि आंगन स्वच्छ रहे। आंगन माने बाहर का प्रदेश। हमारा आंगन, गली, मोहल्ला, गांव, तालुका, जिल्ला, राज्य, देश-दुनिया को हम स्वच्छ रख सके। इस विचार को लेकर कथा का आरंभ किया है। मैं पुन: कहता हूं, यह विचार नया नहीं है। विश्ववंद्य गांधीबापू का दिया है। उन्होंने पूरा अभियान चलाया। इससे भी पहले ऋषिमुनियों ने यह विचार देश को दिया था।

वेदांत में तीन शब्द है ‘मल’, ‘आवरण’, ‘विक्षेप।’ एक सरोवर में से कीचड़ कुरेदा जाय तो उसके भीतर का देख न सके। कीचड़वाला पानी होता है। जिससे हम तल नहीं देख पाते। उसको हमारे दार्शनिकों ने वेदांत की परिभाषा में खास कर आदि जगद्गुरु शंकराचार्य ने मल कहा। कई बार सरोवर में मल नहीं होता। पानी शुद्ध-स्वच्छ होता है। किसीने उसमें कंकड फैंककर स्वच्छ जल को तरंगायित किया। हलचल पैदा की। तरंगायित होने के कारण हम जल का तल देख नहीं सकते। मान लीजिए तरंग पैदा नहीं हुए, मल उखड़ा नहीं, किसी ने कंकड नहीं फ़ेंका। परंतु ‘पुरइनि सघन ओट जल...’ हम भालप्रदेश में से इस ओर आते हो तब आप देखियेगा, कई जगह पर आपको कमल दिखाई देंगे। कमल के पत्तों से पूरा पानी आच्छादित होता है। मल उखड़ा नहीं है, किसीने जल को तरंगायित नहीं किया है फिर भी पत्तों से पूरा जल आच्छादित है। इसीसे हम जल और तल देख नहीं पाते।

ये तीन वस्तु वेदांत में कही गई है।

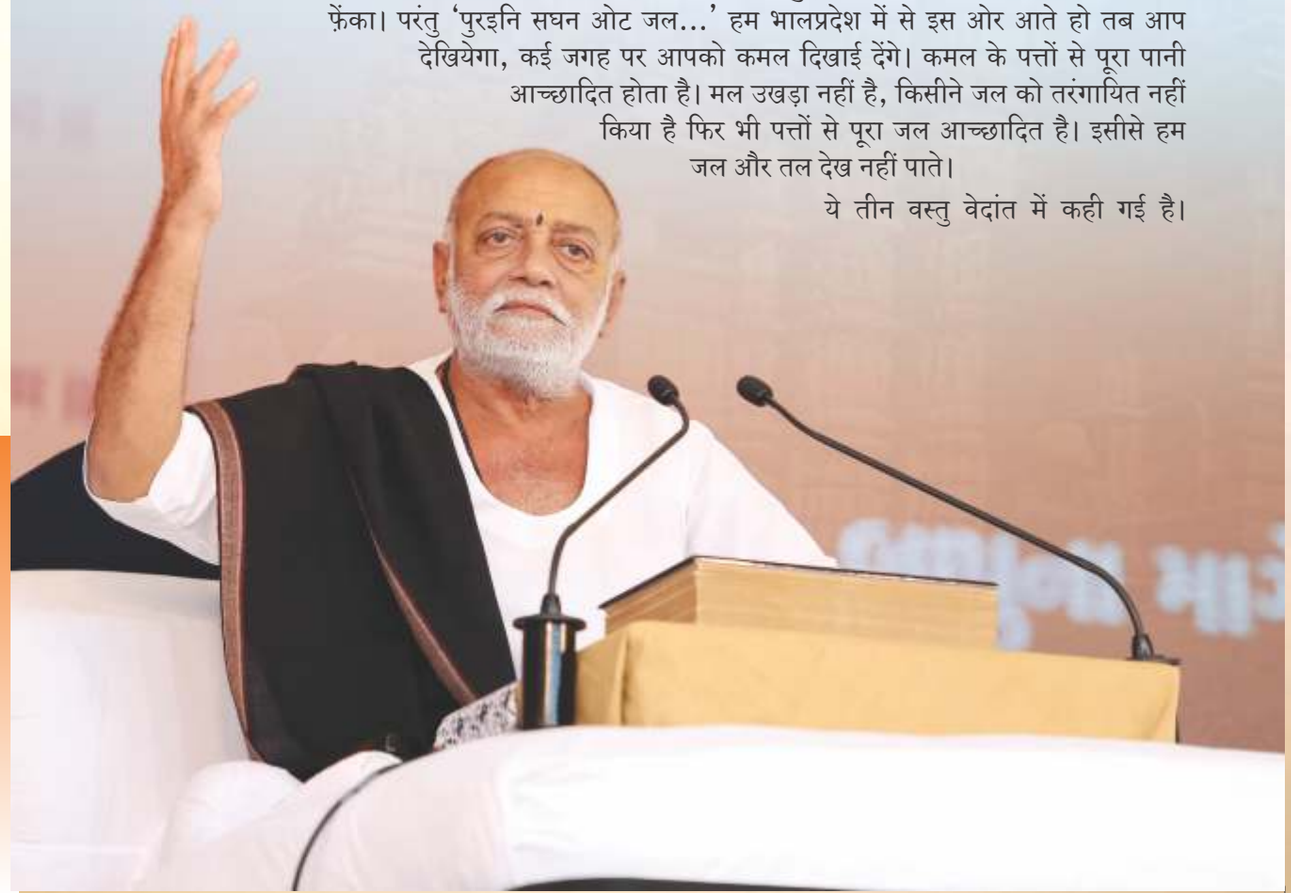

इसका अर्थ यह हुआ कि हमारे अंत:करण में कहीं कीचड़ है। हम सब इसमें है। मैंने स्पष्टता की है उसीके अनुसार वस्तु को लेना। मैं बार-बार यह स्पष्टता न कर सकूं तो आप ऐसी भ्रान्ति में मत रहियेगा कि वक्ता बहुत ऊंचा है। ऐसा कुछ भी नहीं है। हम साथ मिलकर वेद की ऋचा अनुसार 'संगच्छध्वम्' का यह एक अभियान है। जो चलेगा। फ़लत: अंत:करण में चित्तभ्रम, स्थितप्रज्ञता, परमतत्त्व का तल हम नाप नहीं सकते। किसी भी मल या कीचड़ चाहे वह इर्ष्या, द्वेष, दंभ या पाखंड का हो।

मुझे पूछा गया यह 'थडो' शब्द क्या है? यह काठियावाडी शब्द है। शायद गुजरात में यह शब्द प्रयुक्त नहीं होता। पीठ-मठ की बातें हुई पर व्यासपीठ दुकान की गद्दी नहीं होना चाहिए। कोई भी पीठ-मठ गद्दी यानी 'थडो' नहीं होनी चाहिए। गांव में छोटी-सी दुकान लगाकर बैठा हो उसे 'थडो' कहते हैं। अमुक क्षेत्र व्यापार नहीं करते; नहीं तो ये भी ऐसे हो जाय! तो बाप, जैन संप्रदाय का शब्द प्रयोग करें तो कोई कषाय हमारे अंत:करण को मैला करता है। हम शांति से बैठे हो; अंत:करण भी शांत हो उसमें कोई कंकड डालता है! मानव के अंत:करण को तरंगायित करने की, कंकड फैंकने की समाज की वृत्ति है। इससे अंत:करण का तल ठीक से दिखाई नहीं देता। तीसरा, दंभ या पाखंड या तो अपने स्वार्थ की वजह से खड़े किए नेटवर्क ने हमारे अंत:करण को इतना मैला कर दिया है। तुलसी कहते हैं -

पुरइनि सघन ओट जल बेगि न पाइअ मर्म।
मायाछन्न न देखिऐ जैसे निर्गुन ब्रह्म।।

मैं एकाद पल में जी जाता हूं अत: आनंद में रहता हूं। 'आजनी घडी ते रळियामणी ...' इन दिनों मुझे नरसिंह मेहता ज्यादा याद आ रहे हैं। क्योंकि अठारवीं तारीख को नरसिंह मेहता की हारमाला का दिन है। नरसिंह मेहता को छ:सौ वरस हुए। नरसिंह मेहता ने स्वच्छता अभियान चलाया है। उन्हें एक ऐसे समाज से हरिकीर्तन करने का निमंत्रण मिला तो उन्होंने कहा, अंदर के मल की बातें मैं संभाल लूंगा पर आप आंगन स्वच्छ रखिये। तुलसी क्यारा बनाइए। गाय का गोबर पोतियेगा। आसपास सफ़ाई करना। छ:सौ वर्ष पहले नरसिंह मेहता जैसे साधु ने सफाई अभियान शुरू किया था। उन्होंने दोनों काम किए। आंतर्-बाह्य मैल को दूर करने का अद्‌भुत प्रयत्न किया। मैं यूं ही अकेले-अकेले अकारण विचार किया करूं। पर बहुत विचार न करे। अस्तित्व में से आने दे। रिसिव कीजिए। क्रियेट न करे। हमारे विचार बहुत बड़े जाल खड़े करते हैं और भीतरी पवित्रता बिगाड़ते हैं। मेरे देश के ऋषि कहते हैं, 'आ नो भद्रा क्रतव:।' मुझे सभी दिशाओं से शुभ विचार प्राप्त हो। विचारों को आने दीजिए। जब कोई पंक्ति गाता है, 'आजनी घडी रळियामणी ...' तो लगता है, बीते हुए कल की घडी कैसी होगी? आनेवाले कल की घडी कैसी होगी? मुझे लगता है, बीते हुए कल की घडी स्मृति है। अच्छी हो या बुरी, स्मृति होती है। ओ हो हो! ऐसा हुआ था! इसमें नया-नया डालते जायेंगे। मैं कवि नहीं हूं। होना भी नहीं है। अल्लाह बचाए!

बाप, साधु, महात्मा पंच अग्नि सहे। मैंने देखा है। बैसाख की कडी धूप हो, खास कर अयोध्या की ओर से आए महात्मा, चौक में बैठे। फिर चारो ओर उपले जला कर बैठे। उसे पंचधूनी तप कहते हैं। किसी भी सर्जक को पंचाग्नि तप करना होता है। साहब, शब्द है, जला डाले! सर्जक की अग्नि होती है विवेक की अग्नि! उसे विवेक बहुत रखना पड़ता है। विवेक अग्नि है। रामकथा क्या है? तुलसी कहते हैं, अरणि-मंथन है। तुलसी ने कहा, रामकथा एक ऐसा मंथन है जिसमें विवेक का अग्नि निकलता है। शब्दोपासक यदि विवेक चुक जाय तो पंचधूनी तप नहीं सह सकता। उसने सिर्फ़ धूनी लगाने का दंभ किया है! राम मर्यादापुरुषोत्तम की अपेक्षा विवेकपुरुषोत्तम अधिक है। मेरा राघव विवेकपुरुषोत्तम है। साहब, मर्यादा में तो बंधन है। विवेक दूसरों की रेखाओं के बंधन से मुक्त कर स्वरेखा निर्मित करता है। तो सर्जक की धूनी पंचतप है। मैं सर्जक नहीं हूं पर शब्द के साथ संबंध तो है न! शब्दों को लेकर आपके साथ बातें करता हूं! सर्जकों को पूरे आदर के साथ सुनता हूं। मुझे पसंद पड़े वो ग्रहण करता हूं। मेरी तंबूडी में सबकुछ लेता हूं। मैं खूब सुनता हूं, उसमें से जो अच्छा लगे वो लेता हूं। अत: शब्द के साथ मेरा नाता है।

विरहाग्नि, शब्द के दूसरे उपासकों की अग्नि है। कृष्ण-गोपी को लेकर पद की रचना करे तब शुद्ध सर्जक को काफी ऊतरता है तब गोपी को जितनी विरहाग्नि न

लगी हो उतनी सर्जक को लगती है। मुझे लगता है सर्जक को दूसरे अग्नि की तपस्या करनी पड़ती है। यह विरहाग्नि है। एक विवेक की अग्नि, दूसरी विरह का अग्नि। तीसरा जो सर्जक होगा उसे पता होगा, शब्द के उपासकों को पता होगा; उसे विषम परिस्थितियां आती है। किसी के साथ बने या न बने! कहीं ऐसा हो, कहीं वैसा हो! अनेक प्रकार की परिस्थितियों में से गुज़रना पड़े। जलनसाहब ने कहा है -

हवे मित्रो बधा भेगा मळी वहेंचीने पी नाखो,
जगतना झेर पीवाने हवे शंकर नहीं आवे.

सर्जक के लिए विषम परिस्थितियां अग्नि है। जहां तक हमें लेबल लगे हैं वहां तक सब ऐसा ही रहेगा। जब तक हमारा लेबल मिटता नहीं तब तक हमें इन्हें फेस करना पड़ेगा। हम लेबलवाले हैं, लेवलवाले नहीं हैं। हम मनुष्य हैं। विषम परिस्थिति, वैमनस्य। कुछ भी न हो, फिर भी गलतियां निकाले! आप देखिए तो सही, समाज कितना सुंदर है! सुंदर माने मजाक में कह रहा हूं। जैसे हम कहते हैं कि आप सुंदर लगते हैं! शूर्पणखा ऊपर से स्वच्छ थी, साहब, अंदर से मैली थी। रावण बाहर से साधु होकर आया था। अंदर से तो जानकीजी का अपहरण करने आया था। पंडित रामकिंकरजी महाराज का वक्तव्य है साहब कि यह भाई-बहन ऐसे हैं कि शूर्पणखा को राम चाहिए और रावण को सीता चाहिए। यह रामकिंकरजी का वक्तव्य है। मेरे नाम पर चढ़ा दूं तो तालियां मिले! रामजी को पाने शूर्पणखा सुन्दर बनकर गई। उसका भाई जानकीजी को पाने साधु बनकर गया। दोनों फेइल गए। दोनों में बाह्य स्वच्छता थी पर भीतर मल था। बाहर का मल तो साबुन से धोया जायगा, बाप! पर अंदर का मैल तो साधु ही धोयेगा। ऐसा मत समझियेगा कि साधु माने मोरारिबापू! हां, मेरा जन्म साधुकुल में हुआ है इसका मुझे अत्यंत आनंद है। मेरी बहुत कोशिश है कि मैं ऐसा हो सकूं।

साधुपन हमारे मल को दूर करेगा। मैल तो साबुन दूर करेगा। साधु केमिकलयुक्त होना चाहिए। साबुन मलिन वस्त्र साफ करे पर मल सफाई के लिए साधु है। आप कल्पना कीजिए, मैल साफ करने के लिए साबुन घिसता है तो साधु को मल सफाई के लिए कितना घिसना पड़ता होगा! और साधु द्वारा कोई मल दूर होता है तो वो केमिकल मुक्त है अत: अंत:करण पर कोई रिएक्शन आता नहीं। कोई विकृति नहीं आती। आपकी शुभकामनाओं से मैं अनुभववाणी कहता हूं गुरुकृपा से। गुरुकृपा तो मूल में पड़ी है। साहब, पचपन-छप्पन सालों से 'मानस' लेकर घूम रहा हूं। मेरे दिमाग में ये विचार ऊतरे हैं कि सावधान आदमियों साधु को साधन न बनाये। यह तो समाज का साध्य है। साधुपन लक्ष्य है। अत: अपने यहां राम को साधु कहा है। माँ कौशल्या साधु है। 'साधु' शब्द पवित्रतम है। कोई जातिवाचक नहीं है। साधु जाति नहीं है। साधु वर्ण नहीं। जात नहीं, जातरा है।

अंत:करण की सफ़ाई कीजिए। यह जादू मारने जैसा है। यहां सब धो डालो। मेरे पास एक बहन आई। चार-पांच लोग बैठे थे। कहा, बापू एक काम है। मैं कुछ जानने आई हूं। आप विद्या से बताइए। मैंने कहा, मुझे इसकी छूत लगी है! उसे कोई निकालिए! कोई किसी के काम नहीं आता! भीतरी स्वच्छता हमें प्राप्त हो। साधु एक प्रवाह है। प्राचीन भजन है, 'देजो अमने साधुशरणमां वास।' हमें किसी साधु की शरण में रखना। साधु माने एक व्यक्ति नहीं। साधु माने एक विचारधारक प्रवाह। एक गतगंगा का नाम साधु है। विषम परिस्थिति एक अग्नि है। कई लोग कहते हैं, कई आदमी ज्यों-त्यों जीते हैं पर उन्हें तकलीफ़ नहीं होती और हम सीधे ढंग से जीना चाहे तो तकलीफ़ हो! स्वामी आनंद कहते हैं, कसौटी लोहे की नहीं, सोने की होती है।

युवा भाईयों-बहनों, आप चाहे जो पढ़िए, खूब आगे बढ़िए। आप जो भी ड्रेस पहने, मर्यादा में हो। विवेक बना रहे। योग्य खाईए, पीए, मौज कीजिए पर आप धर्म में विवेक रखिए। ये चमत्कार, जादू-टोना! समाज विधिमुक्त रहना चाहिए। विधिमुक्त कबीर ने बेडियां तोड डाली -

जाइए गुरु के द्वार,
साधु, जाइए गुरु के द्वार।

कैसा साधु? कैसी खोज? कबीर का संकेत किसकी ओर है? उसका कौन-सा आश्रम है? कौन-सा मठ है? साहब, कबीर क्या समझाते हैं?

निजता नींव है प्रेम पीठिका।

अखंड अभेद दीवार।

निजता की नींव जहां डाली है; निजता, मौलिकता, स्वभाव। और प्लिंथ प्रेम की है। अखंड अभेद दीवारें हैं। मुक्ति द्वार है। दरवाजा मुक्ति है। करम दरवाजें है। बातायन विचार, विधिमुक्त व्यवहार। युवा भाई-बहनों को मुझे इतना ही कहना है कि धर्म का विवेक रखिए। युवा भाईयों-बहनों, धर्म का विवेकपूर्ण जतन कीजिए। कर्म को करुणापूर्वक कीजिए। देखना है, मेरा कोई कदम किसी को तेजोवध तो नहीं करता। मलिनता तो नहीं बढ़ाता? मेरा यह कदम द्वेष में वृद्धि तो नहीं करता? करुणापूर्वक कर्म कीजिए यह दूसरा सूत्र है।

मैंने कथा में विचार रखा था कि आदमी को सुविधा हो तो घर में ड्रोइंग रूम, बेड रूम, मास्टर बेड रूम, गेस्ट रूम हो, पुत्री के कमरे हो, कीचन हो, सबकुछ हो। मैंने कहा, घर में एक शून्य रूम रखिए। अनुकूलता हो तो अकेले बैठिए। उसमें कुछ भी नहीं होना चाहिए। वोशिंग्टन में एक डोक्टर ने मेरा यह विचार पकड़ा। मुझे यह रूम बताया। मुझे कहा, देखिए बापू, आपकी तस्वीर और थोड़ी किताब ही रखता हूं। बस एकांत है रूम में। मैंने जाहिर में कहा, आपकी श्रद्धा को प्रणाम करता हूं। हो सके तो मेरी तस्वीर निकाल दे। मैं अवरोधक बनूंगा। क्योंकि मैं व्यक्ति हूं। मेरी तस्वीर अवरोधक नहीं होनी चाहिए साधना में। मैं यह स्पष्ट कहता हूं। साहब, नहीं तो घर-घर मेरी तस्वीर हो ऐसा आयोजन कर सकता हूं! आपके घर जो तस्वीरें हो उसे हटाकर मेरी तस्वीरें लगाने आ जाय! मैं आपके बीच रहता हूं। क्या इतना भी न जानूं? धंधार्थीयों के बीच रहता हूं! मजबूरी से मंच पर बैठता हूं! क्या मैं इतना नहीं कर सकता? पचपन साल गुजार दिए। आप कल्पना कीजिए, क्या इतना भी न सीख जाऊं? पर ना, साधुता में खटाई आ जाय। साधु तो एक अनंत यात्रा, अनंत प्रवाह का नाम है। मैं जाहिर में स्पष्ट बोलता हूं और वह भी अहमदाबाद में।

'रामचरित मानस' में राम ने बिना प्रयास सारे काम किए। सभी प्रसाद रूप किए। अध्यात्मजगत में हमारे प्रयास से कुछ भी नहीं होता। उसके प्रसाद से ही होता है। एक प्रभु प्रसाद और दूसरा गुरुप्रसाद। ये तुलसी के शब्द है। राजेन्द्र शुक्ल कहते हैं -

आ अहीं पहोंच्या पछी बस एटलुं समजाय छे,

कोई कंई करतुं नथी आ बधुं तो थाय छे.

तो सर्जक के लिए, हम सबके लिए विवेक अग्नि है। आप जितनी समझ रखे इतना आपको जलना पड़ेगा। विरह अग्नि है। तीसरा अग्नि है जीवन में उन्नत अवस्था में आती विषम परिस्थिति, वैमनस्य, स्पर्धा, निंदा, अकारण दोषदर्शन आते हैं। यह पंचधूनी का अग्नि है। चौथा अग्नि है सर्जक को जहां पहुंचना है उसमें विलंब अग्नि के समान है। एक शायर अंदर से टूट गया हो, पक गया हो, तब उसकी एक शायरी या गज़ल कविता या वक्तव्य मानव तक न पहुंचे, विलंब हो तब पीड़ा उत्पन्न होती है। व्यास को पीड़ा हुई कि दोनों हाथ ऊपर कर कहे, मुझे सुनिये तो सही, मैं पूरी जिन्दगी कहता रहा कि परोपकार ही पुण्य है; परपीड़न पाप है। यों एक सर्जक दो हाथ ऊपर करता है। यह एक अग्नि है। पांचवां अग्नि क्या है? हम आदमी हैं। शब्दोपासक, श्रोता या किसी को भी विचार बदल का समय आए तो वह भी पांचवां अग्नि है। यह एक पंचधूनी तपने की प्रक्रिया है। यह व्यासपीठ दुकान की गद्दी न बन जाय इसकी मेहनत हैं। यह पीठ बरकरार रहनी चाहिए। बाप, हम साधु न हो सके तो भी कोई चिंता नहीं, पर मानव बनकर रहे। जीवन पूरा हो तब तक बाहर की स्वच्छता और अंदर की पवित्रता प्राप्त करें; ऐसा हो तो साहब, जीवन तृप्त हो जाय।

बाप, मूल बात है मल, विक्षेप, आवरण; मल हमें तल नहीं देखने देते। हमारे निर्मल जल को मैला करते हैं। सत्संग द्वारा, ऐसी बातों द्वारा शायद अंदर के मल के कारण हम मलिन होते हैं तो हम इससे मुक्त हो जाय। नरसिंह मेहता गाते थे, 'आजनी घडी रळियामणी ...' तो बीते कल की कैसी? आनेवाले कल की कैसी? बीते कल की घडी की स्मृति कैसी? 'धन्य गई कालनी घडी ते संभारणी...' हमें तो आजकी घडी में जीना है। बीते कल की घडी तो है ही। भूतकाल तो है ही। पर वह स्मृति है। स्मृति अच्छी या बुरी होती है। जो भी हो। पर आनेवाले कल की घडी ध्यान न रखे तो 'आवती कालनी घडी अळखामणी ...!'

इस कथा में आंतर्-बाह्य स्वच्छता-पवित्रता केन्द्रीय विचार है। आंगन स्वच्छ रहे। अंत:करण पवित्र रहे। ऊपरी मैल साबून से जायेगा। अंदर का मैल साधु के सत्संग से जायेगा। ऊपरी धूल से कपड़े मैले होते हैं और अंदर से रजस उड़े तब कलेजा मैला हो जाता है। कलेजा मैला हो जाय, मैल लगे तब उसे धोने के लिए 'बालकांड' के अंतर्गत ये पंक्तियां तुलसी ने कही है -

लीला सगुन जो कहहिं बखानी।

सोइ स्वच्छता करइ मल हानी।

एक कलप एहि बिधि अवतारा।

चरित पवित्र किए संसारा।।

प्रथम पंक्ति कहती है, भगवान की जो सगुण लीला है वह स्वच्छता निर्मित करती है। परमात्मा की सगुण लीला हम गाये, सुने तो परिसर जो हमें प्रभावित करता है, ऐसी स्वच्छता देता है कि हमें मलिन नहीं होने देता। तृष्णा से मलिनता आती है। तीन प्रकार की एषणा का तुलसी ने भाषांतर या कृतिकरण किया ऐसी तीन प्रकार की तृष्णा कौन-सी है?

सुत बित लोक ईषना तीनी।

केहि कै मति इन्ह कृत न मलीनी।।

हम सब इसमें आ जाते हैं। यह आलोचना रूप नहीं है। महापुरुषों की बात अलग है। सामान्यत: तीन प्रकार की एषणा है जिसके अतिरेक से हमारी बुद्धि मलिन हो जाती है। प्रथम सुतेषणा है। प्रत्येक को वंशवृद्धि की, परिवार की एषणा होती है। दशरथजी को भी ऐसी एषणा है। इसमें खराबी नहीं है। परंतु महाएषणा जब विषयभोग की वृद्धि खींचे, कामना प्रेरित करे तो ऐसी एषणा दु:खद बनती है। बुद्धि को मलीन करती है। वित्त माने पैसा। संसार चलाने के लिए वित्तेषणा होती है। यह खराब नहीं है। हम संसारी हैं। रूपये के बिना चल नहीं सकता। यह जरूरी है। पर इसकी अति बुद्धि को मलिन करती है। सुत, वित्त और लोक। कई लोग त्यागी होते हैं। ब्याह न किया हो तो सुतेषणा न जगे। कई त्यागी ऐसे होते हैं जो पैसे को छूते नहीं है। तीसरा है लोकेषणा। यह मलवृद्धि कर बुद्धि को मलिन करता है। ऐसी कीर्ति की कामना कि हम पैसे लेते नहीं या हम त्यागी है! हमारा कोई संसार नहीं है! इसकी प्रशंसा होनी चाहिए। साहब, हम आदमी है। लोकेषणा से मुक्त नहीं रह सकते। तीनों से मुक्त रहेंगे उनकी बुद्धि मलमुक्त रहेगी।

तुलसी गुरुकृपा से विवेकदृष्टि प्राप्त कर पूरे जगत को देखते हैं। प्रणाम करते हैं। फिर कथा के क्रम में भाईयों की वंदना है। सीता-रामजी की वंदना है। फिर नाम की वंदना है। इस प्रकरण पर ब्यौरे के साथ एक-एक मुद्दा लेकर अभी इतने वर्षों से बोलता हूं। अभी भी बोलना है। बहुत बड़ा प्रकरण है। तुलसीदासजी ने नाम की बहुत बड़ी महिमा गाई है। तुलसी लिखते हैं, सत्युग में ध्यान द्वारा, त्रेतायुग में यज्ञ-याग द्वारा, द्वापर में पूजा-अर्चना द्वारा जो प्राप्ति होती थी वही कलियुग में केवल नाम द्वारा होती है। इतना सरल साधन नाम-साधना है। पर तुलसी संकीर्ण नहीं है। नाम प्रभाव ही गाते हैं। तुलसी के राम संकुचित नहीं है। नाम प्रभाव ही गाते हैं। पर तुलसी का राम संकीर्ण नहीं है। हम अपनी संकीर्णता के कारण संकीर्ण करते हैं! रामतत्त्व यानी नामतत्त्व। मैंने तो दिल से आप के साथ बातें की है। कोई भी आपको जो भी नाम राम-रहीम-बुद्ध-शिव-दुर्गा-कृष्ण-महादेव; जो भी पसंद हो; पर परमात्मा का जो नाम है उसकी बड़ी महिमा है। नाम अद्भुत तत्त्व है। तुलसीदासजी ने काफ़ी वर्णन किया है। कलियुग में नाम प्रबल साधनबल है। नाम का आश्रय करना।

तुलसीदासजी ने कहा था, मेरे जीवन के दो आधार प्रभु का नाम और गंगाजल है। नाम उनकी अंतिम साधना है। गांधीबापू ने नाम की ही साधना की। तीन बार राम बोले। जब वे डरते थे तब रामनाम दिया गया। आफ्रिका में जब उन पर प्रहार किया गया तब और आखिर में जब गोली लगी तब भी 'हे राम' शब्द उनके मुख से निकला। अत: रामनाम व्यापक तत्त्व है। जो लोग राम को सांप्रदायिक कहते हैं वे रामको समझ नहीं पाए! राम कोई सांप्रदायिक तत्त्व नहीं है। बाकी रामनाम की साधना करनेवाले कहां पहुंच जाते हैं! फिर रामकथा का एक सुंदर रूपक बनाया है। मेरी व्यक्तिगत श्रद्धा में 'रामचरित मानस' पच्चीसवां अवतार है। किसी भी अवतार के साथ चार वस्तु नाम, रूप, लीला और धाम जुड़ी हुई है।

रामचरित मानस एहि नामा ।

सुनत श्रवन पाइअ विश्रामा ।।

नाम है राम। यह शास्त्र का एक रूप है। बहिर् रूप है। एक ग्रंथ का रूप, सद्ग्रंथ का रूप। इस पोथी का रूप मूल रूप है। मुझे कहने दीजिए, यह पच्चीसवें अवतार की लीला है। मैं रामलीला गाता हूं। पर उन्होंने मेरे लिए क्या लीला की यह मेरा अनुभव है। उसका धाम कैलासधाम है।

परम रम्य गिरिबरु कैलासु।

सदा जहाँ सिव उमा निवासु।।

राम का धाम कैलास नहीं है। राम ने अवतार लिया। शंकर ने अवतार नहीं लिया है। पर राम अवतार ले तो उनका धाम अयोध्या है। उनका नाम राम है। उनका रूप सारंगपाणि है। पर इस 'रामचरित मानस' का धाम तो -

रचि महेस निज मानस राखा ।

पाई सुसमउ सिवा सन भाषा ।।

मेरी व्यक्तिगत श्रद्धा है कि 'रामचरित मानस' पच्चीसवां अवतार है। आप पर थोपना नहीं है। अतिशयोक्ति नहीं करता। मनोहर त्रिवेदी का शे'र है कि -

नथी काशीनी के नथी काबानी.

अमारी श्रद्धा तो छे गाम ताबानी.

मेरे लिए तो यह मेरा भगवान है। मेरे लिए पच्चीसवां अवतार है। तुलसीदासजी ने इसे चार भाग में, चार संवादों में विभाजित किया है। एक जगह पर ज्ञानप्रधान संवाद, एक जगह उपासना प्रधान संवाद, एक जगह कर्म का संवाद और एक जगह शरणागति संवाद किया है। तुलसीदासजी शरणागति के संवाद से कथा का आरंभ कर हमें कर्म के घाट पर तीरथराज प्रयाग ले जाते हैं। वहां याज्ञवल्क्यजी महाराज भरद्वाजजी को रामकथा के लिए प्रश्न पूछते हैं कि रामतत्त्व क्या है? प्रत्युत्तर में प्रसन्नतापूर्वक परमविवेकी याज्ञवल्क्य महाराज शिवकथा कहकर रामकथा आरंभ करते हैं। परमविवेकी ने सेतुबंध किया कि राम और शैव में मतभेद उत्पन्न न हो।

त्रेतायुग में भगवान शिव सती को लेकर कुंभज के यहां कथा सुनने गए। सती ने अभिमानवश कथा सुनी और लौटते हुए राम की लीला देखकर सती को संदेह हुआ। राम की परीक्षा करने गए तो फंस गए। आखिर शिव ने सती का त्याग किया। सत्तासी हजार वर्ष तक अकेले रहे। फिर शिव समाधि से जगे। सती के साथ मिलकर रसप्रद कथा कहने लगे। 'मानस' में दक्ष प्रसंग आया। सती पिता के यहां पहुंची। सती शिव का अपमान सहन न करने के कारण योगअग्नि में अपना शरीर भस्म कर डाला। सती ने देहविलीन करते समय परमात्मा से मांग की कि दूसरा जन्म स्त्री का ही देना और जन्मजन्मांतर मुझे महादेव ही पति के रूप में प्राप्त हो। सती का दूसरा जन्म नगाधिराज हिमालय के यहां हुआ। उत्सव हुआ। हिमालय की स्थिरता में से सती ने पार्वती के रूप में जन्म लिया। मेरी दृष्टि से श्रद्धा का जन्म हुआ। जहां श्रद्धा का जन्म हो वहां बगैर आमंत्रण साधु-संत पहुंच जाते हैं। एक दिन नारदजी पधारे। पार्वती नामकरण हुआ। फिर सती ने बरसों तक तप किया। आकाशवाणी हुई, 'हिमालयपुत्री, आपके मनोरथ सफल हो रहे हैं। आपको शिवजी प्राप्त होंगे।' इस ओर भगवान शंकर समाधि में है। भगवान प्रकट होते हैं। शिवजी को जागृत करते हैं, 'सती भस्म होकर पार्वतीरूप में प्रकट हुई है। आपको पाने के लिए तप किया है। शिवजी, आप उनका स्वीकार कीजिए।' शिवजी को हरि का आदेश हुआ। 'आपकी आज्ञा शिरोधार्य। यही मेरे लिए महाव्रत है। मेरा व्रत टूटे इसकी मुझे चिंता नहीं है।' आप जिसे पूर्ण विश्वास से मानते हो उसके वचन का स्वीकार ही सबसे बड़ा विचार है। शिवजी के पास ब्रह्मा आकर ब्याह के लिए मनाते हैं। ईश्वर को दिए वचन के कारण शिवजी हां कहते हैं। ब्याह की तैयारी हो रही है। ब्याह और बारात की कथा कल करेंगे।

नरसिंह मेहता ने स्वच्छता अभियान चलाया है। उन्हें ऐसे समाज से हरिकीर्तन करने का निमंत्रण मिला तब कहा, अंदर के मल को मैं देख लूंगा। आप आंगन स्वच्छ रखिए। तुलसी का पौधा लगाना। गाय के गोबर से पोतियेगा। आसपास स्वच्छता रखियेगा। छःसौ साल पहले नरसिंह मेहता साधु ने यह सफाई अभियान शुरू किया था। उन्होंने दोनों काम किए। बाहर का मैल और अंदर का मल दोनों को दूर करने का प्रयत्न किया।

संत धर्मस्थान नहीं, तीर्थस्थान है

अपने बुद्धपुरुषों ने, अवतारों ने, ऋषिमुनियों द्वारा हमें प्राप्त सद्ग्रंथों ने, पात्रों ने, प्रसंगों ने समाज बाहर से स्वच्छ रहे ऐसे प्रयत्न आदिकाल से किए हैं। इसी क्रम में विश्ववंद्य गांधीबापू ने यह बात रखी। हम भी इसका स्वीकार करें। इस बार की अहमदाबाद कथा में 'मानस-स्वच्छता' विचार को लेकर संवाद कर रहे हैं। गोस्वामी कहते हैं, भगवान की जो सगुण लीला है जिसे बखान कर समयानुकूल समास, व्यासकर कर जो कहते हैं, जिस तरह कही जा रही है, ये सगुणलीलाएं स्वच्छता का काम करती है। यों तुलसी 'स्वच्छता' शब्द का प्रयोग करके हमें आदिकाल की प्रवाही परंपरा में जोड़ते हैं। कल्प दर कल्प परमात्मा के अवतार होते रहते हैं। गोस्वामीजी कहते हैं, एक कल्प में यह कथा पूरे संसार को पवित्र करती है। अत: आंतर्-बाह्य स्वच्छता और पवित्रता का एक मंगलमय विचार लेकर हम कथा में बैठे हैं। शरीर, घर, आंगन, गली, महोल्ला, सोसायटी, गांव, नगर स्वच्छ रहे ऐसा एक बहुत बड़ा प्रयोग हो रहा है। साथ ही साथ भगवद्कथा द्वारा अपने मन की पवित्रता, बुद्धि की पवित्रता, चित्त की पवित्रता बनी रहनी चाहिए। अल्लाह करे, अहंकार जरा भी न रहे। ऐसी एक अंत:करणीय पवित्रता के लिए इस कथा द्वारा हम विचार कर रहे हैं। हम आगे बढ़ें। स्वच्छता और पवित्रता संबंधी जिज्ञासाएं भी श्रोताओं की ओर से आ रही है। अनुकूलता पर उसका उल्लेख करेंगे।

'मानस' में ऐसे प्रसंग मिलते हैं जो बाहर से बहुत स्वच्छ लगते हैं, परंतु अंदर से पवित्रता दिखती नहीं। गुरुकृपा से ऐसे प्रसंग भी दिखाई देते हैं जो बाहर से स्वच्छ न लगे, परंतु विवेकदृष्टि से देखें तो अंदर से बहुत पवित्र है। एक छोटी-सी घटना लें। आप जानते हैं, भगवान अवतार के पांच कारण है। जो 'रामचरित मानस' में है। उसमें एक प्रसंग जिसमें भगवान के अवतार का एक कारण छिपा हुआ है। यह प्रसंग बाह्य रूप से स्वच्छ नहीं है, परंतु उसकी भीतरी पवित्रता आकाश से भी विशाल है। प्राय: अवतार के सभी प्रसंग हमें नापसंद हो ऐसा हुआ है। पहला प्रसंग -

द्वारपाल हरि के प्रिय दोऊ।
जय अरु बिजय जान सब कोऊ।।

भगवान शंकर ने पार्वती सन्मुख कथा का आरंभ किया पार्वती से पूछे प्रश्न के उत्तर में कि निर्गुण ब्रह्म, निराकर क्यों सगुण होते हैं? मनुष्य बनकर अलग-अलग स्वरूप धारण कर ये सब काम क्यों करते हैं? तब शिवजी कहते हैं, रामजन्म के अनेक हेतु है। सभी विचित्र हेतु है। इनमें से थोड़े आपसे कहूं। प्रथम कारण शिवजी के मुख से निकलता है। बहुत प्रसिद्ध प्रसंग है। उनके वैचारिक स्तर पर जाय। वैकुंठ भगवान का धाम है। किसीकी भी प्रकार से जिनकी बुद्धि कुंठित नहीं है ऐसी अकुंठित बुद्धि को मेरी व्यासपीठ वैकुंठ कहती है। मुझे पता नहीं, वैकुंठ कहां है?

श्रद्धानो हो विषय तो पुरावानी शी जरूर?
कुर्रानमां तो क्यांय पयम्बरनी सही नथी.

आज का विज्ञान जिस तरह से प्रगति कर रहा है, अपने मिशन अनुसार यान भेज रहा है और नये-नये ग्रह ढूंढ रहा है, पर मुझे पता नहीं वैकुंठ लोक अभी तक मिला है या तो अब तक जो ग्रह मिले हैं वहां पानी भी नहीं है! मानव जगत या जीव जगत की कोई संभावना दिखती नहीं है। यह विज्ञान चाहे वह कर सकता है पर वैकुंठ नामक लोक कहां है? हमारे भक्तों ने सरस गाया कि वैकुंठ अनुकूल नहीं पड़ेगा, हमें तो वृंदावन चाहिए। हमें तो व्रज चाहिए -

जयति तेऽधिकं जन्मना व्रज:
श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि ।
दयित दृश्यतां दिक्षु तावका-
स्त्वयि धृतासवस्त्वां विचिन्वते।।

आप गलतफहमी मत करना कि बापू ने वैकुंठ का निषेध कर डाला! मुझे तो मिल जाय तो भी नहीं जाना है! वहां का मौसम हमें रास न आए। यहां अच्छा लगता है। वैष्णवी भाव में-मनोरथ में भजनिकों ने गाया है -

मारुं वनरावन छे व्हालुं,
रे वैकुंठ नहीं रे आवुं ...

इसमें वैकुंठ की उपेक्षा या अनादर नहीं है। पर उससे ज्यादा प्रिय मुझे यह है। प्रिय में ही आत्मा की गति होती है। इसमें वैकुंठ का निषेध नहीं है। पर व्रजभाव में तो यही गाया है, 'वैकुंठ नहीं रे आवुं।' व्रज के लोग सुंदर है। इसका अर्थ है कि विष्णु की अपेक्षा वैष्णव ज्यादा प्रिय है। नरसिंह मेहता ने गाया-

वैष्णवजन तो तेने रे कहीए जे पीड पराई जाणे रे...

ये सब शास्त्र की बातें हैं। गलतफ़हमी मत कीजिए। धर्म की बातें हैं। धर्म में बहुत ध्यान रखना पड़े। धर्मस्थान और तीर्थस्थान में बहुत फ़र्क है। मैं आप पर मोरारिबापू की दृष्टि से थोपूंगा नहीं। किसी पर अपने विचार थोपे और जिनके विचारों पर विपुल समाज की श्रद्धा हो उसका शोषण करना हिंसा है। तीर्थ गतिशील होते हैं, प्रवहमान होते हैं। उसका लक्षण कूपमंडुकता नहीं है। संकीर्णता नहीं, प्रवाहिता हो। धर्मस्थान महिमावंत है। बरसों से मेरी व्यासपीठ का क्रम रहा है कि दिवाली के बाद मैं पहली कथा तीर्थस्थान या धर्मस्थान में करता हूं। यों

वैकुंठ और वृंदावन अलग करता हूं। अत: चिंता मत कीजियेगा। आपके हृदय को ठेस पहुंचे ऐसा मैं कहना नहीं चाहता। पर आपने मुझे नौ दिनों तक बोलने के लिए कहा है तो मैं आपको नहीं छोडूंगा! जो कहना चाहता हूं वह कहूंगा। सरयू तीर्थस्थान है, अयोध्या धर्मस्थान है। मथुरा धर्मस्थान है, यमुनाजी तीर्थस्थान है। वृंदावन तो वृंदावन है। यह ब्रज भूमि का टुकडा नहीं, परंतु वैष्णवों को गुरुकृपा से, श्रीमद् वल्लभ की कृपा से प्राप्त हुई भूमिका है। वृंदावन अलग चीज़ है। काशी धर्मस्थान है, गंगाजी तीर्थस्थान है। बद्रीनाथ धर्मस्थान है, अकलनंदा तीर्थस्थान है। बद्रीनाथ भी तीर्थस्थान है।

खैर! विचारशील बनिए। युवाओं के लिए खास। अति विचार नहीं। अति वर्जित है। 'रामचरित मानस' में भगवान राम ने श्रीवाल्मीकिजी से पूछा कि मैं कहां रहूं? बारह-तेरह वर्ष एक ही जगह बीताने हैं। चौदहवें साल में जो भी निर्णय हो। यह प्रसंग आप जानते हैं। आज मुझे किसी ने गलत लिखा। मुझे बुरा नहीं लगा। पर गलत लिखा। Jay siyaram Bapu, How are yoy?' O.K. यह प्रश्न है, 'Someone asked me the other day why do you still listen to Bapu? He is so old in age now. There are so many new Sadhu, but Bapu your thoughts are every day new thats why I Love to listen you.' Thank You. एक मिनट के लिए साधु माने विद्यार्थी मान लीजिए। विद्यार्थी सदैव युवा होना चाहिए। अध्यापक भी ऐसा होना चाहिए। विचार और दृष्टिकोण से शरीर तो शरीर का काम करता ही है, यार! बाप, जहां से भी ताजे विचार मिले, ले लीजिए। कविता, लेख, कहानी, ग्रंथ, मेहफिल, डायरो हर जगह से नए विचार लीजिए। मैं तो श्रोता हूं। मैं किसी को सुनूं, कुछ नया मिलता है। मैं कभी भी खाली हाथ नहीं लौटता।

अस्मितापर्व, संस्कृतपर्व, सद्भावनापर्व, शिक्षणपर्व, काव्यपर्व, सत्संगपर्व मनाइए। घर में परिवार के साथ बैठे हो तो प्रसन्नतापर्व मनाइए। वे सभी पर्व मनाते हैं। खर्च भी होता है। इस पर्व में कोई खर्च नहीं होता, बाप! मुझे नया विचार मिले तब प्रसन्न होता हूं। यह मनाने जैसा पर्व है। पूरा परिवार भोजन के बाद प्रसन्नतापूर्वक पर्व मनाए और पूरे दिन के अनुभव की बातों के बाद सोयेंगे तो साहब, तो फ़रिश्ते भी उनके शयन को देखने आयेंगे। यह मैं समझकर बोलता हूं। मुझे याद आता है दरगाह में सोया हुआ पीर निज़ामुद्दीन। ऐसा कहा जाता है कि निज़ामुद्दीन जब सोते थे और अमीर जब चरणसेवा करके चला जाता था तब कई दैवी तत्त्व चेतनातत्त्व निझाम को देखने आते थे। कईयों के शयन देखने जैसे होते हैं, साहब! कईयों की बैठक देखने जैसी होती है। कई खड़े हो यह देखने जैसा होता है। समाज का प्रतिष्ठित आदमी जब समस्या उत्पन्न हो, चिंता हो कि अब क्या होगा? ऐसा एक आदमी 'रामचरित मानस' का विदेह राज जनक है। जब कोई भी शंकर का धनुष तोड़ न सका तब इतने बड़े महानुभाव जनक की चिंता हुई कि बेटी अनब्याही रह जायगी! खैर! उस समय ऐसे नियम थे। मैं सहमत नहीं हूं। बेटी को अधिकार मिलना चाहिए कि तुझे किसे माला पहनानी है? शर्तें नहीं होनी चाहिए। कल रावण ने धनुष तोड़ दिया होता तो? यद्यपि नियति अलग रही होगी। इक्कीसवीं सदी इसका स्वीकार नहीं करेगी। चाहे 'रामायण' का प्रसंग होगा। मेरे अपने विचार हैं। हर एक को विचार स्वातंत्र्य होना चाहिए।

बच्चों, अंग्रेजी अवश्य पढ़िए। पर घर में मातृभाषा बोलियेगा। कृपा करके गुजराती मिले तो गुजराती में ही बोलिए। हमारी अपनी निजता होनी चाहिए। बाप! अपनी चर्चा चल रही है, साधक युवा होना चाहिए। मन से युवा होना चाहिए कि अभी मुझे

बहुत सीखना है। शरीर असर करे पर मन वृद्ध नहीं होना चाहिए। विचारों को परिपक्व रखे। एक, विचारशील रहिए। दूसरा, विनोद में रहिए। विचार करते-करते गंभीर न हो। थोड़े हल्के-फूल्के मूड में रहे। हम बड़े विचारक-चिंतक है, ऐसा बोझ मत रखिए। हमारा उड्डयन होना चाहिए। इसीलिए कथा की प्रस्तुति सरलता से लेता हूं। यही मेरा स्वभाव है। तीसरा, गुरुदत्त विवेक रखिए। कथा क्या सिखाती है?

बिनु सतसंग बिबेक न होई।
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई।।

गंगासती कहती है, जो वाणी के विवेक में रहेगा उसे ब्रह्मादि प्रणाम करते होंगे। देवता प्रणाम करते होंगे। विवेक में रहिए। चार, सब त्याग कर निकल नहीं जाना है। जरूरत होने पर थोड़ा वैराग्य में रहिए। मुझसे ज्यादा इसे जरूरत है। तब मुझमें से इसे कुछ दे दूं। हमारे लिए बैराग माने अलख कहकर निकल जाने की बात नहीं है। ये सभी महापुरुषों के लिए हैं। जो निकल गए वे पछताते हैं, क्योंकि आगे जा नहीं सकते और लौटकर आ नहीं सकते! वैराग्य माने त्याग नहीं, शुभ का स्वीकार है। युवा को वैराग में रहना चाहिए। जो सहपाठी हो, गरीब हो उसे दो पुस्तकें देनी चाहिए। थोड़ा समय देना चाहिए। लिफ्ट देनी चाहिए। युवा को ऐसे वैराग्य में रहना है। पांच, उम्र हो तब विवेकपूर्ण विलास में रहना। यह शब्द याद रखियेगा। आनंद करना। जीवन एन्जोय करना। कथा सुनने के बाद मुंह फूलाकर घर में घूमो, चौपाईयां ही गाइए, मैं ऐसा नहीं कहता! अपने हृदय में एफ.डी. कीजिए। जरूरत पड़ने पर कानूनन सूद लेकर इस्तेमाल कीजिए। भगवान राम रसिक है। राम चंदन जैसे हैं, घिसो और खुश्बू निकले।

एक बार मुनि कुसुम सुहाअे।
निज कर भूषन राम बनाअे।।
सीतहि पहिराअे प्रभु सादर।
बैठे फटिक सीला पर सुंदर।।

आपके समक्ष राम के प्रसंग रखूं। मेरा राम रसिक है। राम वन में है। चित्रकूट में है। फूलों की माला बनाकर विवेकपूर्वक जानकीजी के केश में गूंथते हैं। हाथ में बाजूबंद बनाते हैं। यह जगत बहुत ही प्रसन्नतापूर्वक विवेक से जीने जैसा है। मुझसे पूछा गया, 'बापू, सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग आपको किस युग में जन्म लेना है?' मैंने कहा, कलियुग। मेरा तुलसी मुझे सीखा गया है कि कलियुग जैसा ओर कोई युग नहीं है। अभी तो यह कलि है, फूल होना बाकी है। बहुत अच्छा काल है। मुझे कोई जन्म लेने के लिए पूछे तो मैं कलियुग पसंद करूं। युवाओं से मेरी एक ही मांग है कि सोने से पूर्व पांच मिनट के लिए तेरे हरि को याद करना। माँ को मान्यता दी हो तो कहना, हे माँ, जगदंबा, खटिया में नहीं सोया हूं, तेरी गोद में सोया हूं। सूर, तुलसी, मीरां को याद करना। नरसिंह को याद करना। इस्लाम के बंदे हो तो रहीम को याद करना। अपने क्षेत्र में चाहे कितने ही बड़े हो, पर जब हरि को भजो तब तृण बन जाना। तृण बनोगे तो चाहे हवा कितनी भी तेज हो, झूका नहीं पायेगी। आप जिसे भजना चाहे भजिए। भरोसा होगा तो एक मिनट में भजन पहुंचेगा। कहीं पर तो भरोसा रखना पड़ेगा। इसमें बुद्धि का काम नहीं है। इस साधु ने भरोसे के काफी अनुभव किए हैं। भरोसा ही भजन है। बुद्धपुरुषों के वचन की औषधि बनाकर उसके भरोसे पुडिया ले ले।

भोजल के भरोसो जेने,
त्रिकमजी तारशे एने।

तीर्थस्थान, धर्मस्थान का मौलिक भेद समझ में आता है। मैं थोपना नहीं चाहता। क्योंकि किसी पर विचार थोपे यह भी हिंसा है। तीर्थस्थान गतिशील है,

प्रवाही है। आप जैसा भी मंदिर बना ले बाद में क्या एक इंच बढ़ सकता है? श्रद्धा या चमत्कार में बढ़ा ले यह आपका नेटवर्क है, चालाकी है! संत रोज नया होता है। प्रगति करता है। संत धर्मस्थान नहीं है, तीर्थस्थान है। वृक्ष रोज बढ़ते हैं। मंदिर बढ़ता नहीं। संख्यावृद्धि होती है। पर ऊंचाई वही रहती है। हां, चमत्कार में वृद्धि हो सकती है! चमत्कार प्रदर्शन अपराध है। मेरी व्यासपीठ वृक्ष को तीर्थस्थान कहती है। नदी रोज बहती है। गौमुख की तुलना में गंगोत्री में और गंगोत्री में हो इससे ज्यादा हरद्वार में गतिशील रहती है। प्रयाग में ज्यादा है। गंगासागर में विलीन होती है तब लगता है, दो समुद्र इकठ्ठे हो गए हैं। रोज प्रवाह गतिशील है इसीलिए तीर्थस्थान है। अत: नदी तीर्थ है। गिरि, पर्वत, पहाड़ शायद यों बढ़ता न हो पर ऐसा नहीं है, गिरिराज बढ़ा है। गोवर्धन ठाकुरजी की लीला है कि उनके आश्रम में जितने भी आये इतना बढ़ता रहता था। पर्वत गतिशील है। उसमें बिन बोए कितने पौधें उगते हैं! मस्तक पर घास उगता है। पर्वत सजीव होने के कारण तीर्थ है। यह धरती घूम रही है, जड़ नहीं है। किसी की परिक्रमा करती है। अनेक रूप धारण करती है। पृथ्वी रोज कुछ नया देती है। 'बहुरत्ना वसुंधरा।' इसीसे मैं तीर्थस्थान कहता हूं। धर्मस्थान की महिमा है। मैं भी धर्मस्थान में कथा करता हूं। परंतु व्यासपीठ को जो तात्त्विक भेद समझ में आया वह यह है। चित्रकूट में कामदवन तीर्थ है। श्री वृंदावन तीर्थ है। मथुरा अवश्य धर्मस्थान है। वैकुंठ और वृंदावन को अलग करूं इसका अर्थ यह नहीं कि वैकुंठ प्रेमी की श्रद्धा को ठेस लगे। वैकुंठ कहां है, क्या पता? अत: हम गाते हैं-

मारुं वनरावन छे रुडुं, वैकुंठ नहीं रे आवुं।

हम दो घंटे से वैकुंठ के दरवाजे पर थे। जो प्रसंग बाहर से जरा अस्वच्छ लगे पर अंदर से पवित्र लगे ऐसा प्रसंग कहना था वैकुंठ नहीं, हमारा वृंदावन ही अच्छा है। यदि वृंदावन भी न पहुंचे तो मैंने बरसों पहले गाया था -

मारे तलगाजरडुं व्हालुं, वृंदावन नहीं रे आवुं.

वर्तमान हाईब्रीड का है। बैंगन को बोइए तो इतना बड़ा हो जाय! पर अपने गांव में तल बोएं तो गाजर हो जाय! फिर भी हम उसे सुंदर कहे! मिथ्याभिमान न रखे! ऐसा भाष्य किया! गुणवंतभाई शाह 'वडोदरुं' लिखे, वडोदरा न लिखे। ऐसे ही 'तलगाजरडुं'; तल बोइए, गाजर मिले। लौहतत्त्व बढ़े। आदमी बूढ़ा न हो।

बाप, वैकुंठ के द्वार जो घटना घटित हुई यह थोड़ी अस्वच्छ है। हेतु पवित्र है। अस्वच्छ माने बराबर नहीं, ऐसे अर्थ में। आप कथा से परिचित है। वैकुंठ के द्वार पर जय-विजय नामक द्वारपाल रक्षक है। हमारे मुनि कहते हैं, सनतकुमार बालवय में ही रहते हैं। अत: वे कुमार कहे जाते हैं। वे चारों साथ में ही रहते हैं। मैंने अनेक पति-पत्नी देखे हैं, लगभग साथ में ही रहते हैं। कई मित्र भी साथ में रहते हैं। सनतकुमार हमारे ग्रंथ के महिमावंत पात्र है। भगवद्चर्चा के सिवा दूजा कोई व्यसन नहीं। दिशा वस्त्र है। भगवद्दर्शन की आशा ही उनका गणवेश है। हरिगुण गाना उनका व्यसन है। एक बार वैकुंठ के दरवाजे पर जाते हैं। यह प्रसंग अस्वच्छ कैसे हुआ उसके कारण बताने हैं।

ये सनतकुमार जिस समय वैकुंठ पहुंचे उस समय भगवान नारायण शयन करते हैं। द्वारपाल जय-विजय ने ना कह दी, अभी दर्शन नहीं हो सकेंगे। सनतकुमारों ने जिद्द की, हमारे लिए दरवाजे बंद नहीं होने चाहिए। हमें जाने दीजिए। द्वारपाल ने कहा, हम तो चाकर है। हम नहीं जाने देंगे। बहुत चर्चा हुई। विवेक गया। सनतकुमार को क्रोध आया। वैकुंठ के द्वार पर विवेक न रहे और वैकुंठ के द्वार पर सनतकुमार अमर माने जाते हैं उन्हें भी क्रोधरूपी विकार आ सकता है तो मेरी

दृष्टि से यह प्रसंग ऊपर से अस्वच्छ है पर भीतरी जो भाव है, इस घटना के भीतर जो नियति थी वह पवित्र है कि यह घटना हुई, महात्मा उन्हें शाप दे; जय-विजय पृथ्वी पर आये, और रावण-कुंभकर्ण हो और उनके निर्वाण हेतु परमात्मा ने अवतार लिया। जगत को परमात्मा का चरित्र पवित्र करता है। अत: यह प्रसंग यहां रखा।

'रामायण' का दूसरा प्रसंग सतीवृंदा के साथ विष्णु ने किया छल। प्रसंग स्वच्छ नहीं है। परमसती वृंदा स्त्री, उसका पति जलंधर मरता नहीं था। कोई जलंधर का रूप लेकर सती के पास जाता है। सतीत्व मैला हो जो जलंधर मर जाय। तुलसीदासजी को लिखना पड़ा। वृंदा का सतीत्व तोड़ने के लिए भगवान विष्णु ने छल किया। कपट किया। वृंदा का व्रतभंग किया। वृंदा ने जान लिया कि मेरे साथ छल किया। वृंदा ने कहा, एक समय ऐसा आयेगा कि मेरे पति रावण बनेगा। आप रामरूप लेंगे। जानकी अकेली होगी तब मेरा पति जलंधर रावण बना होगा वह साधुवेश धारण कर कल कपट से आपकी पत्नी का अपहरण करेगा। अंदर बात पवित्र है कि असुर को निर्वाण देने की बात है। बाकी ऊपर से जो लीलाप्रसंग दिखता है वह अरुचिकर है। किसी भी आदमी को मारने के लिए पहले बख्तर तोड़ना पड़े। तभी उनके शरीर तक शूल पहुंच सके। तलवार का वार उसे काट सके। कई बार समाज में अधर्म धर्म का बख्तर पहनकर आता है। तब भगवान को धर्म का बख्तर काटना पड़ता है छल कपट करके भी। बाहर से हमें पसंद न आए कि विष्णु छल करे। जो विष्णु राम हो ऐसा बोले है, 'मोहि कपट छल छिद्र न भावा।' मुझे छल पसंद नहीं है। उसी व्यक्ति ने छल किया है। 'रामचरित मानस' के अमुक पात्र ऊपर से बहुत स्वच्छ है तो अंदर से मलिन है। ऊपर से अस्वच्छ है तो अंदर से पवित्र है। स्वच्छता के लिए आयोजित रामकथा में रामकथा के पात्र और प्रसंग द्वारा मेसेज प्राप्त करें। बाह्य से स्वच्छता और अंदर से पवित्रता के विचार हमारे घर तक पहुंच सके तो यह संवाद सार्थक होगा।

अब कथा के प्रसंग को लें। मुझे शंकर का ब्याह करवाना है। आज के विषय की चर्चा है, साबून कपड़े को स्वच्छ करता है, साधु कलेजे को। पानी हो तो साबून कपड़े को स्वच्छ कर सकता है। साधु के पास गुरुदत्त वाणी हो तभी कलेजे को पवित्र कर सकता है। पानी और बानी की जरूरत है। शिवजी ब्याह के लिए सहमत हुए। ब्याह की तैयारियां शुरू हुई। देवता इतने स्वार्थी निकले कि ब्याह की तैयारी में एक भी नहीं आए! स्वार्थी का स्वार्थ बना रहे तब तक साथ देते हैं। स्वार्थ पूरा होने पर स्वार्थ छोड़ देते हैं। देवताओं ने भी ऐसा ही किया। सबने तैयारी कर ली पर नग्न, दिगंबर शंकर की ओर देखा ही नहीं! तुलसी ने व्यवस्था की।

गोस्वामीजी ने शिवजी के शृंगार का वर्णन किया। यहां शंकर बाहर से अस्वच्छ लगते हैं पर अंदर से पवित्र है। भगवान शंकर नंदी पर ऊल्टा बैठकर ब्याहने जाते हैं। भूत-प्रेत की मंडली आई है। सभी हिमाचल प्रदेश पहुंचते हैं। हिमालय की धर्मपत्नी मैनादेवी ने अपने जमाई के स्वागत हेतु सुंदर आरती तैयार की है। सखियों के साथ जाती है। आरती ऊतारने जाती है तो गिर पड़ती है! नारद ने स्थिति संभाल ली। कहा, मैनाजी, आप जिसे बेटी मानती है, उमा की माँ समझती है यह भ्रांति निकाल दीजिए। यह आपकी पुत्री है, यह आपका भाग्य है। यह तो आपकी भी माँ है। समस्त जगत की ब्रह्मांड भांडोदरी परांम्बा शक्ति है। देवी, जिनके रौद्र रूप को देखकर आप घबरा गई, जिसका अनादर हुआ वो आपका दामाद साक्षात् शिव है। व्यासपीठ कहती है, हमारे द्वार पर ईश्वर दस्तक देता है। अपने घर और घट में परांम्बा शक्ति बिराजती है। पर नारद जैसा पहुंचा हुआ गुरु हमें परिचय दे तभी जानकारी मिले। पूरा भाव बदल गया।

भगवान शंकर गए तब भीषण रूप था और जब बारात निकली तब दूसरा रूप था। पुष्पवृष्टि हुई। जयजयकार हुई। अभी तो बारात का प्रस्थान है, साहब! मुझे इस बारात पर नौ दिनों की कथा करनी है। मेरा मनोरथ है। मेरा महादेव मुझे बुलाए फिर मेरी तलगाजरडी आंख से जो दिखे वह वाणी से दिखाने की कोशिश करनी है। हां, राम घोड़े पर बैठे हैं। शंकर बाराती बने हैं। ऐसी कथा भी है। मुझे क्षमा कीजिए, अभी जो महादेव सुंदर है! राम के उपासक नाराज़ न हो। राम प्रसन्न होंगे कि मुझ से भी मेरा इष्टदेव महादेव बहुत सुंदर लगता है। बारात मंडप में पहुंची, साहब! प्रोक्षण हुआ। मंत्रोच्चार हुआ। लोकविधि और वेदविधि अनुसार पार्वती का पाणिग्रहण भगवान महादेव ने किया है। जयजयकार हुआ।

हिमालय की पुत्री शैलजा-पार्वती महादेव को समर्पित हुई है। पुत्री बिदाई का समय आ गया। स्वाभाविक है, पुत्री बिदाई के अवसर कोई भी आदमी अति भावुक हो जाता है। माँ इतना ही बोली, 'करहु सदा संकर पद पूजा।' पुत्री, शंकर के पद की पूजा करना क्योंकि 'नारी धरम पति देव न दूजा।' नारी का धर्म पति ही उनका ईश्वर है। इस सूत्र को याद रखना। हिमालय अचलता का प्रतीक है। उनकी आंखें आंसूओं से भर गई! समस्त हिमाचल प्रदेश आंख में आंसू लेकर पुत्री को बिदाई करता है। उसी पिता को पता है कि कन्याबिदाई कितनी कठिन है! दुनिया के सभी दुल्हों को मैं प्रार्थना करता हूं कि पुत्री को बड़ी करने में, पढ़ाने में, सारे दायित्व निभाने में माँ-बाप निचुड़ गए हो उस शक्ति का जतन करे कि उसका जतन करूंगा तो मेरे घर में तकलीफ़ नहीं होगी। पुत्री भी जतन रखे कि मैंने जिससे ब्याह किया है वह दुनिया की दृष्टि से जीव होगा पर मेरा तो शिव है। उस दिन मंगलाष्टक सार्थक होगा। उमा डोली में बिराजमान होकर पतिगृह जाने के लिए रवाना हुई।

भारत इस ब्रह्मांड का एक ग्रह है पर मात्र ग्रह नहीं, ऋषिमुनियों का अनुग्रह है। किसीका अनुग्रह हो तो ही इस देश में भावना से बंधे संबंध काम निभते हैं। हम अनुग्रह पर जीते हैं, ग्रह पर नहीं। ऐसा एक परम अनुग्रह पृथ्वी है। पार्वती पतिगृह पहुंची है। शिव-पार्वती का नूतन विहार शुरू हुआ है। यह तुलसीदास लिखते हैं, कालिदास नहीं! कालिदास उनके शृंगार-विहार का वर्णन खुलेपन से करते हैं। तुलसी विवेक पुरुषोत्तम के उपासक है। उन्होंने दो पंक्तियों में पूरा शृंगार कर डाला, 'हर गीरिजा बिहार नित नयऊ।' हर गिरिजा का यह नितनूतन विहार, बस रोज नया विहार; उसमें पूरा शृंगार आ गया। समय बीता है। पार्वती ने पुत्र को जन्म दिया है, कार्तिकेय। तुलसी ने आध्यात्मिक अर्थघटन किया है कि पार्वती की कोख से जन्मे कार्तिकेय पुरुषार्थ का फल है। उनके छ: मुख है। कार्तिकेय ताड़कासुर नामक राक्षस को निर्वाण देते हैं। याज्ञवल्क्यजी ने यह कथा भरद्वाजजी को सुनाई। एक बार शिव कैलास के वेदविदित वटवृक्ष तले अपने हाथ से मृगचर्म बिछाकर सहजासन में बिराजित है। अवसर देखकर पार्वती आकर प्रणाम करती है। महादेव उन्हें वामभाग में आसन देते हैं। फिर पार्वती भगवान शंकर को नौ प्रश्न पूछती है और उन प्रश्नों के उत्तर शंकर पार्वती को नौ दिनों की रामकथा में सुनाते हैं।

तीर्थस्थान वही है जो गतिशील है, प्रवाही है। इसीलिए नदी तीर्थस्थान है। आप कोई भी मंदिर बनाइए, अच्छा है। क्या वह मंदिर एक इंच ऊपर उठता है? श्रद्धा में, चमत्कार में आप ऊंचा कर दे यह आपकी चालाकी और नेटवर्क है। संत रोज नया लगता है। बढ़ता है। अत: संत धर्मस्थान नहीं, तीर्थस्थान है। वृक्ष रोज बढ़ता है, मंदिर नहीं बढ़ते। संख्या में बढ़ते हैं पर ऊंचाई में नहीं। चमत्कार में हो तो अलग बात है! झूठे चमत्कार खड़े करना अपराध है।

मानस ४ स्वच्छता

राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान केवल दंभ और पाखंड नहीं बन जाना चाहिए

आज लोहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की पंद्रह दिसम्बर को तिथि है, ये भारत के जुझारू, लेकिन आदरणीय नगीनबापा कहते हैं, ये केवल जुझारू नहीं थे, निर्माता भी थे। ऐसे एक महामानव को व्यापीठ पर से मेरा आदर और मेरा नमन प्रेषित करता हूं। पटेलसाहब की स्मृति हम करें। इनके पास से भी स्वच्छता और पवित्रता का बोध प्राप्त करें। सरदार पटेलसाहब बाहर से तो स्वच्छ थे ही, अंदर से शुद्ध, पवित्र, आदि शब्द का प्रयोग न करूं, लेकिन अंदर से स्पष्ट बहुत और स्वस्थ भी बहुत थे। बाकी तो राजनीति हो तब अनेक विधाओं में से गुज़रना पड़ता है। परंतु ऐसे महामानव को व्यासपीठ पर से मैं नमन करता हूं। स्वच्छता अभियान के एक राष्ट्रीय विचार को लेके इस कथा को हम आगे बढ़ा रहे हैं। मुझे अंकित ने एक कविता दी थी, ये कविता एक गीत है प्रभुलाल द्विवेदी का, 'कचरो वाळे छे संसारी', ऐसा गीत है -

कचरो वाळे छे संसारी रोज सवारना,
छतां क्यांकथी आवीने ऊभराय.
घरनो कचरो सौ कोई वाळे, दि' ऊगे सौ घर अजवाळे.
पण मननो कचरो वाळे ए दि', दि' ऊग्यो कहेवाय.
कचरो वाळे छे संसारी रोज सवारना.

बस, अंदर का कचरा जिस दिन साफ हो उस दिन इनका दिन उगा कहलाता है और सच्चा उजाला कहलाता है। आगे बढ़े बाप!

लीला सगुन जो कहहिं बखानी।
सोइ स्वच्छता करइ मल हानी।

इस पंक्ति में 'लीला' शब्द है। और बाद में जो दूसरी, इस कथा के केन्द्रीय विचार के लिए गाई है -

एक कलप एहि बिधि अवतारा।
चरित पवित्र किए संसारा।।

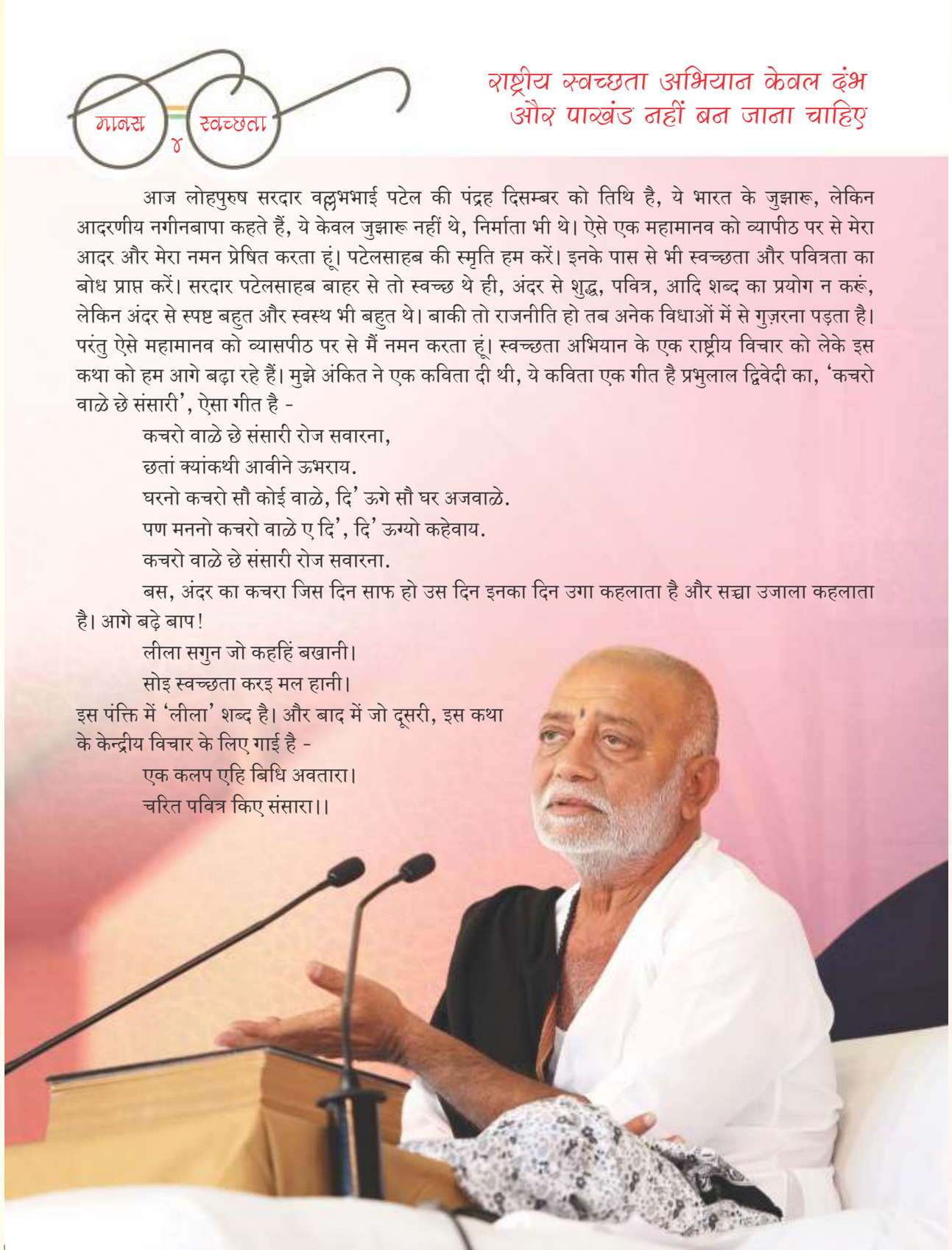

भगवान की लीला जो सगुण लीला है ये कचरे को साफ़ करके स्वच्छता निर्माण करती है और भगवान का जो चरित्र है वो संसार को पवित्र करता है। ऐसा सीधा अर्थ है। परंतु आप रामकथा का श्रवण करते हैं, स्वाध्याय भी करते हैं, 'रामचरित मानस' में राम के साथ चार शब्द जुड़े हुए हैं। एक तो प्रसिद्ध शब्द, जिसको हम रामकथा कहते हैं। मैं भी इस शब्द को ज्यादा स्वीकार करता हूं, 'रामकथा।' दूसरा शब्द है 'रामलीला।' तीसरा शब्द इस सद्ग्रंथ के साथ जुड़ा हुआ है, 'रामचरित'; जिसमें राम केन्द्र में हैं, इसलिए केन्द्र में सत्य है। राम केन्द्र में है इसलिए प्रेम केन्द्र में है। राम केन्द्र में हैं मतलब केन्द्र में करुणा है। ऐसी मेरी व्यक्तिगत समझ है। शास्त्रकारों का एक नियम है कि ग्रंथ में मूल उद्देश्य होता है, मूल हेतु होता है उसे आदि, मध्य और अंत में स्थापित करना पड़ता है। ऐसा ग्रंथ का एक नियम है। इसमें राम सत्य भी है, राम प्रेम भी है, राम करुणा भी है। सत्य राम है, प्रेम राम है, करुणा राम है। इसलिए इस आदि, मध्य और अंत में तीनों का प्रतिपादन तुलसीदासजी जगह-जगह करते रहे हैं।

तो, एक तो ये रामकथा है। दूसरा इसके लिए जो शब्दब्रह्म का प्रयोग किया है ये 'रामलीला' है। तीसरा इस कथा के साथ जुड़ा हुआ शब्द ये 'रामचरित्र', 'रामचरित मानस', 'रामचरित' और चौथा इस कथा के साथ जुड़ा हुआ शब्द है 'रामकथा' अथवा 'रघुनाथगाथा।' अब चार प्रकार से इस बात को कहने में आती है। ऋषि तो जरूरत न हो तब एक अनुस्वार, ह्रस्व, दीर्घ, स्वर, मात्राएं भी कारण बिना खर्चता नहीं। ऋषि की ये कृपणता नहीं बल्कि शब्दब्रह्म प्रति इनके हृदय के भाव है कि शब्द व्यर्थ बिगड़े नहीं कारण बिना। तो एक ही वस्तु के लिए कथा, लीला, चरित्र, गाथा; मुझे और आपको ये समझना है। अथवा तो हम इस पर संवाद रचे या रामकथा तुलसी जब कहते हैं तब उनका हेतु क्या है? जिस वस्तु को रामकथा कहते, तब इसका हेतु क्या है? चरित्र कहलाये तब इसका हेतु क्या है? लीला कहलाये तब उसका हेतु क्या है?

मैं कल आपसे कह रहा था कि मनुष्य को कब खड़ा होना चाहिए? कब उठना चाहिए? एक तो प्रात:काल उठना चाहिए। प्रात:काल मतलब अंतिम प्रहर होता है। मैं नहीं उठता, हां, ये फिर से आप से कह दूं। मैंने आप से ये कहा इसलिए ऐसा नहीं मानना कि बापू साड़े तीन या चार बजे उठ जाते होंगे। ऐसे हमें कुछ फट नहीं जाना है! लेकिन प्रात:काल मतलब यहां प्रहर की बात तो है ही, लेकिन प्रात:काल का अर्थ ऐसा भी ले सकते हैं, समझ का प्रात:काल आये तब उसके बाद बैठा ना रहना। वैसे तो मैं रोज साडे तीन बजे उठनेवाला व्यक्ति। शुरूआत की मेरी ये ही यात्रा थी। उस समय साडे तीन बजे तो उठ ही जाना साहब! वर्षों तक मैं साडे तीन बजे उठता था, लेकिन कुछ दिखा नहीं! कुछ जाना नहीं यार! फिर मुझे लगा कि क्यों ये व्यर्थ! प्रात:काल का मेरा अर्थ है बाप, जब ऐसा लगे कि कुछ भनक हो, कुछ-कुछ ऐसी स्मृति आये। दोपहर को बारह बजे आये उसकी स्मृति तो भी समझो प्रात:काल है। एक बजे आये तो समझो प्रात:काल है। और ओफिस में किसी की फाईल क्लियर करते हो और इसमें सामनेवाला आगे से आपको एक लाख रिश्वत देता हो और फिर आप कहो कि मुझे सरकार पगार देती है। मुझ से अनीति का नहीं लिया जाता। मेरी ये फ़र्ज है आपकी फाईल क्लियर कराना। और जिस समय आप ओफिस में फाईल क्लियर करते हो तो प्रात:काल है। आप किसको प्रात:काल कहोगे? उस प्रहर को? प्रहर तो है ही, जल्दी उठना चाहिए ठीक, लेकिन देशकाल अनुसार फेरबदल भी करना चाहिए।

मैं बहुत जल्दी नहीं उठता। कथा हो तब जल्दी उठ जाता हूं, क्योंकि मुझे मेरा नित्यक्रम होता है वो सब करता हूं। बाप, कथा नहीं होती उन दिनों में मैं देर से ही उठता हूं। अवश्य देर से जागता हूं। सात बजे जागता हूं। बाकी बहुत जल्दी नहीं उठता। इसका अर्थ ये नहीं कि आप जल्दी ना उठो। मैं जल्दी उठने की मनाई नहीं करता। बाकी जल्दी ही उठना चाहिए। बच्चों को बहुत जल्दी नहीं उठना चाहिए। स्कूल ही जल्दी हो गई, इसलिए बेचारे बच्चें को उसी तरह से उठाया जाता है।

सुबह में ही बालहत्याएं शुरू होती है! ए यार, थोड़ी देरी से स्कूल शुरू करो न! माँ-बाप तो छोड़ के बाद में सो ही जाते हैं! ठीक है, स्कूल के नियम होते हैं, लेकिन बच्चा थोड़ा फ्रेश हो, हंसता हो। बच्चें लगभग ऐसे हंसने-हंसते स्कूल कहां जाते हैं? जबरदस्ती जाते हैं। बहुत से तो पीछे रिक्षा में भी सोते होते हैं! खैर, इसमें कुछ जो नियम हो। ये हमारा काम नहीं। हमें ये शिक्षा के विद्वानों पर छोड़ देना चाहिए। शिक्षा के विद्वानों सलाह-सूचना तो देते हैं, लेकिन व्यवहारु भी होना चाहिए।

प्रात:काल उठना चाहिए। साधु, संत, संन्यासी, महात्माएं जो साधना करते हैं उनके लिए तो सहज होता है, लेकिन हम तो संसारी व्यक्ति है न? देखादेखी करके तद्दन झूठा! हम तो दोपहर को भी सो जानेवाले मनुष्य! प्रात:काल का अर्थ है, जीवन में कोई नई कथा, कोई कविता, कोई गज़ल, कोई सूत्र, कोई लेख, कोई लोकगीत, कोई छंद, कोई मदारी का खेल, कोई चित्रकला, कोई शिल्पकला, दुनिया की कोई भी विद्या के द्वारा कोई चमक हो और हम जाग जाए कि मेरे जीवनविकास के लिए उपयोगी है। तो ये हमारा प्रात:काल है। समझ आये तब उठ जाना। इसलिए तुलसी ने उठने की जगह 'मानस' में एक निश्चित की है। इसका प्रमाण आपको दूं -

प्रातकाल उठि कै रघुनाथा।
मातु पिता गुरु नावहिं माथा।।

तुलसी जो चौपाई लिखते हैं, इसमें केवल प्रात:काल उठने की ही बात करके रुक नहीं जाते। ये केवल एक-एक नियम नहीं पकड़ाते। ये क्या कहते हैं कि आपके उठने का प्रमाण क्या? कि आप जागके आपके माता-पिता या आपके आचार्य या आपके शिक्षक या आपके बुज़ुर्गों या आदरणीयों को आप जब वंदन करने लगो, आदर देने लगो तभी समझना कि आपकी सुबह हुई है और आप प्रात:काल उठ गये हो।

उठे लखनु निसि बिगत सुनि अरुनसिखा धुनि कान।
गुरु तें पहिलेहिं जगतपति जागे रामु सुजान।।

लक्ष्मणजी उठे, राम से पहले उठे। ये हमारी एक रीति थी कि इस तरह उठना। गुरु जागे उससे पहले शिष्य उठ जाए अथवा तो जाग्रत गुरु अपने पास हो, अपने पास कोई ऐसा मार्गदर्शक हो तो हमें बैठे न रहना चाहिए। हमको उनसे पहले उठ जाना चाहिए कि हमको कोई ऐसा व्यक्ति मिला है। हमें उस व्यक्ति का सांनिध्य, सामीप्य मिला है तो हम क्यों प्रमादी बने रहे? ये कुछ कहे इससे पहले मैं उठ जाऊं। और ये उठना एक दूसरा स्थान है। मैं कैसे देर कर सकता हूं? मैं कैसे प्रमादी रहूं? ऐसा इसका अर्थ मुझे सुझता है। तीसरा, जब कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति को समस्या घेर ले तब उठना चाहिए। जनकराजा को लगा कि मेरी बेटी कंवारी रही जायगी। अब मुझे क्या करना चाहिए? किसी ने धनुष नहीं तोड़ा तब जनक जैसे ज्ञानी मानव को भी चिंता हो गई। जीवन के चारों तरफ समस्याएं खड़ी हो तब अच्छे-अच्छे ज्ञानी भी विचलित हो जाते हैं। इसलिए जनक भी विचलित हो गये। सब राजाओं को कहा कि सब घर वापस चले जाएं! मेरी पुत्री का विवाह विधाता ने लिखा ही नहीं है! समस्या घेरने लगी तब राम से विश्वामित्र कहते हैं कि तुम उठो। कब उठना चाहिए मानव को? जब हमें ऐसा लगे कि ये मानव समस्याओं से घिरा है तब मानव को उठना चाहिए।

उठहु राम भंजहु भवचापा।
मेटहु तात जनक परितापा।।

'हे राघव, उठो। अब साक्षी बनकर बैठे न रहो। छोड़ो ब्रह्मत्व अपना। मानवत्व प्रगटाओ। आप ब्रह्म के रूप में द्रष्टा हो, साक्षी हो, कबूल लेकिन समाज की चारों तरफ समस्याएं है। एक महामानव जनक जैसा विदेहपुरुष अभी समस्याग्रस्त है, चिंतित है। अब तुम उठो।' जब मानव समस्याग्रस्त हो तब उठना चाहिए। और कोई प्रेमी जिसके प्रेम में तमोगुण नहीं, जिसके प्रेम में रजोगुण नहीं, जिसके प्रेम में सत्वगुण नहीं, जिनका प्रेम 'नारद भक्तिसूत्र' अनुसार गुणरहितम् हो चुका है, ऐसी कोई व्यक्ति आपसे मिलने आए तब उठना चाहिए।

उठे रामु सुनि प्रेम अधीरा।
कहुँ पट कहुँ निषंग धनु तीरा।।

चित्रकूट में ये दृश्य आया है कि भरतजी भगवान राम से मिलने आये हैं। जब राम को यह पता चला कि भरत आये हैं, ऐसे में राम इतने अधिक प्रेम अधीर बन गये कि खड़े हो जाते है! इस समय भगवान के शरीर पर से चार वस्तु तुलसीदासजी ने ऊतार दी। 'कहुँ पट', पहले तो वस्त्र गिर गया। 'कहुँ निषंग', कमर उपर भाथा जो बांधा था वो निषंग, ये भी गिर गया। 'धनु', कंधे पर धनुष था वो भी नीचे गिर गया। और राम बैठे-बैठे तीर फेरते थे चित्रकूट में पीठिका पर बैठकर वो हाथ में बाण भी गिर गया। चार वस्तु गिर गई। मानव, सच्चे प्रेम में उठा हुआ मानव तभी उठा हुआ गिना जाता है जब उसके अंग पर से चार वस्तु गिर जाए। कितने मूल्यवान सूत्र तुलसी ने दिये हैं!

इस समय की अहमदाबाद की कथा सीता और 'गीता' के बीच की कथा है। कल सीताविवाह की कथा का दिन है। विवाह पंचमी जायेगी और 'गीताजयंती' आयेगी। सीता और 'गीता' के बीच इनके संपूट मे चलती ये बाहरी स्वच्छता और भीतरी पवित्रता की कथा बह रही है साहब! कैसे दो समर्थ परमतत्त्वों के बीच में कथा है! तो सीता तो सबसे मिलने को तैयार है, लेकिन कृषि करो, कृषि करो, हल जोतो, हल जोतो! और साहब, मुझे वापस याद कराना, मैं कहां था? मुझे कुछ याद आता है! कथा ऐसी है कि जनक के राज्य में अकाल पड़ा। ऐसा राजा हो और अकाल पड़े? न पड़ना चाहिए। मेरा मन ना कहता है। जनक जैसा राजा, ब्रह्मर्षिओं के घूटने दबाके बैठे ऐसा राजा, इस राजा के राज्य में अकाल पड़े? लेकिन सिर्फ़ ज्ञान हो और आंख में आंसू न हो; आंसू न हो तो ये अकाल नहीं तो दूसरा क्या है? नमी नहीं! और नमी भक्ति के बिना नहीं आती है। इसलिए जनक को खेती करनी पड़ी। किसी ने कहा कि आप खुद हल चलाओ तभी बरसात होगी। जनक ने हल चलाया। सीता निकली मतलब कि भक्ति प्रकट हुई। भक्ति प्रकट हुई और बरसात हुई। खाली ज्ञान अकाल है। एकदम कोरे रह गये। भगवतीकुमारबापा को फिर से एक बार याद करूं -

हरि, मने अढी अक्षर शिखवाडो!
एंशीने आरे आव्यो छुं;
मारो अगर जिवाडो!

जनक के यहां भक्ति प्रकट हुई, जानकी प्रकट हुई। मुझे कहना है कि जनक महाराज ऐसी हस्ती; जब समस्याएं आई तब प्रभु खड़े हुए। परमप्रेम देखा भरत का इसलिए भगवान खड़े हुए और चार वस्तुएं गिर गई। स्वाभाविक प्रभु ऐसे जल्दी से दौड़े! हम कोई प्रियजन से मिलने के लिए दौड़े तो चप्पल पड़ी रहती है! याद नहीं आता पहनना। पगड़ी गिर जाती है! कंधे पर से अंगवस्त्र भी गिर जाते हैं! तो, संतों ने ऐसा अवलोकन कराया, ऐसा दिखाया कि कोई प्रेमी से मिलने जाए तब पट गिर जाना चाहिए। पट का अर्थ संतों ने बताया, पट मतलब वस्त्र। वस्त्र मतलब जिससे छुपाया जाए वह आवरण। शरीर को छुपा सकते हैं। पट का दूसरा अर्थ है कपट। सच्चे प्रेमी के सामने जब कोई व्यक्ति उठे तब कपटमुक्त होना चाहिए। निषंग का अर्थ है असंगता। कोई परमप्रेम एक संत आया है। भगवान कहते हैं कि इसके सामने मैं तमाम संग छोड़ के दौडूं। निसंगता मतलब असंगता। धनु, धनुष्य को 'रामचरित मानस' ने विज्ञान कहा है। तो ये ज्ञान या विज्ञान भगवान के कंधे पर से नीचे गिर गया है। किसी संत को, किसी प्रेमी को मिलना हो तब ज्ञान की पोटली कंधे पर लेकर नहीं निकलना चाहिए। तीर; तीर का एक अर्थ होता है बाण। अपनी भाषा में तीर मतलब किनारा। सच्चे प्रेमी को देखे तब किनारे पर खड़े ना रहे, बीच सागर में, मझधार में कूद पड़े।

अमे तो समंदर उलेच्यो छे प्यारा!
नथी मात्र छबछबियां कीधां किनारे।
मळी छे अमोने जगा मोतीओमां,
तमोने फक्त बुद्बुदा ओळखे छे।

किनारे बैठकर फक्त तमाशा देखते हैं!

इस राज़ को क्या जाने साहिल की तमाशाई।
हमें डूबके जाना है सागर तेरी गहराई।

हमने तो कूदके तेरी गहराई देखी है। किनारेवालों को क्या पता चलेगा?

राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान खाली दंभ और पाखंड नहीं बन जाना चाहिए। ये नौ दिन स्वच्छता को केन्द्र में रखकर कथा की शुरूआत की है। मुझे ये अच्छा लगा कि मेरे भाग में ये कार्य आया। ये एक मेसेज जायेगा। हमें कोई फोटो ही नहीं खिचवाने हैं! मुझसे गांधी आश्रम में एक भाई ने कहा, बापू, आप झाडू हाथ में मत लेना? नहीं तो कोई कहेगा कि बापू 'आप' में जुड़ गये! मैं कहीं जुड़ा हुआ नहीं हूं। मेरे पचीसवें अवतार के साथ जुड़ा हुआ हूं बाप! जो-जो राष्ट्रीय अच्छे कार्य हो इसमें मुझे जो योगदान देने का अवसर मिले तो मैं योगदान दूं। मेरा ये काम है। एक ठोस कार्य का एक मेसेज देने के लिए कथा के साथ सुसंगत पूरा विचार प्रस्तुत होता है।

आज किसीने मुझसे ये प्रश्न भी किया था कि शंकर के विवाह समय में आप कृष्ण को ले आये? शंकर ने तो सती को ऐसा वरदान दिया था कि द्वापर में कृष्ण का जन्म होगा फिर उनका पुत्र तुझे पति के रूप में मिलेगा। आप इनके विवाह में कहां से ले आये? कृष्ण अवतार की दृष्टि से द्वापर में आए। बाकी गोलोक में तो आह्लादिनी शक्ति के साथ नित्य निरंतर गोविंद निवास करते हैं। ये कहीं जाते नहीं। आज भी वृंदावनवाले ये ही मानते हैं कि व्रज छोड़के कृष्ण एक कदम भी कहीं गये नहीं, साहब! और अंत:करण की प्रवृत्ति के आगे दूसरा कोई भी प्रमाण काम नहीं करता। कृष्ण तो शाश्वत है, परम शाश्वत तत्त्व का नाम भगवान कृष्ण है। इसलिए आये, अवश्य आये। ये सिर्फ़ द्वापर में ही आयें ऐसा नहीं है। युग-युग में ये खास ललित नरलीला करने के लिए आते ही रहते हैं। बाकी इनके बिना हम कहां है? कब थे? इनके बिना हम कभी नहीं होंगे। कौन-सा गोपीगीत लेंगे? अपने पास तो बहुत सारे गोपीगीत है!

अकेले हैं, चले आओ, जहां हो,
कहां आवाज़ दे तुमको, कहां हो, अकेले हैं...

इस गीत को गोपीभाव से गायेंगे तो लगेगा कि 'भागवत' का पाठ कर रहे हैं। यहां कोई मैं फिल्म का गीत सिखाने के लिए नहीं आया हूं! मैं गाऊं तब मुझे ऐसा अनुभव होता है इसका मैं क्या करूं? मैं बीमार व्यक्ति हूं! कोई बीमारी लगी है, जिसका कोई ईलाज नहीं! केवल एक ही ईलाज है और वो मुझे चाहिए भी नहीं। मीरां को चाहिए तो मीरां को मुबारक! मोरारिबापू को नहीं चाहिए। मीरां ने कहा है, मेरी पीड़ा तब ही मिटेगी जब वैद सांवरिया होगा। मुझे वैद नहीं चाहिए, मुझे पीड़ा चाहिए। ठीक होना ही नहीं है! मैं दिल से कहता हूं, हे गोविंद, तेरी पीड़ा में से मुझे ठीक नहीं होना है, मार दे! ठीक हो जाने के बाद तुझे भूल गया तो! नुक्सान का धंधा नहीं करना। मीरां को होगी औषधि की जरूरत। तुलसी ने भी कहा है, राम महामंत्र का जाप औषधि के लिए नहीं जपता! ये मुझे ज्यादा पीड़ा दे। ये हमें अकाल पड़ने न दे। ये हमें नम रखे, हराभरा रखे। तो ये गोपीगीत नहीं तो क्या है? ये गोपीगीत हैं। नये गोपीगीत लिखने पड़ेंगे। नये गोपीगीत विवेक से नयी तरह से गाने पड़ेंगे। कृष्ण को खोजने के लिए कोई एक ही भाषा, कोई एक ही गीत, ऐसे बंधन में रहने की बहुत जरूरत नहीं। मीरां ने अपनी तरह से गाया। नरसिंह ने अपनी तरह से गाया। सबने अपनी-अपनी तरह से गाया। व्यासपीठ अपने तरीके से गाती है, साहब! इसलिए इनके मर्म को समझना। तुम कल्पना तो करो! शुकताल का गंगा का ये किनारा होगा। सात दिन में जिसकी मौत सामने खड़ी हो, ऐसे परीक्षित जिज्ञासु होकर एक अवधूत के चरणों में है। मेरी दृष्टि में शुकदेव ये रूखड बाबा है। रूखड व्यक्ति न हो तो मुझे चलेगा, रूखड एक विचार है। रूखड परमात्मा तक पहुंचानेवाली वृत्ति है। ये व्यक्ति ही है। शायद होगा, लेकिन किसी को स्वीकार न हो। रूखड एक चेतना का नाम है, खोज का नाम है। एक जगे हुए का नाम है। उसका परिचय है, जो गिरा नहीं, झूका है। जिसका पतन हुआ हो उसका नाम रूखड नहीं, लेकिन जो तनके खड़ा है और ऐसा तनके खड़ा है कि जिसे कोई गिरा सकता नहीं।

रूखड बावा तुं हळवो हळवो हाल जो,
आ गरवाने माथे रे रूखडियो झळुंबियो...

मुझे ऐसा लगा गुरुकृपा से, इसलिए मैंने कहा, गरवा के सिर पर रूखडियो झळुंबियो इसका अर्थ, जगत में जो

गरवा होगा उपर से ओर नरवा हो अंदर से इस पर जो चेतना दौड़ती होगी। हम अपने अंदर से नरवा मतलब पवित्र और बाहर से गरवा मतलब स्वच्छ होने चाहिए। उस पर परमतत्त्व झकझोरता हो। ये रूखडतत्त्व है। ऐसा एक तत्त्व, बरसता तत्त्व, हरियाली से भरपूर तत्त्व और जैसे कुएं का पानी मेरे और आपके खेत की क्यारी तक आके चेतना सिंचित करे, बलवान बनाये ऐसा एक रूखड तत्त्व।

प्लीज़, आई इन्वाईट यू ओल। मैं निमंत्रित करता हूं आपको मेरे युवा भाई-बहनों, तीन वस्तु याद रखना। एक नियति को याद रखना। हमने जो विचार किया हो, वैसा नहीं होता तब याद रखना कि नियति मेरे और आपके परम हित में कुछ दूसरा ही विचार कर रही है। जो युवा इसको याद रखेंगे तो किसी दिन 'डिप्रेश' नहीं होंगे। सफलता, असफलता इतनी बड़ी वस्तु नहीं है। किया हुआ कभी निष्फल जाता नहीं। दिल्ली के एक मर्हूम शायर, जिनका तख्खल्लुस था 'दिल', दिल साहब की एक गज़ल है -

जो पहले दिया सो अब मिलता है,
फरियाद न कर, फरियाद न कर।
कर नेक अमल और हर को सिमर,
उत्पात न कर, उत्पात न कर।

दूसरा शब्द याद रखना, 'निमित्त।' ये तो मैं अपने विचार कह रहा हूं। आपको अनुकूल लगे तो सोचना। जो कुछ करते हैं, करेंगे, करायेंगे, इसमें मैं 'निमित्त' हूं। मैं निमित्त हूं, ये सदा याद रखना। मैं मेरा कहूं ये ठीक नहीं, लेकिन आप मेरे हो इसलिए कहता हूं, ये मोरारिबापू अगर नहीं होते तो क्या रामकथा अटक जाती? नहीं। बल्कि इससे भी अच्छी तरह गाई जा रही होती। लेकिन आपके भाग्य कि मुझे निमित्त बना दिया कि तू इस तरह गाना और मैं गाता हूं। दादा ने मुझसे जो कहा था वो कहते मैं डर जाता हूं इसलिए इतना विस्तार करता हूं। मैं कैसे कहूं? कल मैंने पहलीबार कहा। मुझे लगता है कि ये घटना घटी उसके तीन दिन बाद दादा ने खुद की चेतना छोड़ दी थी और थोड़े अस्वस्थ हो गये थे। मैं ऐसे भी पैर दबाता था। नौ-दस वर्ष की उम्र होगी। उन्होंने एक बार मुझे हाथ का ईशारा किया, 'कथा गाना, कहना', ऐसा कहा था। कथा कहने के लिए मैं नहीं पढ़ता था, लेकिन उस दिन ऐसा हुआ साहब कि मैं पैर दबाता था और फिर तीन-चार दिन में सब पूरा हो गया और कहा कि गाने की इच्छा हो चौपाई तो गाना बेटा, कहना, बोलना। ये सब मेरे लिए आशीर्वाद ही तो था। और उस समय मैंने ये कह दिया कि दादा, मैं गाऊं तो आप तो समझ ही सकते हैं कि मुझे पहले किसको सुनानी है? मेरी भी इच्छा हो कि गाऊं इसे पहले मैं किसको सुनाऊं? दादा समझ गये। तो एक वाक्य बोले थे, 'मैंने तुझे सुना है।' इसका मुझे क्या अर्थ निकालना? इसलिए मुझे आश्चर्य हुआ, चमक आई। मैं जो बोलता रहा हूं कि कभी-कभी हम बोले होंगे। अभी बोल रहा हूं। अभी हमारा दूसरा जन्म आये तब बोलना है। इसका अनुसंधान होगा कि दादाजी ने कहा कि मैंने सुना है! पता नहीं चलता! इसलिए 'निमित्त' शब्द याद रखना। हमें कोई निमित्त बना देता है।

युवानी में नियति याद राखो। दूसरा, मुझे परमात्मा किसी न किसी क्षेत्र में निमित्त बना रहा है ये याद रखा। और तीसरा एक शब्द याद रखना है 'नेति', 'नेति', 'नेति'। इसमें हम बहुत ही छोटे पड़ते हैं। हमारी औकात ही नहीं कि हम इति कर सके। अस्तित्व में सब 'नेति' है। कौन-सा तत्त्व कहां से निकलता है ये किसी को पता नहीं।

तो, जहां सर्जक ह्रस्व, दीर्घ, मात्राएं, अनुस्वार भी कारण बिना प्रयोग में लेने को तैयार नहीं होता, ऐसे में एक परम सर्जक कभी रामकथा, कभी रामलीला, कभी रामचरित्र, कभी रामगाथा ये चार-चार शब्दों का प्रयोग किस लिए करता है? इसके पीछे कारण क्या है? मेरी छोटी बुद्धि के हिसाब से कथा उसे कहते हैं जिसका कथन हो सके। कथा के लिए कथक होता है। पहले कथाएं कथ्थक नृत्य के साथ कही जाती थी। मुझे जो समझ में आया उस हिसाब से कथा वो है जिसका कथन हो सके। और गाथा वो है जो ग्रथित हो। ग्रंथस्थ करने में

आता है गाथा को। लीला उसे कहा जायेगा कि जब कोई नाटक लिखे और लिखने के बाद उसका मंचन हो। तो लीला का सरल अर्थ है नाटक। जो अभिनय करने से पहले लिखा जाता है। और चरित्र उसे कहेंगे जो जीते हो, जिन्हें जीना पड़ता हो। इसलिए तुलसी चार विधा 'मानस' में रखते हैं। कभी रामकथा है, इसका कथन होता है। ये रामगाथा है। इनका ग्रंथ हमारे हाथ में है। ये रामचरित्र है, जो मुझे और आपको बाहर से स्वच्छ और अंदर से पवित्र रहने का जीवन का पावित्र्य सिखाती है; चरित्र है। और ये रामलीला है कि वाल्मीकिजी ने पहले से ही लिख दिया कि ऐसा कोई होगा। और बाद में इसका मंचन कराया। चार प्रकार के शब्द है। तो लीला, जो रामलीला है, ये स्वच्छता लाती है। रामचरित्र है, ये पवित्रता लाती है। रामकथा मंगल करती है। और रघुनाथ गाथा है ये विषाद का शमन करती है। ये मुझे और आपको सुख संपादन कराती है और विषाद का नाश करती है। ये चार विधा 'मानस' में है।

भगवान शिव वेदविदित वटवृक्ष के नीचे सहजासन में बैठे है। योग्य अवसर देखकर पार्वती आई, वामभाग में देवी को आसन दिया और पार्वतीजी शिवजी से प्रश्न करती है कि मेरे मन में जो संदेह है उसे दूर करो रामकथा द्वारा कि रामतत्त्व क्या है? 'हे पार्वती, आपका धन्यवाद। आपने ऐसी रामकथा पूछी जो समस्त लोक को गंगा की तरह पवित्र करेगी। ब्रह्म जो मानव बनके क्यों आया? ये तत्त्व कार्य-कारण सिद्धांत से परे है। फिर भी वो पांच कारणों की मैं आपको कथा कहूंगा।' पांच कारण बताएं, इनमें दो कारण मैंने आपको बाहरी शुद्धि- बाहरी स्वच्छता और भीतरी पवित्रता के प्रसंगों जय-विजय और वृंदा के कहे हैं। तीसरा प्रसंग नादर का कहलाया। नारद विश्वमोहिनी में भगवान की माया में फंसे हैं। और ब्याहने का निर्णय करते हैं। प्रभु उनके परम हित में उनमें से मुक्त करते हैं। और वो न समझ में आया तब तक नारद ने हरि को गालियां दी है! ये प्रसंग भी उपर से अस्वच्छ है, अंदर से पवित्र है। नारद के शाप के कारण श्री हरि को मानवदेह धारण करना पड़ा। चौथा कारण मनु और शतरूपा का कहलाया। ये दो बाहर से भी स्वच्छ है और अंदर का कारण भी स्वच्छ है। पांचवां कारण राजा प्रतापभानु का कारण है। ये बाहर से भी मलिन है और अंदर से भी मलिन है। लोभ अस्वच्छ मानसिकता का प्रमाण है। बाद में ये राजा कुसंग में फंस जाता है और पतन होता है। और उसमें से रावण जन्म लेता है। मतलब एक नई अस्वच्छता प्रकट हुई। रावण ने तपस्या की। रावण वरदान के सामर्थ्य के कारण पूरे जगत पर अत्याचार करता है। पृथ्वी त्राहिमाम हो जाती है। गाय का रूप धारण करती है पृथ्वी और ऋषिमुनियों के पास जाती है। ऋषिमुनियों ने कहा कि हम से कुछ नहीं हो सकता। देवताओं ने भी कहा कि ये हमारे बस की बात नहीं है। अंत में सब ब्रह्मा के पास गये और ब्रह्मा की अगवानी में सभी ने परमात्मा की स्तुति की। आकाशवाणी हुई, 'डरो नहीं, अंश सहित मैं अवतार धारण करूंगा।'

अयोध्या धर्मस्थान में तुलसी हमको ले जाते हैं। त्रेतायुग है। रघुवंश का शासन है। वर्तमान राजाधिराज महाराज दशरथजी है। ज्ञानकांड, कर्मकांड, उपासनाकांड, तीनों का संयुक्त रूप दशरथजी है। 'मानस'कार कहते हैं कि दशरथ धर्मधुरंधर है, गुणनिधि है। हृदय में भक्तिमय जीवन धारण करते हैं। प्रसन्न दाम्पत्य है पर एक ग्लानि है। इतनी रानियां होने के बाद भी पुत्र नहीं है। ये चिंता किससे कहे? दुनिया राजा के पास जाती है, लेकिन राजा किसके पास जाए? राजा ने खुद की पीड़ा खुद के गुरु से कहने का निश्चय किया। गुरु मतलब हमारा मन, वचन, कर्म से हित इच्छनेवाला एक मार्गदर्शक। ऐसा एक सलाहकार, कोई शिक्षक। 'गुरु' ये आध्यात्मिक जगत का शब्द है। 'सद्गुरु' ये मेरी दृष्टि से परम अवस्था का नाम है। 'बुद्धपुरुष' ये भी परमशब्द है। मैं भरोसे का व्यक्ति हूं। मैं मेरा भरोसा किसी पर से भी डिगने नहीं दूंगा, मानव पर से भी नहीं। लेकिन मेरे मतअनुसार एक बात निश्चित है कि या तो गुरु को छोड़ दो या फिर सब गुरु पर छोड़ दो। आज दशरथजी ने भी सब गुरु पर छोड़ दिया। पुत्रकामेष्टि यज्ञ कराया। शृंगि ऋषि ने यज्ञ शुरू किया। चरु लेके अग्निदेव यज्ञपुरुष प्रकट हुए। गुरु वशिष्ठजी के हाथ में प्रसाद की खीर दी गई है। आधा प्रसाद कौशल्या को, पा भाग कैकेयी और दूसरा भाग कौशल्या और कैकेयी के हाथ से सुमित्रा को दिया। खीर के प्रताप के कारण रानियां सगर्भा स्थिति का अनुभव करती है। दिन गुज़रने लगे। प्रभु के प्रकट होने का समय नज़दीक आने लगा। त्रेतायुग, चैतमास, संवत्सर का आरंभ। चैत्र नवरात्रि पूरी हुई, शक्तिपूजा के दिन पूरे हुए। नवमी के दिन शक्तिमान को प्रकट होना है। मंगल नाद होने लगा। सब परमात्मा की स्तुति करते हैं। जगनिवास, पूरा जग जिसमें वास कर रहा है ऐसा ब्रह्मतत्त्व, ऐसा ईश्वर, ऐसा परमात्मा, जो नाम लेना हो वो लो। ये परमतत्त्व माँ कौशल्या के भवन में प्रकाशरूप में प्रकट होने लगा है।

प्रभु प्रकट होते हैं। माँ को ज्ञान हुआ। माँ मुंह फेर लेती है। 'आप आये, आपका स्वागत है', परंतु आज आप मानवरूप में नहीं, पुत्ररूप में नहीं, नर नहीं, नारायण रूप में आये हो। पुत्र बनकर नहीं, बाप बनकर आये हो, इसलिए आपका वचन टूटा है। हमको हरि मानव के रूप में चाहिए। आप मनुष्य बनो। धन्य है ये धरती, धन्य है भारत, इसमें अवध धन्य है। माँ कौशल्या जो परमात्मा को मानव कैसे बना जाए उसका शिक्षण देती हैं। कौशल्या प्रेम की ताकत से हरि को खुद की औकात के अनुसार निमंत्रण कर रही है। परचा बंद करो,परिचय दो। साधुओं में जीवित समाधि ली, ऐसा कहा जाता है। लेकिन हमारी कक्षा में देखूं तो जीवित समाधि होती ही नहीं, जीवित उपाधि ही होती है! अर्थात् परेशानियां ही होती है। जीवित समाधि का अर्थ मेरी व्यासपीठ ऐसा करती है कि मानव जीवित होता है जब सभी प्रकार की परेशानियां उसे घेर ले, फिर भी हंसता रहे इसका नाम जीवित समाधि है। जीवित समाधि है, ऐसा कहने के बजाय चेतन समाधि है, ऐसा कहना बेहतर होता है। मुझे या आपको सबको कई परेशानियां होती है। और परेशानियां हो ये ही हमारी डिग्री है। फिर से एक बार कहूं कि कुत्ते को वास आती है कि गुनहगार है या निर्दोष, तो साधु को वास नहीं आती होगी? उसको दूर से ही पता चले! खुमार बाराबंकवी का एक शे'र है -

न हारा है इश्क न दुनिया थकी है।
दीया जल रहा है हवा चल रही है।
मेरे राहबर मुझको गुमराह कर दे,
सुना है कि मंज़िल करीब आ रही है।

तो बाप, हरि बालक बने तब रोये। मानव को रोना चाहिए। आंसू छिन जाय ये बहुत बड़ा नुकसान है। मेरा एक सूत्र है, चाहे जैसी परिस्थिति आये, शिकायत न करो, रोया करो। कैलास पंडित याद आये -

दर्दने गाया विना रोया करो।
प्रेममां जे थाय ते जोया करो।

माँ कौशल्या के अंक में ब्रह्म, बालक बनकर मानवीय रूप में रुदन करते हैं। ये सुनकर रानियां भ्रम के साथ दौड़ी आई! दासियां दौड़कर आई! पुत्रजन्म की बधाईयां शुरू हुई, महाराज बधाई हो, बधाई हो! दशरथजी ब्रह्मानंद में डूब गये। गुरु को बुलाया, क्योंकि ब्रह्म है कि नहीं इसका निर्णय तो कोई गुरु ही कर सकता है। गुरु आये। अनुपम बालक के दर्शन हुए हैं। दशरथजी के आनंद की कोई सीमा न रही। सबको बधाई हो, बधाई हो, बधाई हो। आप सबको व्यासपीठ पर से, इस घाट पर से सभी को रामजनम की बधाई हो, बधाई हो।

राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान सिर्फ़ दंभ और पाखंड न बन जाना चाहिए। ये नौ दिन स्वच्छता को केन्द्र में रखकर कथा चल रही है। मुझे ये अच्छा लगा कि ये कार्य मेरे हिस्से में आया। ये एक मेसेज जाएगा। हम कोई फोटो खिंचवाने नहीं बैठे है! मुझे गांधी आश्रम में एक भाई ने कहा, बापू, झाड़ू हाथ में मत लेना, नहीं तो कोई कहेगा कि बापू 'आप' में जुड़ गये हैं! मैं कहीं भी जुड़ा हुआ नहीं, मेरे पचीसवें अवतार के साथ जुड़ा हुआ हूं। बाप! जहां पक्षापक्षी, वहां नहीं परमेश्वर। जो-जो राष्ट्रीय सुंदर कार्यों हो उनमें मुझे जो अर्घ्य देने का अवसर मिले तो मैं अर्घ्य दूंगा। ये मेरा काम है।

मानस ५ स्वच्छता

परमात्मा का चरित्र हमें मलमुक्त करता है

'मानस-स्वच्छता' विचार लेकर गुरुकृपा से संतों को, विद्वानों को सुन-सुनकर थोड़ा-बहुत पढ़कर जो कुछ समझ में आया, अनुभव किया इसकी सात्त्विक-तात्त्विक चर्चा आपके साथ कर रहा हूं। हमारे शरीर पर मैल चिपकता है; कान में कचरा जाता है, धूल जाती है। वक्त पे स्वच्छ न हो तो वह भी मैल है। उसी तरह आंख, नाक, दूसरे विभिन्न अंगों में भी स्वच्छता के अभाव में मैल जमा होता है। ये है बाह्य इन्द्रियों का मैल। इन्द्रिय का दूसरा नाम है करण। उसमें जमा होता अनावश्यक, रोगपूर्ण, असभ्यतापूर्ण दिखता बाह्य करण का मैल है। अंदर की इन्द्रियां अन्त:करण है। इसकी वेदांत और ज्ञानपरक ग्रंथों में चार की संख्या बताई है। वेदांत की भाषा में अंत:करण चतुष्टय कहते हैं। हमारें रोहडिया लिखते हैं -

परोढ थयुं ने पांगर्यु मन ...

हमारे यहां अभी लोकसंगीत के कार्यक्रम में सुबह को गाये जानेवाले रामग्री प्रकार पर वक्तव्य था। भरत पटेल ने दिया था। वह तो सुगम संगीत का फनकार है। बहुत विश्लेषण किया। हमें जानना चाहिए। परन्तु विशेष आनंद लेना चाहिए। मैं ज्यादातर आनंद लेता हूं। शायद सभी राग समझ न आए। जान जानकर थक जाए! ग़ज़ल भी पूरी समझ में न आए। पर सबका आनंद ले तो भी काफ़ी है। हम रामग्री की बात कर रहे थे। तकलीफ़ यह है कि हमारे पास सामग्री है, रामग्री नहीं! सामग्री कम होगी तो भी चलेगा। पर एकाद रामग्री होगी तो नरसिंह महेता की तरह पार हो जायेंगे -

अखंड रोजी मारा हरिना हाथमां,
वालो मारो जुए छे विचारी
देवा रे वाळो नथी दूबळो ...

एक बात निश्चित्त है, देनेवाला दुर्बल नहीं होता। लेनेवाला ही कमजोर होता है। सेवा वैसे नहीं होती। जिसे सहज हो वह सेवा कर सकता है। 'परोढ थयुं, पांगर्यु मन', इस पंक्ति में

कवि सुंदर स्वच्छता की बात करता है -

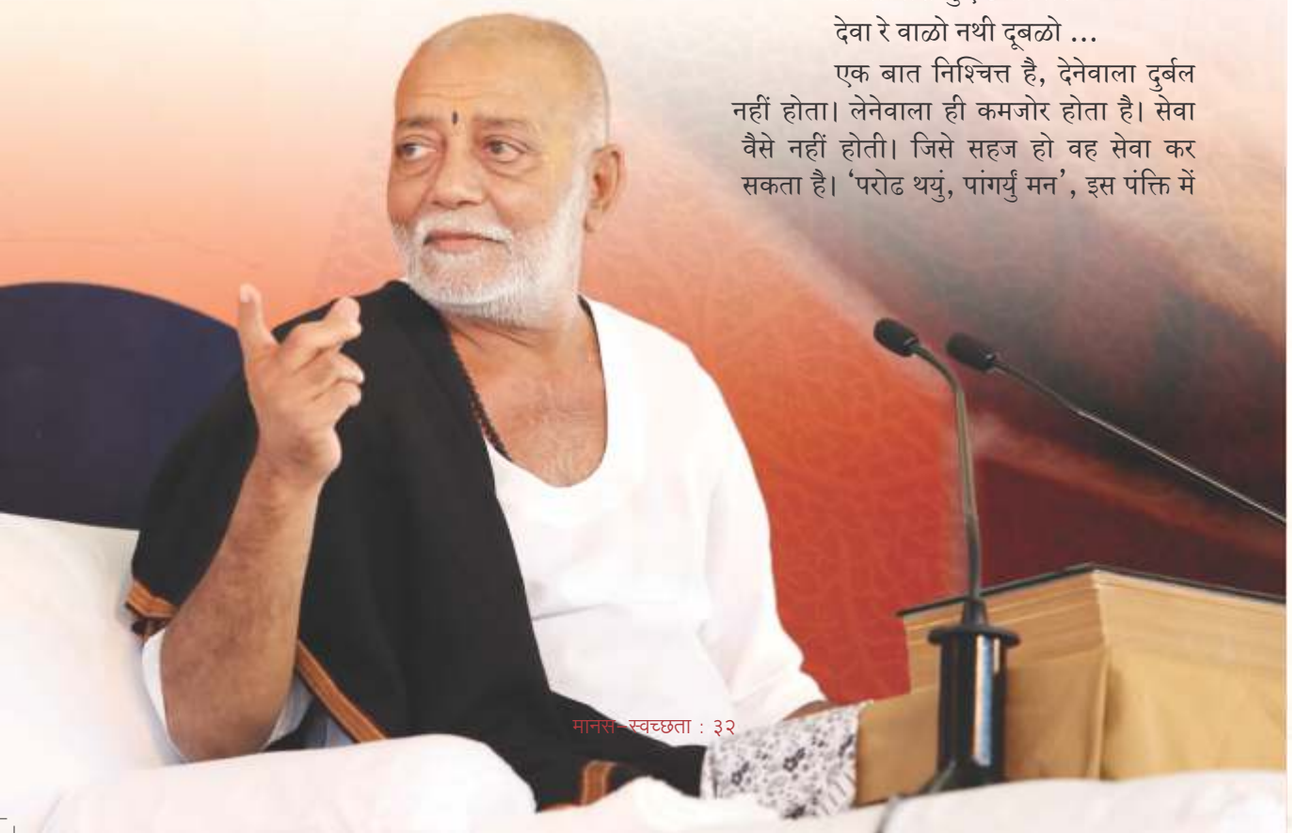

परोढ थयुं, मारुं पांगर्युं मन,
वन वांसळियुं वागी रे;
ओचिंतानी आळस मरडी,
अने झबकीने राधा जागी रे ...
घरने खूणे घंटी जागी ...

एक पंक्ति ऐसी है -

जागी सावरणी, सावरणाने ऊंघमांथी जगाड्यो रे ...

अपने यहां सुबह झाड़ू-सावरणी जल्दी जगती है। झडवो को तो जगाना पड़े, उठ! ओफिस जाना है! मेरे देश की बेटियां-बहनों झाड़ू (सावरणीयों), जरा मैली हो पर वह जहां-जहां कदम रखे, सफाई कर डाले। यह रामकृष्ण परमहंस का वक्तव्य है। प्रस्तुति मेरी है। पर मेरे ध्यान में रहे तो मैं प्रज्ञाअपराध न करूं। मैं नाम दे देता हूं। बाकी पूरा अपने नाम चढ़ादेनेवाले उदार-दिल लोग कलियुग में काफ़ी है! ठाकुर तो परमहंसी दशा में सहजरूप से बैठे हो। किसी ने पूछा तो जवाब मिला कि झाड़ू मैली हो तो भी जहां-जहां फिरे वहां सफ़ाई करे। अवधूतों ने क्या किया? अपने शरीर का ध्यान नहीं रखा पर गलियां साफ कर डाली। रोहडिया ने झाड़ू रूप में नर-नारी का दांपत्य बनाया। ब्याह किया! झाड़ू जगी तो पहला काम क्या किया?

सावरणाने ऊंघमांथी जगाड्यो रे,
चोकी, शेरी अने फोर्यु फळियुं,
गीत मंडी गई गावा रे ...
के आवी रूडी सरोवरियानी पाळे
बगलां रूडां बे बेठां रे लोल ...

ये दो बगुले माने उपनिषद के जीव-शिव की बातें। और -

बगलां तो एक दि' ऊडी जाशे आकाशे!
पण पगलां एनां पड्यां रे लोल।

यह प्रात: संध्या थी मेरे गांव की बहन-बेटियों की। पंडितलोगों बहनों को वैदिक संध्या का निषेध करे पर इस लोकगीत की संध्या का निषेध कौन करे? और वे राग-सूर और ताल में थी।

प्राचीन मूल्यों का नये अवतार द्वारा पुन: संस्थापन होना चाहिए। मैं यह नहीं कहता, सब अच्छा है। चमत्कार, जादू-टोना, मैली विद्या यह न हो। मंत्रयुक्त दाने का प्रयोग न करे पर जिनके घर दाना नहीं है उनको सहाय कीजिए। चोटीला की कथा में मैंने 'दुर्गा' के लिए कुछ ओर कहा। और साहस कर एक बात जोड़ी -

या देवी सर्वभूतेषु अहिंसा रूपेण संस्थिता।

अब अहिंसारूपी देवी की स्थापना होनी चाहिए। देवी हिंसा करे उसका एक काल था। वह कभी महिषासुर, कभी चामुंडा। क्या आपको नहीं लगता कि अब कुछ नया आना चाहिए। अमुक विद्वानों ने कहा, संस्कृत में ऐसा कुछ भी नहीं है! पुरातन बातों की भी स्वच्छता होनी चाहिए। शास्त्रों में आई ऐसी बातों का भी संशोधन होना चाहिए। सयानों को साहस कर पुन: विचार करना चाहिए।

तारी हाक सुणी कोई ना आवे तो तुं एकलो जा...

जिसके पास विद्या हो वह साहसिक होना चाहिए। कोई भी सर्जक तेजस्वी होना चाहिए। वह यशस्वी तो है ही क्योंकि परमात्मा ने उसे सर्जन की शक्ति दी है। मनस्वी भी होना चाहिए। निजता में होना चाहिए। अहंकारी नहीं होना चाहिए। पैसा, सत्ता, प्रभाव और धर्मतले दबना नहीं चाहिए। निजता में रहना चाहिए।

सरकार लाखों रूपये खर्चकर सफ़ाई अभियान चला रही है। हमें भी अपने गली-महोल्ला-आंगन-गांव साफ़ रखने चाहिए। हालांकि रूपये में भी सफ़ाई अभियान होता है। पूरी दुनिया को ईमानदारी का पाठ सिखानेवाला देश खुद कब ईमानदारी सिखेगा? कब दीक्षा लेगा कि बिना हक का कुछ भी नहीं लेना चाहिए। मैं छोटे गांव में और झोंपडे में बच्चे को पांच रूपये देने जाऊं तो कहेगा ना, बापू का नहीं ले सकते! यही मूल्य है। नगीनबापा बराबर कहते हैं कि बापू, जब तक देश में यह वस्तु है तब तक देश पर कोई खतरा नहीं है।

न बंदगी पसंद है, न गंदगी पसंद है।
दूध-सी धूली-धूली, फूल-सी खीली-खीली
एक जिंदगी पसंद है।

सर्जकों ने ऐसी जिन्दगी की बात कही है। मंथरा की

जिह्वा पर मैल था। उसकी जिह्वा ने सफ़ाई अभियान नहीं किया था। ऐसा-वैसा कर पवित्र रामराज्य को चौदह वर्ष तक स्थगित कर दिया! जीभ पर चाहे मैल रहे पर कान में तो नहीं रहना चाहिए। कैकेयी के कान में मैल था। शुरू में तो मंथरा पर गुस्सा किया कि तू घर तोड़नेवाली है! पर बाद में मैल पसंद आ गया तो अनहोनी होकर रही! कईयों को अफवा-निंदा में विशेष रस होता है! पांच मिनट भी हरिनाम ले तो बेड़ा पार हो जाय। किसी का घर उजड़ जाय ऐसी बातें न करना। हरि को भजने का यह समय है। इसके समान कोई काल नहीं है। आप विचार तो कीजिए, एक ही बात हो तो भी सभी भगवद्कथा के लिए समय निकाले, यह कितनी अच्छी नस्ल है! मुझे ऐसे समय का सदुपयोग करना अच्छा लगता है।

हम मनुष्य हैं। हमारी मर्यादा है। फिर भी जितना हो सके होश में रहकर समय का सदुपयोग करे। हम सब बच्चों के साथ बैठे हो तो 'रामायण' या सत्संग की कोई बात पूछे। मैंने न कहा हो ऐसी तात्त्विक बातें भी चलती हो; कभी हास्य-विनोद भी होता रहे। यह भी होना चाहिए। यह अवसर बहुत सुंदर है। पर कान में मैल है! नाक में मैल है! हम सुगंध को दुर्गंध मानते हैं, दुर्गंध को सुगंध मानते हैं! कौन-सा मैल है नाक का? जुकाम है! जिसे सर्दी हो उसे बास नहीं आती। शूर्पणखा की नाक में मैल था इसलिए स्वच्छता अभियान लक्ष्मण ने चलाया। क्या रघुवंशी जागृत पुरुष लक्ष्मण एक स्त्री के कान-नाक काटे? जागृत माने क्या चौबीस घंटो में कभी न सोये? प्रेक्टिकल सोचिए। हमें कोई चमत्कार खड़े नहीं करने हैं। जागना माने सावधान रहना। बाकी शरीर का अपना धर्म है। हम योगी नहीं है। नींद आने पर सो जाना चाहिए।

कईयों की आंख में मैल होता है। शूर्पणखा के नाक-कान-आंख में मैल था। अत: सुंदर रूप लेकर राम को पाने में निष्फल गई। मूल बात, अंत:करण चतुष्टय अंदर की चार इन्द्रियां है-मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार। इन चारों पर मल लगा है। ये पवित्र कैसे हो? तुलसी ने उपाय बताया -

एक कलप एहि बिधि अवतारा।
चरित पवित्र किए संसारा।।

परमात्मा का चरित्र हमारी आंतरिक सांसारिकता को मलमुक्त करती है। हृदय से कहता हूं। यह मैं उपदेश नहीं देता। ऐसे मैल-मल मोरारिबापू में भी है। हम सबमें है। हम जागृत रहे, होश में रहे तो मलमुक्त रह सके गुरुकृपा से। अंत:करण के मल कौन-से होंगे? यह कुछ नया नहीं है। एक-एक मल को बताऊंगा।

मन का मैल; किसी भी वस्तु को सोचते-सोचते एक निर्णय हो इससे पहले उसके सामने विकल्प आए यह विकल्पवृत्ति मन का मल है। झूठ ही सही एक बार मन का संकल्प कर लेना चाहिए। या तो किसी बुद्धपुरुष में पूरी आस्था हो तो उसे पूछ ले फिर उसके जवाब के सामने विकल्प खड़े न करे। कितना पवित्र मन हुआ होगा एक अपने युवा दंडी संन्यासी का जिसने ऐसा कहा कि 'अहं निर्विकल्पो'; बत्तीस वर्षों में इस आदमी ने कितना किया! कई धर्मजगत के लोगों ने वर्षों तक जीकर सब बिखेर दिया तब ऐसा आचार्य हमारे पास आया कि बत्तीस वर्षों में कितना सारा इकठ्ठा कर दिया! यहां से वहां के मठ में सब बिखर गया था! विभाजन-विभाजन, भेदों की दीवारें खड़ी की। जगद्गुरु शंकराचार्य ने चार मठ स्थापित कर सब एकत्र कर दिया। ये सब स्तोत्र है। फिर भी जिन्हें संस्कृत में रुचि है, उनकी संस्कृत में कविता तो देखिए! क्या आपको नहीं लगता बत्तीस वर्ष में इतना बड़ा काम अवतार के बगैर कोई कर ही न सके! नि:शंक अवतार है। हम तो गड्ढे को समुद्र कहते हैं! बाकी समुद्र तो यह था। एक-एक स्तोत्र लो, साहब! कैसे छंदबद्ध, कैसे राग और लयबद्ध! अकेले-अकेले गाए तो आपके पंड में देवी न आए, सामने आए! अब पंड में लाने की जरूरत नहीं है। सामने लाइए।

अहं निर्विकल्पो निराकार रूपो
विभुर्व्याप्य सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम्

कैसा छंदबद्ध है देखिए!

सदा मे समत्वं न मुक्तिर्न बन्ध:।
चिदानंदरूप: शिवोऽहं शिवोऽहम् ।।

विवेकपूर्ण रेशनालिझम सिखना हो तो इस शंकर से दीक्षा लीजिए। जो यों कहे, 'गुरुर्नैव शिष्य:', न मेरा कोई गुरु, न मेरा कोई शिष्य। आपको सब समझ में आ जाय तो

शास्त्र निरर्थक है। और आपको कुछ समझ में न आए तो भी शास्त्र निरर्थक है। यह रेशनालिझम नहीं तो ओर क्या है?

बत्तीस वर्षीय शंकर के विचार तो देखिए! मुझे कोई पूछे कि वह समचुच बत्तीस वर्ष के थे? मैं कहूं वो मुझे पता नहीं। पर मेरा शंकर बत्तीस लक्षणवाला था। 'न च लिंगं न च वयं।' मैं मुस्लिम सभा में तकरीर अंतर्गत बोलने जाऊं तब कहता हूं, करबला में बहत्तर लोग मर गए। मोरारिबापू से पूछिए तो कहे, वे बहत्तर नहीं, बेहतर थे। आप अभी भी उनका शोक रखते हैं। शंकर ने क्या 'देव्यापराध क्षमापन स्तोत्र' की रचना की! साहब, उनके अष्टक लीजिए। मैं प्रसन्न होता हूं कि नए-नए जो अनुष्ठान है वे ऐसी संस्कृत बातों को अच्छी तरह से कर सके। लोक श्लोक का और श्लोक लोक का अनादर न करे।

अपने संकल्प के सामने शिथिल मन के कारण हम विकल्पों का जो निर्माण करते हैं यह मेरी व्यासपीठ की दृष्टि से मन का मैल है। इसका एक ही उपाय है कि किसी बुद्धपुरुष के चरणों में बैठकर उसने जो जवाब दिया यह मान ले। यह मलमुक्ति है। पर हमारी दशा शीघ्र ही विकल्प खड़ा करने की है कि ऐसा किया होता तो? हम सामान्य आदमी है। कोई पूछने आए और सलाह दे तो वह विकल्प प्रस्तुत करे! फिर मैं कहूं कि तू वैसा ही कर, वही ठीक है!

शुं कीधुं अने शुं काम कीधुं, एमां बहु न पडाय,
एने भरोसे रहेवाय।

कोई भी कथा कराये तो संकल्प करवाते हैं। मैं तो कहता हूं कि प्रथम श्रोता-वक्ता का एक संकल्प कराना चाहिए कि हम आदमी है। इसमें कोई पहुंच गया और हम नहीं पहुंचे ऐसा नहीं है। भेद छोड़कर करता रहे तो बहुत कुछ निकले। फिर से एक बार कहूं। देवता और असुरों ने द्वेष और स्पर्धाभाव से मंथन किया अत: चौदह ही रत्न निकले। यदि द्वेष और स्पर्धा के बगैर किया होता तो चौदह हजार रत्न निकलते।

मैं और आप द्वेषमुक्त होकर 'सहनाववतु सहनौ भुनक्तु', इस भाव से यदि कथा का श्रवण-गायन करेंगे तो उसमें से हमें उपयोगी हो ऐसे सूत्रों के रूप में अनेक रत्न अवश्य पा सके। तो मन का मल है बारबार उठते विकल्प। आज के युवाओं का यही प्राब्लेम है! सतत विकल्प ही आते रहे! हम प्रामाणिक प्रयत्न कर जितना हो सके सुरक्षित रहे।

अब बुद्धि का मल। अपनी बुद्धि सतत व्यभिचारिणी है। वही मल है। कृष्ण कहे, बुद्धि अव्यभिचारिणी बने, भटकती न रहे। बुद्धि सतत अनेक प्रकार के भ्रम पैदा करती है। उलझनें पैदा करती है। इसलिए हमारे यहां अत्यंत बुद्धिमान आखिरी अवस्था में विक्षिप्त दिखाई देते हैं। मैंने बहुत देखे हैं। जिनकी बुद्धि का चरणस्पर्श करे परंतु अंततोगत्वा विक्षिप्त होते हैं। कल की बात करूं, केवल बुद्धि जनक के राज्य में पड़ा अकाल है। अत: जोतकर कभी भक्तिरूपी सीता को खड़ी करनी होगी। नमी लानी पड़ेगी। भटकती बुद्धि ये बुद्धि का मल है। 'मानस' में उपाय लिखा है -

जनक सुता जग जननि जानकी।
अतिशय प्रिय करुणानिधान की।।
ताके जुगपद कमल मनावउँ।
जासु कृपा निरमल मति थावउँ।।

शब्द 'निर्मल' है। बुद्धि को मलमुक्त करने की बात है। तुलसी कहते हैं, बुद्धि का मूल निकालना हो तो जगदंबा जानकी को प्रार्थना करो कि हे माँ, मेरी बुद्धि के मल से मन मुक्त कीजिए। कोई दैवीतत्त्व, कोई शक्तितत्त्व, कोई परामबातत्त्व उसके पास रखी पुकार मति को निर्मल कर सकती है। यह उपाय है, करके देखिए। फायदा हो तो ठीक है।

तीसरा है चित्त। मेरी दृष्टि से चित्त में उग्रता और व्यग्रता ही यह मल है। पतंजलि कहते हैं, चित्तवृत्ति का निरोध। 'योग: चित्तवृत्ति निरोध:।' मेरी अंत:करणीय परिस्थिति का विचार करूं तो मुझे सूझता है कि अपना चित्त उग्र हो जाता है, व्यग्र हो जाता है बात-बात में। यह चित्त का मल है। उपाय सरल है। गोपियों के लिए सरल था। हमारे लिए समस्या है। गोपियों की उग्रता और व्यग्रता का मल एक ही उपाय से गया था।

विक्रेतुकामाकिल गोपकन्या
मुरारि पादार्पित चित्तवृत्ति:।

ओशो कहते हैं, पतंजलि आंतर्विज्ञान के आचार्य है, आईन्स्टाईन है। पर वे योगी है अत: 'निरोध' शब्द इस्तेमाल करते हैं। गोपियां योग नहीं जानती। नारद आदि उन्हें योग सिखाने गए कि कृष्ण कहीं नहीं गए हैं। योग कीजिए, मन लगाइए, चित्त लगाइए। गोपियां पद कहती है -

उधो, मन नाहीं दस-बीस,
एकहु हो सो गयो श्याम संग
को आराधे ईश...

समुद्र में रूपया फेंके तो वापिस नहीं मिलेगा। गोपी ने चित्त को कृष्णचरण सिंधु में फेंक दिया। कहा, अब तू जाने, तेरी इज्जत जाने! अब तू मेरा चित्त ढूंढकर बाहर मत निकालना। नमक में नमक डाल दे। तेरे रत्नों में मेरे एक नकद सिक्के को मिला दे। फेंकने की तैयारी चाहिए। गोपी ने चित्त को फेंक दिया। धीरे-धीरे चित्त को लगाना नहीं, फेंक ही देना है। ये साहस का मार्ग है। गोपी की न रही उग्रता-व्यग्रता। मन पवित्र हुआ होगा। उद्धव जैसे बुद्धिमान ने स्तुति कर कहा होगा, इनकी चरणधूलि मस्तक पर लगाता हूं। ये गोपीजन कृष्णगीत गाते हैं तो त्रिभुवन को पवित्र करते हैं। त्रिभुवन कब पवित्र हुए होंगे? एक चैतसिक भूमिका पवित्र हुई होगी तब चित्त मलमुक्त हुआ होगा।

चौथा है अहंकार। यह भी हमारी अंदर की इन्द्रिय है। 'मानस' में इसे डमरुआ का रोग कहा है। हमने केन्सर अस्पताल के लिए कथा की। 'अहंकार अति दु:खद डमरुआ।' यह मल निकालना बहुत कठिन है। नरसिंह मेहता याद आते हैं, 'हुं करुं, हुं करुं ए ज अज्ञानता शकटनो भार ज्यम श्वान ताणे।'

अल्लाह करे, अहंकार ओमकार बन जाय। अहंकार का जो नाद है वह 'मरा-मरा' करते-करते 'राम' हो जाय; 'लैला-लैला' करते 'ला-इला', 'ला-इला' हो जाय; और आखिर में मुझे केवल-केवल गुरुकृपा का आश्रय ही उपाय लगता है।

यह गुन साधन ते नहि होई।

'रामायण' के सभी शब्दब्रह्म; क्या कहूं पर एक शब्द है 'गुरुप्रसाद।' मैं इस पर बोलूंगा। अपने बाहु में ताकत नहीं है। सब गुरु प्रसाद है। अहंकार कैसे छूटे? हम जीव है। तुलसी ने मनोवैज्ञानिक ढंग से कहा है, अहंकार जीवन का धर्म है। ज्यों देह के कुछेक धर्म नहीं छूटते। हम चाहे कितने बड़े हो जाय। बातें होती है; देह धर्म लागू होते ही है। पूरे शरीर के साथ मन की छ-छ: ऊर्मियां लागू है। ये हमें बिना पकड़े नहीं रह सकती।

शरीर, देह और प्राण इसमें दो-दो ऊर्मियां हमारे साथ चिपकी है। प्राण की ऊर्मि है-भूख और प्यास। जिसमें प्राण है उसे भूख-प्यास लगती ही है। मन की दो ऊर्मियां है-शोक और मोह। मन को शोक-मोह होता ही है। देह की सुख और दु:ख दो ऊर्मियां है। धूप लगे तो पसीना निकले ही। ठंडी-सर्दी हो ही। क्योंकि ऊर्मियां है। ऋषियों का कितना परफेक्ट विज्ञान है! ऋषि कथित विज्ञान है वह सिर्फ़ ईक्कीसवीं सदी तक ही नहीं, आनेवाली अनेक सदीयों तक प्रासंगिक रहेगा। ऐसे प्रोफेसर तैयार करने चाहिए जो इस विज्ञान को समझाये। जिसकी कोई डेडलाईन नहीं है।

प्राण है तो भूख-प्यास लगेगी ही। मेरी खुराक कम ही है। डोक्टर कहे, बापू, वैसे के वैसे लगते हैं! मैं कहूं, आप अलग लगते हैं! गरीबों का शोषण हो वहां डोक्टर अलग ही लगे न! तू इसमें अपना कुछ डाल! मैंने सावरकुंडला में बोरीसागर बापा के फाउन्डेशन के साथ जुड़ी अस्पताल के लिए कथा दी है। वे कहे, बापू, एक ऐसी अस्पताल बनानी है जो आपके विचारों को सन्मान दे। बिलकुल नि:शुल्क। छोटे से छोटे रोग से महारोग तक के सभी इलाज नि:शुल्क हो। जैसे अहमदाबाद का रीक्षाचालक उदय कहे, जिसको जहां जाना हो मैं नि:शुल्क पहुंचा दूंगा। फिर चाहे वह कुछ भी डाले। मैं बिना पैसे के उतार दूंगा। उदय कल आरती में आया था। मैं आज उसे तीसरी बार याद करता हूं। आप एक बार ऐसा साहस करे तो लोग बिना दिए नहीं जाते। मैंने अपनेआप कथा दी है। मैं और क्या दूं? आप विचार तो कीजिए! आम आदमी इलाज नहीं करा सकता! मैं गांव मैं बैठा हूं। मुझे पता है। कोई उपाय नहीं। उनके बच्चों को कौन ठीक करता होगा? मेरा हनुमान ठीक करता होगा।

लाय सजीवन लखन जियाये।
श्री रघुवीर हरषि उर लाये।।

भगवान ने हनुमान को गले लगाया। पर ऐसा-ऐसा जब किया तब कसकर जो आलिंगन दिया वह इस चौपाई में दिया है। क्योंकि किसी को जिलाया है! ऐसे कितने ही लक्ष्मणों को जीवंत करने की जरूरत है। सामर्थ्य मिले और उसका उपयोग न करे, अवसर चुक जाय और खुद ही ऐसे रोगी हो जाय, जो लाईलाज हो जाय! इससे पहले हम वक्त पे जग जाय।

तो बाप, किसी की शरणागति से मलमुक्ति हो जाय। प्रामाणिकता से हम से बड़े हैं उसकी ओर देख लेना। इससे अपना अहंकार पीघलने लगता है। मैं थोड़ी व्यावहारिक दृष्टि से कहूं तो शायद स्वयं में कुछ ऐसा हो अहंकार करने जैसा तो थोड़ा करे। मनुष्य है; पर कई तो कुछ भी नहीं होते! हम तो एक पंख लगाकर मीर बन बैठे है! शिव की शरण जाने से अहंकार जायेगा। किसी महा अहंकार में यह अहंकार विलीन कर दे। वह शिव है अस्तित्व का अहंकार; जो विश्व का अंत:करण है। तुलसी कहते हैं -

अहंकार सिव बुद्धि अज।

वैश्विक अंत:करण का अहंकार शिव है। बुद्धि ब्रह्मा है। मन चन्द्रमाँ है। चित्त विष्णु है। धीरे-धीरे प्रयत्न करते रहे तो मल से मुक्त हो सके। रामकृष्ण ऐसा कहते थे, आप रात को पोस्ट कार्ड लिखने बैठिए; आधा लिखे और नींद आ जाय तो सुबह उठकर फिर पहले से नहीं लिखना पड़ता। जहां से छूटा हो वहां से लिखना शुरू करते हैं। यों अभ्यास करते-करते प्रारब्ध पूरा हो जाय तो दूसरे जन्म में पहले से नहीं लिखना पड़ेगा। जहां से अधूरा था वहीं से लिखना शुरू करना होता है।

'गीता' में परमात्मा वचन देते हैं कि उन्हें सीधे ऐसे कुल में जन्म दे कि जहां से साधना अधूरी रही थी वहीं से साधना आगे बढ़े। हम प्रयत्न करते रहे। बी.ए. होने के लिए बरसों लगे यों जीवन की अमुक अवस्था बनाने के लिए थोड़ा समय तो लगता है। बाह्य-आंतर् इन्द्रियों की मल से मुक्ति हेतु उपाय हम सोच रहे हैं।

थोड़ा कथा का क्रम। कल रामजी प्राकट्य का उत्सव मनाया। कैकेयी-सुमित्रा ने बच्चों को जन्म दिया। शिवजी का रामदर्शन अयोध्या में है। ज्योतिष विद्या द्वारा शिवजी ने रामदर्शन किए। अपनी विद्या द्वारा रामदर्शन हो तभी विद्या की सार्थकता है। फिर नामकरण संस्कार हुआ। रामजी विद्या प्राप्त करने गए। 'मानस' ने शिक्षण अभियान चलाया है। समग्र विद्या प्राप्त की। वशिष्ठ उनके शास्त्र विद्यागुरु है। विश्वामित्र शस्त्र विद्यागुरु है। शतानंद विवाह मार्गदर्शक है। वाल्मीकि स्थानदर्शक गुरु है। भरद्वाजजी उनके मार्गदर्शक गुरु है। रामजी ने बताया कि जहां से शुभ मिले ले लीजिए।

रामजी ने विद्या आचरण में ऊतारी। विश्वामित्र का आगमन हुआ। राम-लक्ष्मण की अनुष्ठान के लिए मांग रखी। देश का ऋषि संपत्ति कहां मांगता है? संतति मांगता है। ताडका को निर्वाण मिला। ताडका क्रोध का प्रतीक है। यज्ञ संपन्न हुआ। 'गीताजी' में कहा है, आप जितने आगे बढ़िए, लेकिन यज्ञ, दान, तप न छोड़े। ये बुद्धिमानों की बुद्धि को धीरे-धीरे विशुद्ध किया करे। सुबाहु को निर्वाण दिया। मारीच को सागर पार फेंका है। मिथिला यात्रा की। गौतम की पत्नी अहिल्या का उद्धार किया। मन का क्रोध ताडका है। बुद्धि की जड़ता अहिल्या है। उसमें चैतन्य का प्राकट्य हुआ राम के द्वारा। रजोगुण रज से ही जाय। रामजी ने गंगास्नान किया। मिथिला प्रवेश किया। 'सुंदरसदन' में ठहराए गए। रामजी ने नगरदर्शन किया। दूसरे दिन पुष्पवाटिका में राम-सीता मिलन हुआ। सुंदर स्वतंत्र प्रसंग है। आध्यात्मिक प्रसंग है। जानकी ने पार्वती की स्तुति की। आशिष प्राप्ति। धनुष-यज्ञ हुआ। बलवान का वरण हुआ, शीलवान का नहीं। अंत में गुरुप्रसाद से धनुषभंग हुआ।

मंथरा की जिह्वा पर मैल था। उसकी जीभ ने सफ़ाई अभियान शुरू नहीं किया था! पवित्र रामराज्य आनेवाला था उसे चौदह साल तक स्थगित कर दिया! जीभ में मैल रहे पर कान में तो न रहने दे! कैकेयी के कान में मैल था। शुरू में तो मंथरा पर गुस्सा किया कि तू घर तोड़नेवाली है! फिर कान का मैल थोड़ा पसंद होगा इसलिए घटना बनी रही! कई लोगों को इधर की उधर और उधर की इधर करने में बहुत रस होता है! ऐसे समय में से पांच मिनट भी हरिनाम के लिए निकाले तो बेडा पार हो जाय।

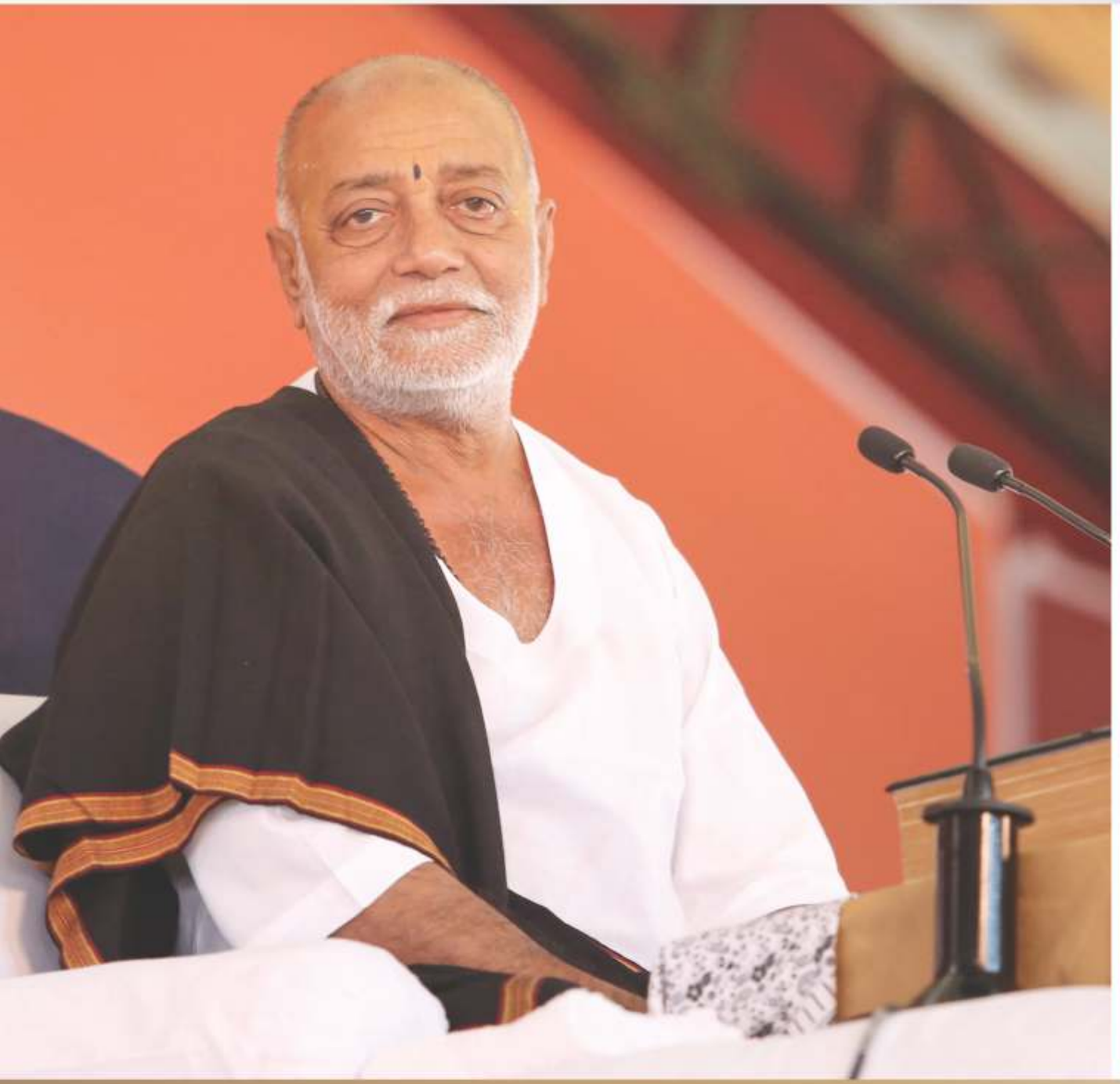

कथा–दर्शन

- राम मर्यादापुरुषोत्तम की अपेक्षा विवेकपुरुषोत्तम अधिक है।
- रामकथा दु:ख दूर करे पर हनुमानजी जैसे संत की कथा वहम का नाश करे।
- बाहर का मैल तो साबुन से धोया जायगा, पर अंदर का मल तो साधु ही धोयेगा।
- साबुन कपड़े को स्वच्छ करता है, साधु कलेजे को स्वच्छ करे, पवित्र करे।
- सावधान आदमियों साधु को साधन न बनाये। साधु तो समाज का साध्य है।
- साधु तो एक अनंत यात्रा, अनंत प्रवाह का नाम है।
- 'गुरु' ये आध्यात्मिक जगत का शब्द है। 'सद्गुरु' ये मेरी दृष्टि से परम अवस्था का नाम है।
- या तो गुरु को छोड़ दो या फिर सब गुरु पर छोड़ दो।
- अध्यात्मजगत में हमारे प्रयास से कुछ भी नहीं होता। उसके प्रसाद से ही होता है।
- जहां श्रद्धा का जन्म हो वहां बगैर आमंत्रण साधु–संत पहुंच जाते हैं।
- हमारे जीवन में समस्याएं आती हैं इससे पहले ही समाधान आ चुका होता है।
- भीतरी आवाज़ सच्ची हो तो कोई बारहखडी से बाहर की शब्दावलि सुनाई दे।
- रूप मैला भी हो सकता है पर स्वरूप कभी अशुद्ध नहीं हो सकता।
- हम अपने अंदर से नरवा मतलब पवित्र और बाहर से गरवा मतलब स्वच्छ होने चाहिए।
- वैराग्य मानी त्याग नहीं, बल्कि शुभ का स्वीकार।
- धर्म को विवेकपूर्वक निभाना और कर्म करुणापूर्वक करना।
- नाम ये कलियुग का बहुत बड़ा साधनफल है।
- हर एक व्यक्ति को विचार स्वातंत्र्य होना चाहिए।
- झूठे चमत्कार का प्रदर्शन अपराध है।
- यह जगत प्रसन्नतापूर्वक विवेक से जीने जैसा है।
- घर में हररोज पांच–दस मिनट प्रसन्नतापर्व मनाओ।

स्वच्छता अभियान वेदकाल से चल रहा वैश्विक अभियान है

कथा के छठ्ठे दिन आरंभ में, अपने राज्य के विद्वान, विनीत और विवेकशील महामहिम राज्यपाल कोहली साहब का मेरी व्यासपीठ स्वागत करती है। आपको मेरे नमन। अहमदाबाद नगरपालिका के मेयरसाहब गौतमभाई, आपका भी स्वागत है। हमारे समाज के विविध विभागों के, विधविध क्षेत्र के आदरणीय महानुभाव, आप सब मेरे श्रावक भाईयों-बहनों सबको व्यासपीठ से मेरे प्रणाम। 'मानस-स्वच्छता' नौ दिवसीय रामकथा का केन्द्रीय विचार है। 'मानस' के आधार पर वेदकाल से चलता यह वैश्विक स्वच्छता अभियान है। मैं बहुत सोच-समझकर कहता हूं। वैदिक ऋषियों ने क्या किया? उनके अंत:करण में ऋचाएं ऊतरी है। ऋचाओं ने ऊतरने के लिए स्वच्छ अंत:करण को पसंद किया। अंत:करण तो हम सबके पास है। एक व्यक्ति का अंत:करण और एक विराट विश्व का अंत:करण, जिसके लिए 'रामचरित मानस' कहता है, विश्व के अंत:करण का मन चन्द्र माँ है। विश्व के अंत:करण की बुद्धि ब्रह्मा है। विश्व के अंत:करण का अहंकार शिव है। और विश्व के अहंकार का चित्त विष्णु है।

ऋषिमुनियों के विशुद्ध स्वच्छ अंत:करण में ऋचाएं ऊतरी है। उन ऋचाओं ने वेदकाल से वैश्विक सफ़ाई अभियान चलाया है। वेदों ने खेद मिटाया। यह वेद का स्वच्छता अभियान है जो खेद को मिटाए। वेदों का स्वच्छता अभियान माने मानव-मानव के बीच भेद मिटाना। अपने चरित्र के छेद को दूर करे। हमें परिश्रम कर प्रस्वेद बहाने का बोध दे। आदमी श्रम करे। मानव भेदमुक्त होना चाहिए। छेद दूर हो। यह वैदिक स्वच्छता अभियान है मेरी व्यासपीठ की दृष्टि से। युगों की अपनी पावन-प्राचीन परंपरा में भी गंगा की तरह यह स्वच्छता अभियान ऊतरा है। यह कोई नई बात नहीं है। बापू ने यह विचार दिया। उनके नाम के साथ जुड़ा अपने देश में उठा यह अभियान है। मेरी व्यासपीठ भी उसमें एक अर्घ्य देना चाहती है। इसलिए 'रामचरित मानस' का 'स्वच्छता' शब्द लेकर बाह्य स्वच्छता और भीतरी शुचिता-पवित्रता की बात करनी है। अभी-अभी अपने आदरणीय महामहिम ने भी कहा कि स्वच्छता जरूरी है। पर मानसिक स्वच्छता अति जरूरी है। मानसिक स्वच्छता का मैल बताया है स्वार्थ। यह स्वार्थ मैल है। स्वार्थ में बैर है, ज़हर है।

रामकथा के प्रसंगों से, पात्रों से आप परिचित है। यह वैदिक, वैश्विक स्वच्छता अभियान। और वेदों का यह देश मंदिरों को कितना अस्वच्छ रखता है! चारों ओर गंदगी! धर्मस्थान भी कितने अस्वच्छ! अब सुधार हो रहे हैं। आपने 'संवेदना' शब्द का प्रयोग किया। नरसिंह मेहता ने पराई पीडा को आत्मसात् करने की बात की। बापू ने यह सूत्र पकड़ा। महात्मा गांधी ने कहा, जिस देश के पास वेद हो लेकिन संवेदना न हो तो? महामहिम आप जानते ही होंगे। देश के प्रथम राष्ट्रपति महामहिम राजेन्द्र प्रसादजी ने राष्ट्रपति भवन में सत्संग किया। धर्म के साथ परहेज क्यों? विशेषणमुक्त धर्म को यदि कोई भी संस्था स्वीकृत न कर सके तो वह रुग्ण है।

मेरी दृष्टि से धर्म माने सत्य, प्रेम, करुणा है। इनको स्वीकार न करनेवाले पूर्वग्रंथि से पीड़ित है। रूमाल, सूतली, धागा की और कठिनतम गांठ छूट जाय। जो पंडितों नहीं छोड़ सके उसको मेरे गांव के लोगों ने छोड़ दी है। किसानों ने छोड़ दी है। पर सचमुच गांठ नहीं पर आभास है, उस गांठ को कैसे छोड़े? बिलकुल झूठी ग्रंथि आभास है। पर नहीं छूटती! कुछेक समझते ही नहीं! उन्हें गांठों के बिना चलता ही नहीं! ऐसी आभासी गांठों को शायद राजपीठ भी न छोड़ सके सिवा कि व्यासपीठ। देश, पृथ्वी, मेरा सुंदर अस्तित्व बाह्य स्वच्छ रहे और अंदर से शुचिता बरकरार रहे। आभासी गांठ छूटे। मैं अपने राष्ट्र को निमंत्रत करता हूं, आप एक बार कथा में देखिए, कहीं कोई शोरगुल नहीं है। आप कितना शोरगुल मचाते हैं! मोरारिबापू को एक बार साधु के रूप में छोड़ दीजिए। भारत के नागरिक के रूप में यह मेरी पीड़ा है। साहब, आपके (राज्यपाल) द्वारा यह पीड़ा पहुंचाना चाहता हूं। इतना शोरगुल! यहां-वहां सभी जगह हमें यही देखना है! नई-नई गांठे पकती है! मेरा देश वैश्विक स्वच्छता अभियान में यों कहे, 'संगच्छध्वं संवदध्वं।' 'रामचरित मानस'कार प्रत्येक क्षेत्र का स्पर्श करता है। कभी आकर कथा का माहौल तो देखिए कि मैं दो मिनट मौन हो जाऊं तो लगे कि यहां कोई बैठा ही नहीं! यह शांति किसकी है? परस्पर प्रेम की। परस्पर संवेदनशील चित्त की। यह कोई उधार की भीड़ नहीं है। फिर भी क्यों पचास हजार की भीड में शांति से बातें होती है? विचारभेद भले हो, पांच सौ आदमी एक सरीखे कैसे बैठ सके? केवल मैं अपनी पीड़ा व्यक्त करता हूं। क्योंकि मुझे मेरे देश की पीड़ा का पता है। 'पीड पराई जाणे' यही धर्म है।

महामहिम राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद बाबू ने सत्संग का आयोजन किया। इसमें महापुरुष स्वामी शरणानंदजी आमंत्रित थे। राष्ट्रपति के आमंत्रण पर अनेक विद्वान, गुरुजन उपस्थित होते हैं। स्वामीजी को आदर मिलता है। स्वयं राष्ट्रपति जिज्ञासा करते हैं कि स्वामीजी, हम सबकी जिज्ञासा है। हमें मंज़िल तक पहुंचना है। राष्ट्र को वहां ले जाना है। पांव है, मार्ग है। फिर भी हम यह कार्य क्यों नहीं कर सकते? स्वामीजी का जवाब था, संवेदना का अभाव। यह एक साधु का जवाब था।

वेदकाल से स्वच्छता अभियान चल रहा है। सतयुग में ध्यान द्वारा स्वच्छता अभियान चला। ध्यान धरने से अंदर की चित्तशुद्धि होने से बाह्य स्वच्छता करने

से प्रेरित होंगे। ध्यान धरने स्वच्छ आसन पर बैठे। साफ जगह हो, कंकर रहित हो। स्वच्छ वस्त्र पर ऊनी वस्त्र डालकर बैठे। शारीरिक स्वस्थता से बैठे। वही भी स्वच्छता अभियान है। उपकरण था, साधन था। फिर त्रेतायुग में स्वच्छता अभियान आगे बढ़ा। साहब, उसमें तो बहुत बड़ा काम हुआ। 'रामायण' में से एक ही व्यक्ति को सामने रखूं तो वह है शबरी। उन्होंने स्वच्छता अभियान चलाया। कोई आए न आए पर गली आंगन स्वच्छ रखे। मेरे पास वेद, शास्त्र नहीं है। मेरे पास कर्मकांड नहीं है; विधिविधान नहीं है। मैं भिलनी हूं। अपनी गली-आंगन साफ़ रखूं। पता नहीं, कब राम आ जाये! कृष्ण दवे कहते हैं -

ए आवशे, ए आवशे, ए आवशे.
तुं प्रतीक्षामां अगर शबरीपणुं जो लावशे.

शबरी का कितना बड़ा स्वच्छता अभियान है! घर में नौकर-चाकर पोंछा करे और हम गलती निकाले! एक बार पांच मिनट आप भी पोंछा कीजिए! ठीक तरह से न हो तो नौकर को भूल निकालने दीजिए! उस समय आपकी संवेदना जागृत हो तो आपके घर में धर्म बैठा है। सोचिए। धर्म को पोथी में ही रखेंगे? धर्म पीढ़ी तक जाना चाहिए। धर्म को हमने कितनी संकीर्ण फ्रेम में कैद कर दिया है! धर्म का नाम ले तो कितनों के नाक सिकुड जाय! उस समय स्वच्छता के लिए लक्ष्मण की जरूरत है। लक्ष्मण जैसे जागृत पुरुष की जरूरत है। कोई जागृत बुद्धपुरुष की जरूरत है कि देश-कालानुसार समाज में लक्ष्मण रेखाएं खींच सके।

जागृत लक्ष्मण माने क्या? जो समयानुकूल निर्णय ले। उन्हें जानकी को बंधनग्रस्त नहीं करनी थी। लक्ष्मण किंकर है, सेवक है। जगदंबा जानकी पराम्बा है। 'उद्भवस्थिति संहारकारिणी कलेशहारिणी' वही पराम्बा है। उसके आगे कोई रेखा खींच दे और क्या वे बंधन में आ जाए? यह तो परम स्वतंत्र पराम्बा है। परंतु लक्ष्मणजी ने, जागृत मानव ने कहा, रामजी तो एक निश्चित की गई रघुकुल की रीति का पालन करते हैं। पर लक्ष्मण एक ऐसे रघुवंशी है कि जिन्होंने वक्त दर वक्त जगत की सीता का अपहरण न हो जाय इसका ध्यान रखा है। कोई दसमुखी आसुरी वृत्तियां, आसुरी अपहरण करती क्रियाएं अपनी शांति को चुरा न ले इसीलिए लक्ष्मण ने नई-नई लक्ष्मण रेखा खींची। बाप! वेदों को याद कीजिए। हम एक साथ बोले। हम संवाद रचे। शबरी ने यह काम किया। और कल तक अपने गुजरात में गाया जाता है। अपने घर स्वच्छता अभियान ही है। हमने क्या किया? यही अभियान किया है। अपने गीत में भी यही अभियान है -

शेरी वळावी सज करुं ने तमे आवो रे...

प्रथम तो गली स्वच्छ करने की बात की है। क्या हम इतना भी नहीं कर सकते? क्या हम कचरा एक ही जगह नहीं फ़ेंक सकते? तो काम कितना सरल हो जाय! यों निकलता हूं तब कहता हूं कि अहमदाबाद के रोड सभी स्वच्छ लगते हैं। सभी जगह रात को सफ़ाई होती है। यह तंत्र द्वारा, कोर्पोरेशन द्वारा व्यवस्था है। सभी का स्वागत है। क्या हम कचरा कम नहीं कर सकते? हम जहां-तहां कचरा न डाले। हम बाह्य और अंदर की गली साफ़ रख उसे आमंत्रण दे कि तू आ।

'फूल' का सगोत्री शब्द 'सुमन' है। 'रामायण' में लिखा है इसीलिए कहता हूं। सबके मूल में 'रामायण' है। घूमघूम कर मुझे तो वहीं जाना पड़े कि आधार कहां है? पूछना यहां पड़े। तुलसी किस ढंग से स्वच्छता अभियान करते हैं? मैं पुनः कहूं, तुलसी ने झाडू नहीं ली। स्वच्छता अभियान के लिए चौपाई ली है -

हियँ हरषहिं बरषहिं सुमन सुमुखि सुलोचनि बृंद।
जाहिं जहाँ जहँ बंधु दोउ तहँ तहँ परमानंद।।

राम और लक्ष्मण जब जनकपुर विश्वामित्र के साथ आए हैं। संध्याकाल विश्वामित्र की आज्ञा लेकर पहलीबार मिथिलादर्शन करने निकले तब छत पर मिथिला महिला क्या कर रही थी? गली में फूल सजाते हैं। पर कौन से फूल? राम तो अचानक निकले हैं। ये कोई पूर्व आयोजित प्रोग्राम नहीं था। तो ऐसे देख रहे थे। दो राजकुमार आए। हम यों बातें करें ऐसा अनुभव किया। बड़े आदमियों को छोटे से बात करनी चाहिए। बात करनी चाहिए। छोटे से छोटा आदमी प्रोग्राम लेने जाय तो जवाब मिलना चाहिए कि मुझे अनुकूलता होगी तो आऊंगा। यह जवाब भी बड़ी वस्तु है। ऐसा जवाब मिले। मुझे अन्य चीजों से कोई संबंध नहीं है। मैं सबसे एक प्रमाणिक डिस्टन्स रखकर बैठा हूं। जिसे अपना जीवन दिव्य बनाना हो उसे सबसे प्रामाणिक डिस्टन्स रखना चाहिए। तो चौपाई द्वारा स्वच्छता अभियान करते तुलसी कहते हैं कि वे महिलाएं राम के मार्ग में फूल फेंकती हैं। तात्कालिक फूल कहां से? सहसा राम निकले हैं। चार-पांच लड़के खड़े थे राम के निवासस्थान के पास। अमुक लोग अंदर नहीं जा सकते। अंदर है उन्हें बाहर आना पड़ेगा। विनोबाजी कहते थे, हिमालय जैसी प्रतिभा राष्ट्र का गौरव है। पर सामान्य आदमी की गरदन उपर देखते-देखते अकड़ गई! कैसे मिले? और इसलिए गंगा वहां से निकली, उतरकर नीचे आई। ब्रह्मलोक छोड़ना किसे पसंद आये? कवि काग कहते हैं -

'काग' ब्रह्मलोक छोड्यो पतितोने काजे;
हेमाळेथी देयुं पडती मेली रे...
झीलनारा कोई नो मळ्या रे...

विचाररूपी गंगा को ग्रहण करनेवाला कोई न मिला। यह प्रेरणा की गंगा को नीचे जाना चाहिए। इसके लिए तो सत्संग द्वारा भीतरी शिवत्व प्रकट करना होगा। ताकि शिव उसे लपक ले। गांधी कहां तक गए! अच्छी बात है कि महामहिम साहब नरसिंह मेहता को याद करते थे। कल हारमाला का दिन है। नरसिंह को तो याद करना ही चाहिए। वे आखिरी आदमी तक गए। राम तो भगवान है। उन्होंने विश्वामित्र से कहा, लक्ष्मण नगर देखने की इच्छा प्रकट करते हैं। आप कहे तो दिखा लाऊं। मूल तो राम की इच्छा थी। जो हमें नहीं मिलते उन्हें बाहर जाकर हम मिल आए। जब राम मिथिला के मार्ग पर निकले तब गलियां साफ करने का स्वच्छ अभियान चल रहा है। इसमें फूल कैसे उडाए? फूल ही होंगे पर शब्द है 'सुमन।' सुमन माने मलमुक्त मन; छलमुक्त मन; ग्लानिमुक्त मन। त्रेतायुग में शबरी ने स्वच्छता अभियान चलाया। रोज गली साफ़ करे इसके साथ भीतरी हिस्से भी साफ़ हो गए। एक-एक नस में शुद्धि छा गई। रोम-रोम का शुद्धिकरण हो गया। त्रेता में जाऊं तो शबरी मुझे आचार्य लगे स्वच्छता अभियान की। कल मैं कहता था कि मंथरा बहुत बड़ी दासी बुद्धिशाली थी पर जीभ स्वच्छ नहीं थी। कैकेयी के कान स्वच्छ नहीं थे। उसमें ऐसा ज़हर उडेला कि चौबीस घंटे में रामराज्य की अपेक्षा राम बनवास हो गया! ऐसी स्थिति थी। त्रेतायुग में स्वच्छता अभियान शबरी ने तो द्वापर युग में पूर्णावतार कृष्ण ने चलाया।

युवा भाईयों-बहनों, वक्त मिलने पर 'महाभारत' देखिए। कृष्ण ये सफाई प्रथा का प्रभुखपद है। जिनकी जूठन ब्रह्मा पसंद करे; विष्णु को भी पसंद आए। ऐसा कृष्ण 'महाभारत' के यज्ञ में स्वच्छता अभियान का नायक बनता है। हम खाने के बाद थाली यहां से वहां नहीं रखते! जब कृष्ण पत्तलें उठाते हैं। यह द्वापर युग का स्वच्छता अभियान है। कितना बड़ा स्वच्छता अभियान! बेतरतीब उगा था उसकी सफाई कर डाली। तो बाप, मेरा गोविंद उस समय का आचार्य था।

कलियुग आया। दक्षिण में चोखामेला ने स्वच्छता अभियान शुरू किया। काशी में कबीर ने किया।

पंडितों के दिमाग साफ़ कर डाले। तुलसी ने कितना बड़ा स्वच्छता अभियान किया! नरसिंह मेहता ने किया। गांधीजी ने किया। हम भी उसी मार्ग पर जा रहे हैं, इसीलिए यह कथा है। मैंने तो अपनी परंपरा का उल्लेख किया लेकिन सभी धर्मों में ऐसा हुआ है। मल लगता ही है। वक्त दर वक्त का योग है। कथा में किसी न किसी विचार का योग जुड़ जाता है। अनपेक्षित योग बन जाता है। ये पूरी कथा स्वच्छता अभियान के लिए है। मुझे किसीने पूछा, क्या इस बात की दिल्ही तक खबर पहुंचेगी? मैं खबर देना नहीं चाहता हूं। आप तक पहुंचे इतना बस है! सबको पता है। हम अपना काम करते हैं। बाप, हमें अपनी जगह पर, औकात में रहकर करना है। तुलसी ने चौपाई द्वारा, लोककवियों ने लोकवाणी द्वारा स्वच्छता अभियान किया। शायरों ने गज़ल द्वारा किया। आप अच्छा गाए तो आपने बेसूरे को सूर में डालने का स्वच्छता अभियान किया।

'मानस-स्वच्छता' वेदकाल से चलता स्वच्छता अभियान; शरीरशुद्धि का अभियान। अपना लोकगीत भी वही काम करता है, दोहा भी वही काम करता है।

माया अने ममता तणा जेने रुदिये न लाग्या रोग,
ए संत समरवा जोग दि' ऊग्यामां कागडा।

दो ही वस्तु की सफ़ाई। माया माने भेद। माया माने प्रपंच। आभास खड़े करने। माया माने झूठे प्रभाव। जिसने दिल से भ्रान्ति निकाल दी है; जिसे ये रोग नहीं है उसे सुबह याद करे। सुबह-सुबह कोई अच्छा संगीत, संतवाणी, लोकगीत, गज़ल, सूर सहसा सुनाई दे तो समझना आपने गंगास्नान किया है। यह मैं श्रद्धापूर्वक कहता हूं। अपने कान में केवल ही कुहूक शहद घोल दे। कुहू सुनी यह गंगास्नान और सुबह में शुद्ध दिल से लगती अजान; कोई मंत्र सुनने को मिले वह गंगास्नान; सुबह गाय का रंभाना सुनने को मिले तो वह गंगास्नान है। एक निर्दोष बालक का यदि आप स्पर्श करे तो वह गंगास्नान है। यह अखंड चलता स्वच्छता अभियान है। प्रत्येक क्षेत्र ने इसमें योगदान दिया है। अपने-अपने ढंग से दिया है। मुझे आनंद है।

लीला सगुन जो कहहिं बखानी।
सोइ स्वच्छता करइ मल हानी।।

शास्त्र कहते हैं। विज्ञान पुष्टि करता है कि यह जगत पंचभौतिक है। हमारा पिंड भी पंचभूत से समन्वित है। पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश। अपना शरीर भी पंचभौतिक है। अपने शरीर में पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाशतत्त्व है। मात्राभेद होता है। पांच का होना अत्यंत जरूरी है। किशन बिहारी 'नूर' साहब का शे'र है -

आग है पानी है मिट्टी है हवा है मुझमें।
तब तो मानना पड़ेगा कि खुदा है मुझमें।

पांचों तत्त्व सफ़ाई का काम करते हैं। पवन का काम स्वच्छता करना है। गीले कपड़ें सूखाता है, कपड़ों पर पड़ी धूल को साफ़ कर दे। अग्नि का काम है कचरा जला डाले। जलतत्त्व स्वच्छता अभियान करता है। मैल को धो डालता है। उपर का पानी मैला पर निर्मल झरने बहते हैं तो पृथ्वी का स्वच्छता अभियान है। पृथ्वीतत्त्व भी वही काम करता है। आकाशतत्त्व निर्लेप है, असंग है। गगनतत्त्व तो स्वभावगत स्वच्छता से भरा हुआ तत्त्व है। मेरी दृष्टि से पांचों तत्त्व स्वच्छता अभियान से जुड़े हैं। हमने क्या किया? पांचों को अस्वच्छ कर डाला! आज की समस्या ग्लोबल परिस्थिति उत्पन्न हुई है। हमने जो अस्वच्छता की है उसकी है। जल को प्रदूषित किया। लोगों ने हवा और धूएं के अलग-अलग प्रयोग किए! नगर में से १५-२० किमी दूर जाय तो स्वच्छ हवा का अनुभव मिले। सप्ताह में एक बार तो बाहर निकलिए! गांवों में

जाइए। बिना काम जाइए। भोजन साथ में रखिए। गांठिया भी। गर्मी में छत पर सोये तो हृदय का विस्तार होगा। स्लेब के भीतर सोते-सोते ये हृदय भी दब गए हैं! गांव का किसान आकाश के नीचे सोता है इससे उदार है।

हम पांचों तत्त्व प्रदूषित हैं। पूरी दुनिया हमारे लिए स्वच्छता अभियान चलाती है। इसके लिए परिषद भी हुई। फ्रान्स में कितने सारे इकठ्ठे हुए थे! समूह बड़ा था। यह सफ़ाई कर डालेंगे। यह हमें शुद्ध करे और इन्हें हम अशुद्ध करे! आकाश में छिद्र पड़ते हैं, ऐसे प्रश्न खड़े हैं! इतने सारे केमिकल डालकर पृथ्वी प्रदूषित कर डाली! सजीव खेती कहां है? शुद्ध खाद कहां? पृथ्वी का कितना खनन किया! प्रदूषण फैलाया। मूल मंत्र याद रखिए, बाह्य मैल जाय, अंदर का मल निकल जाय, ऐसी बातों से यह कथा शुरू की है। कल जल्दी-जल्दी में धनुष तोड़ा, क्योंकि हमें तो बातों में ही तोड़ना था! हमारी तो हैसियत नहीं कि अहंकार तोड़े। तुलसीदासजी ने कहा, शंकर का धनुष अहंकार था। तोड़े उसे जानकीरूपी वरमाला मिले। यह पूरी आध्यात्मिक घटना थी। 'रामचरित मानस' में इस तरह धनुष टूटा। जानकीजी ने वरमाला पहनाई। तुलसी को लगा इस जोड़ी को क्या उपमा दूं? कविता है -

सोहति सीय राम कै जोरी।

सौंदर्य और शृंगार एकत्र हुए। राम शोभाधाम है; सौन्दर्य है। जानकी उनका शृंगार है। राम ज्ञान है। भक्ति ज्ञान का शृंगार है। इसके बिना जोड़ी नहीं जमती। आनंद में मिथिला डूबी थी, इसी बीच विघ्न आया। खलबली मची राजा-महाराजाओं में। जनकजी और सब खड़े हैं इतने में परशुरामजी आते हैं। शंकर के धनुषभंग की आवाज़ सुनकर आए। वे एक अवतार हैं। हमारे यहां अवतार के अनेक प्रकार है। कई आवेश और कला के अवतार; कई पूर्ण अवतार है। भगवान राम बारह कला के अवतार है। उनकी कला कौन नाप सके?

ए जी एमां पहोंचे नहीं रे विचार,
एवी एनी कळा अपरंपार.

कभी अपने धर्म की, अपने ग्रूप की, अपने संप्रदायों की जड़ता के कारण हम यह सब प्रस्थापित करने की कोशिश करते हैं! राम बारह कला के अवतार है, कृष्ण सोलह कला के अवतार है! थोड़ा विचार कीजिए! राम सूर्यवंश में है। आदित्य बारह होते हैं इसीसे बारह कला पूर्ण है। कृष्ण चन्द्रवंश में है। चंन्द्र सोलह कला में है। दोनों पूर्ण है। एक बारह में पूर्ण है, एक सोलह में पूर्ण है। दो लोग खाते हैं। एक पांच रोटी खाकर तृप्त होता है, दूसरा तीन रोटी में तृप्त होता है। दोनों तृप्त है। कलाओं की ओर ध्यान नहीं देना है। निकम्मे लोग ऐसी कसरत करते हैं! दोनों अवतारों का मिलन हुआ है। आज परशुरामजी आए। उन्होंने राम के गूढ और मृदु वचन सुने। परशुरामजी की बुद्धि के दरवाजे खुल गए। आवेशावतार पूर्णावतार में समा जाने का उपक्रम शुरू हुआ है।

परशुरामजी अवकाश प्राप्त करते हैं। सभी विघ्न दूर हुए। जनकराजा के दूत पत्र लेकर अयोध्या पहुंचे हैं। पूरी अयोध्या बाराती बनी है। यहां विश्वामित्र चारों राजकुमारों को लेकर आते हैं। सबका मिलन होता है। तुलसीदासजी ने मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी की तिथि लिखी। मानो विधि ने मुहूर्त निकाला। गोधूलि बेला। अपने यहां वही मुहूर्त होता था। अवसर अच्छा था। अब देशकालानुसार हमें प्रेक्टिकल बनना चाहिए। दोपहर में ब्याह होता है। जैसी जिसकी अनुकूलता। साहब, हर एक को प्रेक्टिकल होना चाहिए।

राम की बारात में कामदेव घोड़ा बना है। जगत को कैसी प्रेरणा दी है! मैं ईश्वर हूं; ब्याह करने जाता हूं। तू भी जाना। तू ब्याह करेगा तब तेरे कंधे पर काम बैठा

होगा। जब मैं ब्याह करूंगा तब काम की लगाम मेरे हाथ में होगी। जीव और शिव का यह अंतर है। भगवान ब्याहमंडप में बिराजे। आठ सखियां जानकीजी को सजाकर मंडप में ले आती है। एक के बाद एक विधि शुरू होती है। कन्यादान का प्रसंग आया। उसी वक्त वशिष्ठजी को विचार आया, 'राजन्, जनक महाराज, सुना है कि आपकी तीन कन्याएं कंवारी है। एक आपकी पुत्री और आपके छोटे भाई कुशध्वज की दो पुत्रियां मांडवी और श्रुतकीर्ति है। तो हमारे तीन राजकुमार कंवारे हैं। आप सहमत हो तो इसी मंडप में आज ही उनका ब्याह कर डाले।' 'आप आशीर्वाद दीजिए।' मांडवी का भरत से, श्रुतकीर्ति का शत्रुघ्न से, ऊर्मिलाजी का लक्ष्मण से ब्याह हुआ है। ब्याह पूरा होने पर कई दिनों तक बाराती रुके हैं। रास्ते में विश्राम लेते-लेते अयोध्या पहुंचे हैं। दिन बीतने लगे। सभी बिदा हुए। विश्वामित्र की बिदा बाकी है। उनकी साधुता अद्वितीय है। गृहस्थ के प्रसंग में साधु की उपस्थिति से उत्साह-प्रसन्नता बढ़े। साधु को गृहस्थ के प्रसंग में जाना चाहिए। लेकिन प्रसंग पूर्ण होने पर साधु को रुकना नहीं चाहिए। आज विश्वामित्र बिदाई चाहते हैं। तुलसीदास दशरथ के मुख से पंक्ति कहलाते हैं -

नाथ सकल संपदा तुम्हारी।
मैं सेवकु समेत सुत नारी।।
करब सदा लरिकन्ह पर छोहू।
दरसनु देत रहब मुनि मोहू।।

रघुकुल के नाथ है। वे महात्मा से कहते हैं, नाथ, ये सारी संपदा आपकी है। भौतिक और आध्यात्मिक संपदा आपकी दी हुई है। मैं आपका सेवक हूं। संपदा के मालिक आप हैं। आपके तप, भजन, साधना में हम अवरोधक न बने। कभी हम याद आए और आपको लगे मिलना है तो अयोध्या आकर हमें दर्शन दीजियेगा। साधु के दर्शन से पाप नष्ट होते हैं। मैं दृढता से मानता हूं, बहुत गंभीरता से जगत को कहता हूं लेकिन शर्त इतनी कि साधु साधु होना चाहिए। साधुदर्शन से पाप नष्ट हो जाते हैं। वह फ़कीर पैदल चलकर आया और पैदल ही चला गया। धन्य है इस देश की साधुता को। रजवाडा था, रथ या हाथी भेज सकते थे। पर दशरथ ओफर न कर सके! साहब, अमुक फ़कीर को आप ओफ़र न कर सके! उनकी स्वाभाविक व्रत निष्ठा के कारण नहीं कह सकते। साधु गृहस्थ का काम पूरा कर जाय तब किये गये आतिथ्य को याद नहीं करते। वे हरिरूप को याद करते हैं। विश्वामित्र निरंतर ब्रह्मानंद-परमानंद-रामभक्ति का स्मरण करते हैं। सच्चिदानंद के आनंद को गुनगुनाते हैं। प्रशंसा करते हैं। 'बालकांड' संक्षेप में पूरा हुआ। फिर अब भोजन। आज सीताराम का ब्याह हुआ है। स्वच्छता अभियान है। व्यवस्था का जतन कर, व्यर्थ न हो, अस्वच्छता न हो, ऐसे प्रसाद ग्रहण कीजियेगा।

यह स्वच्छता अभियान कोई नई बात नहीं है। वेदकाल से चलता आया यह वैश्विक स्वच्छता अभियान है। मैं बहुत समझकर कहता हूं। वैदिक ऋषियों ने क्या किया? उनके विशुद्ध, स्वच्छ अंत:करण में ऋचाएं ऊतरी और उन ऋचाओं ने वेदकाल से वैश्विक स्वच्छता अभियान चलाया। वेदों ने क्या किया? खेद मिटाये। वेद का स्वच्छता अभियान माने खेद को मिटाना। चरित्र में रहे छेद को नष्ट करना। हमें छेदमुक्त करे। वैदिक स्वच्छता अभियान माने हमें परिश्रम कर प्रस्वेदबोध कराए कि प्रस्वेद बहाइए। मानव भेदमुक्त होना चाहिए। छेद दूर हो। मानव के मन का खेद मिटे। मेरी व्यासपीठ की दृष्टि से यही वैदिक स्वच्छता अभियान है।

हमारी सुबह नरसिंह है, दोपहर अखा है, शाम मीरां है और रात प्रेमानंद है

आज नरसिंह मेहता का स्मरण स्वाभाविक है। हारमाला का दिन है। मेरी जिम्मेदारी और व्यक्तिगत आस्था के कारण कहता हूं कि नरसिंह मेहता चारों युग में है। चारों वर्ण में है। अंत:करण चतुष्टय में है। चारों पदार्थ में है। एक-दो मतभेद है। इसे एक ओर रखे। परंतु मेरी जिम्मेदारी से कहता हूं, नरसिंह मेहता सतयुग में प्रह्लाद था। प्रह्लाद नरसिंह मेहता नहीं हुआ। कहा जाता है, प्रह्लाद गर्भस्तंभ पकड़ता है। फिर नरसिंह प्रकट होता है। यहां नरसिंह मेहता मशाल के उजाले में रासलीला का दर्शन करता है। हाथ जलता है। हमारा एक सच्चा नरसिंह प्रकट होता है। यहां भी अग्नितत्त्व है। यहां एक नरसिंह मूलरूप में प्रकट होता है। यहां हाथ नहीं जलता तब तक हरि कहां मिलता है? खुद के उजाले के बगैर दूसरे मशाल लेकर खड़े हो उसे आरती कहते हैं, अवतार नहीं। अपने हाथ के उजाले को अवतार कहते हैं। 'अयं मे हस्तो भगवान। अयं मे भगवत्तर:।' भगवती श्रुति; यह अपना देश ही कह सके कि मेरे हाथ भगवतर माने भगवान से भी बड़े हैं। 'विश्वभेषजं।' मेरे हाथ विश्व की तमाम बीमारियों की औषधि है। यह वेद उद्घोष है। नरसिंह सतजुग में प्रह्लाद है। कलियुग में आह्लाद है, प्रसन्नता है।

एवा रे अमे एवा रे, तमे कहो छो वळी तेवा रे,
भक्ति करतां भ्रष्ट थईशुं, तो करशुं दामोदरनी सेवा रे.

आठों पहर आह्लाद यह प्रह्लादपन है। अतिशयोक्ति है। पर अपनी आस्था है। प्रियजनके लिए अतिशयोक्ति करते हैं। यह व्यक्तिगत है, अतिशयोक्ति नहीं। सोच-समझकर कहता हूं कि प्रह्लाद का अवतार मेहता नहीं है, मेहता का अवतार प्रह्लाद है।

त्रेतायुग में मेहता सुतीक्ष्ण है। जो नृत्य करता है। वह गाता है। उसे पता नहीं कहां जाना है। उसे पता है कि हरि आते हैं उस समय सुतीक्ष्ण ऐसा पात्र है जिसे तुलसीदास ने 'रामचरित मानस' में रखा है। सुतीक्ष्ण, नागर पुत्र

नरसिंह महेता का अवतार है। उसकी बुद्धि सु-तीक्ष्ण है। त्रेता में सुतीक्ष्ण है। त्रेता में मेरे मतानुसार, गुरु की दी बुद्धि अनुसार नरसिंह सुतीक्ष्ण है। द्वापर में सोया हुआ मुचुकंद है। भगवान श्रीकृष्ण, वाया गिरनार, जब निकले हैं। पूरी कथा पड़ी है उसमें राजा मुचुकंद यह राजा नरसिंह है। कलियुग जो रूप नरसिंह मेहता का हमारे पास है -

हजो हाथ करताल ने चित्त चानक.
तळेटी समीपे हजो क्यांक थानक.
- राजेन्द्र शुक्ल
तळेटी जतां एवुं लाग्या करे छे.
हजी क्यांक करताल वाग्या करे छे.
- मनोज खंडेरिया

छः सौ साल पहले नरसिंह का आदिकवि रूप ऊतरा है।

चारों जुग परताप तुम्हारा।
है परसिद्ध जगत उजियारा।

हनुमानजी पर जो चौपाई लागू होती है वही नरसिंह मेहता पर लागू है। चारों युग में इसका प्रभाव है। यह अंत:करण चतुष्टय है। मेहता ने मन की बात की। बुद्धि की बातें की। चित्ततंत्र की वीणा बजाकर मेहता ने अहंकार की चर्चा की।

सुख दु:ख मनमां न आणीये घट साथे रे घडिया.
टाळ्या ते कोइना नव टळे रघुनाथना जडिया.

मन के पद गाए। मन की कविताएं गाई। अपने आदरणीय मुख्यमंत्री आनंदीबहन गतिशील गुजरात कहती है, पर नरसिंह मेहता के समय का गुजरात गतिशील नहीं पर गीतशील था। समस्त गुजरात गाता था। गति होनी चाहिए। पर गीत से जो गति होती है इससे बढ़कर कोई नहीं है। लोकगीत, सुगम संगीत का गीत हो तो भी चलेगा। शास्त्रीय गीत भी चलेगा। दोहा भी चलेगा। श्लोक भी चलेगा। शादी के गीत, 'गीतगोविंद', 'गीतावलि' टागोर की 'गीतांजलि' सबकुछ चलेगा। आज हमारा मनोरथ गतिशील गुजरात का है। अल्लाह पूरा करे। मेहता की प्रज्ञा, मति और बुद्धि का विकसित रूप होगा। प्रज्ञाशील यह महापुरुष यूं तो भक्तिमार्ग का है पर उसका वेदांत भी देखिए -

ब्रह्म लटकां करे ब्रह्म पासे.

नींद में दिखे वे सपने हैं। ध्यान में दिखे वह दर्शन है। समाधि में दिखे वह साक्षात्कार है। जगकर देखूं तो सच्चा जगत और जीवन दिख पड़े। हम खो जाते हैं तो सपने आते हैं। संसारी को सपने आते हैं पर ध्यान में लगे वह दर्शन है।

तब संकर देखेउ धरि ध्याना।
सतीं जो कीन्ह चरित सबु जाना।।

महादेव को ध्यान में सती ने जो-जो किया वो दिखाई दिया। ध्यान में आए वह दर्शन है। नींद में आए वह स्वप्न है। समाधि में आए वह साक्षात्कार है। यह भी देखने की एक रीति है। यह आदमी कितनी बड़ी प्रज्ञा की बात करता है! चिद्विलास की बात नरसिंह महेता करते हैं। तब उसने चित्त को भी पकड़ा है। इस अंत:करण चतुष्टय का यह अहंकार -

हुं करुं हुं करुं ए ज अज्ञानता,
शकटनो भार ज्यम श्वान ताणे.

चारों युग में नरसिंह मेहता दिखता है। अंत:करण चतुष्टय में मेहता की करताल बजती है। गुजरात की सुबह नरसिंह मेहता है। दोपहर अखो है, उसमें थोड़ा ताप है। गुजरात की शाम राजस्थान से आई मीरांबाई है। गुजरात की रात प्रेमानंद है। हमने इस ढंग से सुबह-शाम देखे ही नहीं है! गुडमोर्निंग! अरे, सुबह तो नरसिंह मेहता के नाम से अस्तित्व में लिख दी है। मेरे हरि के वील में सुबह नरसिंह मेहता के नाम है। 'ए... जागने जादवा...' मुझे आज नरसिंह मेहता पर व्याख्यान करना है। राम की

कथा फिर करूंगा। विष्णु नहीं, वैष्णव की कथा करनी है। इतना बड़ा अभियान नरसैया ने किया। ऐसा किसीने किया नहीं है। अभी सुबह में हमारे दिमाग में उनकी आध्यात्मिक झाडू फिर रही है। नरसिंह महेता हमारे अंदर के मैल को दूर करने का शाश्वत काम कर रहा है। छ:सौ साल पहले का नरसिंह मेहता का फोटोग्राफ हमारे पास कहां है? मुझे पता नहीं। उस समय के चित्रकार ने बनाया हो तो! अभी हमारे पास जो है सो है। यूं मैं नरसिंह मेहता को याद करूं तो मेरी कल्पना माने या जो भी माने पर नरसैयों देखने में ऐसा लगता है। प्रतिध्वनि है साहब! वे दामोदर कुंडा में स्नान करने जाते होंगे तब कैसे लगते होंगे?

ए... जागने जादवा कृष्ण गोवाळिया,
तुज विना धेनुमां कोण जाशे?

मैं सुबह जगूंगा तब मेरी इन्द्रियरूपी गायों को चराने के लिए ले जाऊंगा। मेरे पैर कहीं गति करते होंगे। मेरी आंखें कहीं देखने की बातें करती होगी। मुझे कुछ बोलना होगा। मुझे कुछ सूंघना होगा। मुझे किसीका स्पर्श करना होगा। ये सभी मेरी इन्द्रियरूपी गायों को हे ऋषिकेश, माने इन्द्रियों का मालिक; तेरे बिना ये मेरी इन्द्रियांरूपी गायों को योग्य स्थान पर कौन चरायेगा? नहीं तो ये गायें कहीं गलत खेतों में चली जायगी। गांव की पंचायत डिब्बे में कैद कर लगी। यह सुबह नरसिंह मेहता है, दोपहर अखा है उसमें प्रखरता है। थोड़ा तपता है। थोड़ी गरमी देता है।

तिलक करतां त्रेपन थयां.
जपमाळानां नाकां गयां.

यों कहकर प्रखरता दिखाती है। हमारी शाम मीरां है।

पग घूंघरूं बांध मीरां नाची रे...

अपनी शाम मीरां, तो रातें प्रेमानंद है। हमारे माणभट्ट हैं, जिसने अपनी रातें सुधारी है। व्याख्यान किए हैं। महेता अंत:करण चतुष्टय में खेलते हैं। मेहता चारों युग में घूमते हैं। नरसिंह मेहता को मैं इस रीति से लूं तो सबका लगेगा ये केवल नागरों के नहीं है, हाटकेश्वर का है। सुवर्ण सबका होता है। सबको प्रिय है। किसी के पास कम किसी के पास ज्यादा है। चांद पर सोने का आवरण होता है।

आंतर्-बाह्य स्वच्छता और शुचिता के संदेश की यह कथा है। 'ऊंच-नीच कुळ अवतरे, आखरे संतनो संत।' वे वर्ण की बात नहीं करते। वर्णव्यवस्था की रीति पर से 'चतुर्वर्णमया' यों कहकर कृष्ण बात करे। यह व्यवस्था है। व्यवस्था तो समाज में होनी चाहिए। मैं यहां बैठा हूं तो बोलता हूं। श्रवण में आपके साथ ही बैठ जाता हूं। व्यवस्था के लिए यहां बैठा हूं। यह एक व्यवस्था है। इसमें मोरारिबापू बड़े हैं और आप छोटे हैं ऐसा नहीं है। मैं तो केवल चौकीदार हूं। चौकी पर बैठा हूं। आप तो जमीनदार है, जमीन पर बैठे हैं! सीधी बात है। यह व्यासपीठ तो एक चौकी है। हिन्दी में तो इसे चौकी कहे न यार? यह चौकीदार का काम है। हकीकत में चौकीदार का ही काम करता हूं। बिना पगार इन्क्रिमेन्ट लिए या न तो दिवाली बोनस लिए! न तो निवृत्ति लिए। हमें निवृत्त तो होना ही नहीं है। पर निवृत्त होने के बाद पेन्शन नहीं। सच मानियेगा, इसके अलावा कोई लेना-देना नहीं, साहब! अब तो मैं आपके साथ दिल की बातें करता हूं, साहब! मुझे लगता है, आप मुझे समझते हैं। मैं आपको समझ सका हूं। इसमें मैं धोखा भी खा सकता हूं। तो भी मानता हूं कि मैं समझ सका हूं! आप धोखा करे यह आपका पक्ष है। मैं आप जैसा ही एक आदमी बनकर रहना चाहता हूं। कृपया आप मुझे रहने दीजियेगा। मुझ पर महेरबानी करना। 'घडवैया मारे ठाकोरजी नथी थावुं।' दादल कह गया है। उनके मुंह से सुना है। जो भी भाष्य करना चाहे कीजिए। मैं तो मानता हूं कि हमारे लिए कोई बोल, भाष्य करे ठीक हो या न हो। सूरत का

कवि किरण चौहाण का शे'र नीतिनभाई ने सुनाया -

आपणे मोटा थवा कंइ पण नहीं करवुं पडे,
आपणी इर्ष्या करीने लोक नाना थइ जशे.

किसीको छोटा बनाने की कोशिश मत कीजिए। इर्ष्या करनेवाला खुद छोटा हो जायगा। यह शे'र मुझे पसंद आया। हमें किसीको छोटा नहीं बनाना है। यह अपना मिशन है ही नहीं। ईर्ष्या कर वह अपनेआप छोटा हो जायगा।

ध्यान रखिए, वर्ण की बात नहीं है। जिस कुल में शूद्रता भरी थी वहां नरसिंह मेहता जाता है। कीचड में कमल खिलता है। यह आदमी प्रह्लाद के रूप में आता है। मुचुकंद के साथ उसकी तुलना करे तो क्षत्रिय में आता है। सुतीक्ष्ण के साथ तुलना करे तो, सुतीक्ष्ण पूर्वाश्रम में खेती करता था। गौ रक्षा करे, खेती करे, वाणिज्य करे वह वैश्य है। नरसिंह मेहता वहां हो तो वैश्य है। ब्राह्मण तो है ही। नागरकुल में आए हैं। बात ऐसी है कि हरिजनवास में भजन करने गए तो उन्हें ज्ञाति से निकाल दिया गया। ब्राह्मणों में नागरकुल उच्चकुल है। नागर पर इतने वर्ष पूर्व जो आदमी इतनी बड़ी क्रांति करे, अस्पृश्यता की सफ़ाई करे। इतना बड़ा सफ़ाई अभियान चला। या वह स्वाभाविक था। वे ज्ञाति से बहिष्कृत हुए। इसका अर्थ में इतना जिम्मेदारी से समझा हूं कि नागर नरसिंह मेहता को बहिष्कृत न कर सके। पर अब मैं समझा हूं कि भगवान हाटकेश्वर शिव है और 'रामचरित मानस' में ऐसा लिखा है कि मानव का बुद्धिप्रेरक तत्त्व शिव है। मैं इतना समझा हूं कि नागर समाज को भगवान हाटकेश्वर ने ऐसी बुद्धि में प्रेरणा दी होगी कि इन्हें ज्ञाति से बाहर करे। क्योंकि यह हमारी एक ज्ञाति में समा जाय ऐसा नहीं है। सार्वभौम है। हाटकेश को लगा होगा कि मेरा नरसिंह केवल नागर तक मर्यादित न रह जाय। नागर गौरव ले सके। अपने कुल में नरसिंह ने जन्म लिया होता तो इसका गौरव किसे न हो? यह ज्ञाति में नहीं पर विश्व

में समा जाय ऐसा मानव था। समस्त जगत छोटा पड़े, ज्ञाति छोटी पड़े यह तो अलग प्रकार का मनुष्य है। ज्ञाति का नहीं है। एक अलग जाति का है। हम कहते हैं कि यह आदमी अलग प्रकार का है। महेता अलग है। नागरजाति में समा जाय ऐसा नहीं है। उन्होंने धर्म के पद लिखें।

आपणे आपणा धर्म संभाळवा
धर्मनो मर्म लेवो विचारी।

पूरे पद में धर्म की बातें की है।

रात रहे ज्याहरे पाछली खटघडी,
साधु पुरुषे सूई न रहेवुं।

नरसिंह महेता प्रेक्टिकल है। योगी हो उसे ऐसा करना है। भोगी ऐसा करता है। धर्मपदारथ जो जानता है। इनके सिवा अर्थ को जाननेवाला दूसरा कौन होगा?

मारी हूंडी स्वीकारो महाराज रे शामळा गिरिधारी...

ऐसा अर्थ कि घर में कौडी तक नहीं और हूंडी लिख दे! कैसी समृद्ध पीढी होगी कि जिन्होंने यात्रिकों को चिठ्ठी लिखकर दी कि द्वारका में यह हूंडी ले जाओ। क्या विश्वास है? नरसिंह का भरोसा इतना ऊंचा था कि इस छाया में भगवान मौज करते थे। भगवान पर नरसिंह महेता के भरोसे का छत्र था। हरि नीचे था, भरोसा ऊपर था। इसकी कहां कैसी तिजारत! कौन से भरोसे ऐसा कहा होगा, द्वारका जाओ।

मारी हूंडी स्वीकारो महाराज रे शामळा गिरिधारी...
मारे एक तमारो आधार रे शामळा गिरिधारी...

यही तो अर्थत्व है कि घर में फूटी कौडी न हो और हूंडी लिख दे। कैसा फूला-फूला व्यापार होगा! कल चिनुकाका मिले थे। कहा, बापू, एक गीत लाया हूं आपको देने के लिए। 'नागर नरसिंह महेतो' पर लिखा -

श्रद्धानां श्रीफळ अने वाणीनो वेपार.
जप-तपनां बे त्राजवां, चाले धंधो धमधोकार.
के शामळा गिरिधारी...

थोड़ा मेरा अनुभव कहूं तो हूंडी का स्वीकार होता है। कोई व्यवस्था न हो और कथा शुरू हो और दूसरे दिन अपनेआप हो जाता है। यह चमत्कार की बात नहीं है। मैं इसमें मानता भी नहीं हूं। आप मानते हो तो आपको मानूं पर चमत्कार को नहीं। मैं मनुष्य में मानता हूं। मेरे लिए तो रोज सुबह सूरज उगे यही चमत्कार है। कौन-सा चमत्कार? नारिकेल, कंकु, चावल ये सब! यों नारिकेल निकलते हो फिर बोना क्यों? जो नारिकेल निकाले उसके सिर पर दो मारिए! ना, ना करना नहीं भाई साहब! यह तो मज़ाक कर रहा हूं। इसमें से समाज को बाहर निकालिए। स्वच्छता अभियान चलाकर इसमें से बाहर निकालिए।

आप कथा सुनिए तो फायदा होगा ऐसा मैंने कभी नहीं कहा। मजा आये तब तक सुनिए। प्रसन्नता रहनी चाहिए। ऐसी कथा सुनने से आपका फायदा होता हो तो यह वस्तु आपकी है। मैंने कभी कहा है, आप ऐसी माला पहनिए? मौज करिए। निजता बरकरार रखिए। मानव का स्वीकार कीजिए। रामकथा का मिशन मानव निर्माण है। कौशल्या ने नारायण बनकर आए राम को मानवरूप दिलवाया। यह कौशल्या ने कर दिखाया। उसके पुत्र ने संस्कार लेकर बंदर, राक्षस, कौल-किरात को मानव बनाया। मिशन सफल हुआ। मानव का प्रोक्षण होना चाहिए। चमत्कार क्या? हा, आध्यात्मिक रहस्य में बहुत होता है पर ये व्यक्तिगत अनुभव है, सार्वभौम नहीं। यह जगत रहस्यपूर्ण है। चमत्कार नहीं। रूके हुए काम हो यह चमत्कार नहीं है। मानव मानव को मदद करता है।

नरसिंह ने धर्म के पद लिखे। भरोसे में सार्थक अर्थ उत्पन्न किए। रसिक पद भी लिखे नरसैया ने। उसने काम पदारथ की अवगणना नहीं की है। रसिक अवगणना न कर सके। ईश्वर स्वयं 'रसो वै सः' है। जनम से जिसमें रसग्रन्थि नहीं है ऐसे लोग त्याग के नाम पर रस की निंदा

करते हैं! उसमें उनका दोष नहीं है। जन्म से वह विकलांग है! आंतरिक विकलांगता है। त्यागी रसिक नहीं होता। नरसिंह कहते हैं -

ए रसने जाणे छे शुकदेव जोगी,
कंईक जाणे छे नरसैंयो भोगी।

खुदा को भोगी मानते। यह गौरव अनुभव करता है। मैं भोगी हूं। तुम सबसे ज्यादा कृष्ण को मैंने भोगा है। गोविंद के नाम को भोगा है। रूप को भोगा है। लीला का उपभोग किया है। उनके धाम को भोगा है। यहां कामपरक पदों को ध्यान में ले। पूरा अभ्यास पेपर प्रस्तुत करता हूं। बिना तैयारी का, अनलिखा मेरा यह लेख सुनना। नरसिंह में रसिकता है। मनुष्य रसिक होना चाहिए। रस के अनेक प्रकार है। मेहता कहते हैं -

रामसभामां अमे रमवाने ग्यातां
पसली भरीने रस पीधो रे...

तुलसी 'रामायण' के प्रारंभ में कहते हैं -

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि।
मङ्गलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ।।

मुझे पता नहीं। आज सौ सौ अनुभूति रखने की इच्छा है। यही मेरा जीवन है। नहीं तो 'अब हौं नाच्यो बहुत गोपाल।' यह मेरा आनंद है। जीवित रहने के मेरे प्रयोग है। हां साहब, अभी हमें ओर आनंद करना है। अभी हमें रस पीना है। 'बस, नीरस रहिए! मुंह चढ़ाकर बैठिए!' धर्म ने कैसे-कैसे जुल्म किए हैं! तथाकथित धर्म ने! प्लीज़, आप मुस्कुरा भी नहीं सकते! किसीसे बातचीत भी न हो। बोलना भी नहीं। धर्म, धर्म, धर्म! ऐसा नकाब? आप मुस्कुराइए। प्रसन्न रहिए। घर में रोज पांच-दस मिनट प्रसन्न रहिए। टी.वी. बंद कर दीजिए। पूरे दिन के अनुभव हो, प्रसन्नता की बातें हो सब शेर कीजिए।

अमृत रस नहीं। अमृत की बातें काल्पनिक है। अमृत का घडा निकला। इतना मंथन किया तब जाकर एक घडा निकला। तकरार भी हुई। अमृत कलश की थोड़ी बूंदे नासिक में, थोडी उज्जैन में गिरी। थोडी प्रयाग में। वहां तकरार के अलावा कुछ और है? शंकर के कंठ में पड़ा ज़हर अच्छा नहीं कि विष और राम को इकठ्ठा कर संधि कर जगत को विश्राम दे दिया! विष+राम=विश्राम। संधिकर विश्व को कौन-सा अमृत दिया? आप 'रामायण' खोलते नहीं, बातें करते हैं! शायद कईयों को तो 'रामायण' के कवर का रंग कैसा है इसका भी पता नहीं! जूठमूठ 'रामायण' पर कोमेन्ट करते हैं! पहले साद्यन्त पढ़िए। तुलसी लकीर का फ़कीर नहीं है साहब! वैज्ञानिक सूत्र दिये हैं। वे कहते हैं, अमृत कोई रस नहीं है। तो अमृत क्या है? 'भागवत' की गोपी कह सकती है कि अमृत क्या है-

तव कथामृतं तप्तजीवनं कविभिरीडितं कल्मषापहम् ।

रस की महिमा है! जिसे ऐसे रस की आदत हो पीने की, वो दूर फेंकने की बात नहीं करता। उपेक्षा की बात ही नहीं। नफरत ही नहीं। राजेन्द्र शुक्ल कहते हैं -

निषेध कोईनो नहीं, विदाय कोईने नहीं।
हुं शुद्ध आवकार छुं, हुं सर्वनो समास छुं।

मेरी दृष्टि से स्वीकार जीवन है, अस्वीकार मृत्यु है। कोई गाली दे, स्वीकार कर लीजिए। अभी तो हम बात ही कर सकते हैं। अपना ऐसा लेवल नहीं है। कृष्ण स्वयं रसिक है। 'रसो वै सः।' लटका माने ठुमका। लटका माने इशारेबाजी नहीं, प्लीज़! यह तो ब्रह्म लटका है। तालबद्ध, लयबद्ध, सूरबद्ध, रसबद्ध ठुमके की बात है। अहमदाबाद में मेरा निवेदन दोहराता हूं कृष्ण की गायें शरारती नहीं थी, कृष्ण शरारती था। वह जानलेवा है साहब! उसके ठुमके, भ्रुकुटिभंग ये सब ऐसा मारते हैं! काल भी मार न सके पर वह मार डाले! कृष्णकथा में प्रवेश करना साहस है। साहब! डर लगता है, कहीं बाहर निकल न पाए तो? मैंने कई बार कृष्णकथा कहते-कहते कथा बंद कर दी है, भाई, आज कथा पूरी कर दे!

लो आ गई उनकी याद वो नहीं आये...

याद श्रेष्ठ है। वो आये तो हम नहीं रह पायेंगे। याद बनी रहे। मीरां ने कहा था जब पूछा गया कि कृष्ण को गए पांच हजार साल बीत चुके हैं फिर भी क्यों दौड़ती है? क्यों पागलपन करती है? मीरां कहती है, मैं कृष्ण को पाने नहीं दौड़ती, मिले ना मिले! और मिले तो क्या हम उसे संभालकर रख पाएं?

अलग ही मज़ा है फ़कीरी का अपना,
न पाने की चिंता, न खोने का डर है।

यहां भी शायर है। स्वागत है। दीक्षित साहब हाजिर है। अच्छी कविता लिखते हैं। कल ओसमाण ने कविता गाई थी -

या तो कुबूल कर मेरी कमज़ोरियों के साथ।
या छोड़ दे मुझे मेरी तन्हाइयों के साथ।

नरसिंह रसिक है। रसभोक्ता है। कटोरी भर रस पीया है। अत: उन्होंने रस के पद गाए हैं। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। यद्यपि नरसिंह मेहता एक पद में मुक्तिवादी प्रतीत नहीं होते। जो मैंने पहले भी रखा था -

हरिनां जन तो मुक्ति न मागे,
मागे जनम जनम अवतार रे;
नित सेवा नित कीर्तन ओच्छव,
निरखवा नंदकुमार रे.

ऐसा उनका वैष्णवी मनोरथ है। अत: मुझे यह मेहता सर्वत्र दिखाई देता है। वे युगों में भी है। वर्णों में भी है। वर्णों से बाहर भी है। चारों पदार्थ में है। अंत:करण चतुष्टय में भी दर्शन देते हैं। आज ऐसे मेहता की हारमाला का दिन है। अत: थोड़ा मेहता-दर्शन किया। 'वैष्णव जन तो तेने कहीए रे...' इसमें मेरी दृष्टि से अठारह लक्षण है। अत: मैंने इसे नरसिंह मेहता की 'वैष्णवी गीता' कही है। उन्होंने अठारह अध्याय हमें गुजराती में दिए हैं -

वैष्णवजन तो तेने कहीए जे पीड पराई जाणे रे;
परदु:खे उपकार करे तोये मन अभिमान न आणे रे।

नरसिंह मेहता तुलसी से पुराने हैं। छस्सो के आसपास के हैं। तुलसी की चौपाई में मुझे नरसिंह मेहता की कई पंक्तियों की धून सुनाई देती है। यह कहने में मुझे जरा भी संकोच नहीं है। मैं तुलसी का गायक हूं। अत: ऐसा न कहूं कि तुलसी ने लिखा। नहीं; 'पीड पराई जाणे रे।' तुलसी कहते हैं -

पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।

सीधी नरसिंह से आई पंक्ति है! आपकी शुभकामना से एक गायक के रूप में कहूं कि जो नरसिंह का अनुकरण करती है। नरसिंह आगे और तुलसी थोड़े पीछे तो क्या हो गया? पर हम तो कहते हैं कि हमारा जो है वैसा कोई और नहीं! ब्रह्म भी नहीं! तू समाज का बड़ा भ्रम है इसका क्या? नरसिंह मेहता ने मुक्तिपरक चर्चा की है। अत: वे सार्वभौम है। उसके बारे में बहुत कहा जा सकता है। यह एक ऐसा मेहता है, जो हमारी सुबह है।

थोड़ा मेरा अनुभव कहूं तो हूंडी का स्वीकार होता है। बिना व्यवस्था के कथा लगा देते हैं, साहब! दूसरे दिन सुबह अपनेआप ठीक हो जाता है! मैं चमत्कार में नहीं मानता, इतना ध्यान रखना। मेरे लिए तो हर सुबह सूरज उगे इससे बड़ा कोई चमत्कार नहीं है। सुबह जगा हुआ बालक आप उसकी ओर देखे, एक स्माइल दे इससे बढ़कर विश्व में क्या चमत्कार हो सकता है? नारिकेल, कंकु, चावल निकालना यह क्या है यार! इसमें से समाज को बाहर निकालिए। सफ़ाई अभियान चलाइए। अब इसमें से बाहर निकलिए।

मानस स्वच्छता

‘रामचरित मानस’ आंतरिक शुचिता के उपाय बतलाता है

‘मानस-स्वच्छता’ इस कथा का केन्द्रबिंदु है। हम इसकी परिकम्मा कर रहे हैं आंतरिक स्वच्छता के लिए। ब्रह्मलीन पूज्यपाद डोंगरेजी बापा का स्मरण सहजरूप होता है। पूरे गुजरात ने उनको सुना है। कहते थे कि शरीरशुद्धि स्नान से होती है पर मन की शुद्धि ध्यान से होती है। अपने यहां ध्यान की बहुत बड़ी महिमा है। ओशो ने ध्यान पर काफ़ी वजन दिया है। ध्यान से मन की शुद्धि होती है। धन की शुद्धि दान से होती है। वह वक्तव्य पूज्यपाद डोंगरेजी महाराज से सुना है। उनकी व्यासपीठ ने कहा, स्नान से शरीरशुद्धि, ध्यान से मनशुद्धि और दान से धनशुद्धि होती है। ‘रामचरित मानस’ भी आंतरिक शुचिता का उपाय बतलाता है।

तुलसीदासजी ने मन की स्वच्छता हेतु स्पष्ट उपाय बतायें है, जो हम कथा के आरंभ में गुरुवंदना में लेते हैं। ‘हनुमानचालीसा’ का पाठ करो तो आरंभ में दोहे का उच्चारण करते हैं उसमें स्पष्ट और सरल रूप से बाह्य स्वच्छता की बात तो हुई ही है। आदरणीय आनंदीबहन पटेल ने भी कहा, २०१७ में उन्हें सरकार ने कितना लक्ष्यांक सिद्ध करना है। मेरा अनुभव है। थोड़ी मानसिकता तैयार नहीं हुई है हममें, समाज में। गांवों में शौचालय बना देते हैं पर उसका उपयोग नहीं हो रहा है। मेरे गांव ने शतप्रतिशत कर दिखाया है। तलगाजरडा, रातोल, सेंजल, गांवों ने शतप्रतिशत कर दिखाया है। बारडोली में कथा की। बडौदा में कथा के समय राजुभाई ने संकल्प किया था। एकाद-दो शौचालय के मैंने भूमिपूजन भी किए थे। यह मुझे पसंद है। देवालय के भूमिपूजन तो महान है ही।

अमरिका स्थित नरेशभाई ने नवसारी में शौचालय की उद्घोषणा की थी कि मुझे मेरे गांव में और आसपास के गांवों में इतने शौचालय करने हैं ,परंतु स्थानीय सहयोग नहीं मिला! वे दुःखी हो गए! सरकारी तंत्र ने भी सहयोग नहीं किया! स्थानीय लोग और पूरी चेनल मदद करे यह जरूरी है। जिनके लिए हम यह सब करते हैं उन शौचालय को भी स्वच्छ रखे यह जरूरी है। पानी की भी समस्या है। यदि न हो तो भी स्वच्छ रखने की मानसिकता नहीं होती! फलतः

शौचालय बंद हो जाते हैं। सरकार सहयोग करे; दाता दिल से दान दे। संस्थाएं प्रामाणिकता से सहयोग करे। जनता का भी फ़र्ज है कि प्रामाणिक रहे, उपयोग करे, स्वच्छ रखे।

इतने सारे लोग रामकथा सुनते हैं। एक-एक प्रतिनिधि बन जाय। गांधीबापू ने भी विनम्रता से कहा है, ऐसा आप सभी मेसेन्जर बन जायेंगे तो कार्य सरल होगा। हमें हमारा मन तैयार रखना पड़ेगा। डोंगरेजी महाराज कहते थेल, मन की शुद्धि के लिए ध्यान धरिए। पतंजलि ने ध्यान बताया। वो तो हम नहीं कर सकते। हमारे लालबापू कहते थे कि ध्यान धरने की अपेक्षा ध्यान रखना बेहतर है। डोंगरेजी महाराज की तीसरी बात, दान करने से धनशुद्धि होती है। बहुत विनम्रता से कहता हूं, अन्यथा न ले, आनंदीबहन पटेल ने भी शब्द याद रख क्वोट किया, ‘बापू कहते हैं, समाज के शुभ के लिए दसवां हिस्सा खर्च कीजिए।’ मेरी बिनती है, एक साधु की व्यासपीठ पर से विनम्र बिनती है कि यह दसवां हिस्सा राष्ट्र के महामहिम राष्ट्रपति से शुरू होना चाहिए। पी.एम.साहब, हर राज्य के मुख्यमंत्री, धारासभ्य, राज्यसभा के सभ्य, अधिकारी सभी हिस्सेदार हो। सरकार आपको दे और आप उसमें से ग्रान्ट दे यह तो आपने प्रजा के पैसे दिए हैं। मैं एक साधु के रूप में बोल रहा हूं। द्वेषमुक्त चित्त से बोल रहा हूं। हम निज में से दसवां हिस्सा दे। हम आजीविका के लिए कुछ तो करते होंगे न? अपनी नौकरी होगी। तनख्वाह होगी। उसमें से दसवां हिस्सा निकाले। सरकार धारासभ्य, लोकसभा के सदस्यों को दस करोड की ग्रान्ट देती है। इसका इस्तेमाल करते हैं। देश के पैसे है। आप निज में से कुछ न निकाले। क्या आपको यह दसवां हिस्सा लागू ही न हो? मैं सबसे डिस्टन्स रखकर बैठा हुआ साधु हूं। ये मेरे वाद्यकार, इनका हेतु कमाई का नहीं है। कितना कमाये? वे सत्संग चाहते हैं। उन्होंने जो पुरस्कार मिलता है उसमें से दसवां हिस्सा प्रायः सभी निकालते हैं। इसका मैं साक्षी हूं।

आपकी निजी आय में से दसवां हिस्सा निकालिए। क्या अधिकारी न निकाल सके? राष्ट्र के अधिकारी, राज्य के अधिकारी, न निकालते हो ऐसा मैं यह नहीं कहता। निकालते भी होंगे। जो निकालते हैं उनके चरणस्पर्श करूं। पर ऐसा विचार मेरे श्रोता ग्रहण करते हैं। मेरे राष्ट्र के गुरुजन मुझे बच्चा समझकर ग्रहण कीजिए ना। मैं तो प्रणवदा से शुरू करता हूं। अभी जो राष्ट्रपति है उनके प्रति मेरा आदर है। उद्योगपति बहुत बड़े काम करते हैं वे भी दसवां हिस्सा निकाले। उन्होंने कितने गरीबों को प्रवेश दिया। सेवाक्षेत्र खोलें तो कम अज कम दस प्रतिशत तो ऐसे रखो और कहो कि कम आयवाले होंगे उन्हें निःशुल्क सेवा देंगे। क्या ऐसे संकल्प नहीं हो सकते? सभी में सिर्फ़ आय ही करनी है? जब हरी-भरी दुनिया छोड़कर जाने का वक्त आयेगा तब पछतावा बहुत होगा! मैं तो साधु-संस्था-आश्रमों को भी कहता हूं कि मेरे सभी साधु-संत पूजनीय है। धर्मस्थान मेरे प्रति बहुत ही स्नेह रखते हैं। मैं सभी को कहता हूं, आपके धर्मस्थानों में भी श्रद्धालुजगत आपको जो कुछ भी दे, आप दूसरों के लिए खर्च करते हैं तो भी आप जगत को प्रेरणा देने के लिए आपके आश्रम की आय में से भी वंचितों को दसवां हिस्सा दीजिए। वो हिस्सा अच्छा लगेगा!

साहब, दसवां हिस्सा कुछ भी नहीं है। सौ रूपये की आय में से दस रूपये न निकाल सके? प्रत्येक कलाकार, साहित्यकार, विद्वान, प्रोफेसर, वाइस चान्सेलर, आप कहेंगे खुद का नाम? मैंने पहले ही एक लाख का चेक दे दिया है। मैं किसी से एक पैसा तक नहीं लेता। साहब, मेरी कोई निजी आय नहीं है। परंतु ट्रस्ट द्वारा जो कुछ थोड़ा चलता होगा। जो भी कर सके।

पचपन साल में मेरी कथा से अतिरिक्त सिर्फ़ दो-पांच दिन खाली रहे होंगे। मैंने इतना सारा समय दिया यह मेरा पांचसौवां हिस्सा है। साहब, हम सब सोचे! यह आनंद की बात है कि बच्चे पोकेटमनी से दसवां हिस्सा निकालते हैं। मैं विदेश जाऊं तब कहते हैं, इस वर्ष का यह मेरा पोकेटमनी है। आप कहे वहां दे दूं। हम ऐसा क्यों नहीं सोचते? हृदय से अपील करता हूं। मैं व्यावहारिक हूं। जो प्रति माह पांच-सात-दस हजार की आय करता हो, वे दसवां हिस्सा निकाले ऐसा कभी नहीं कहता। पर श्रीमंत कितनी बड़ी आय करते हैं? प्रत्येक क्षेत्र से बड़ी आय है। वेद कहते हैं, आप बहुत कमाइए। आप दो हाथों से खूब कमाइए पर वेद हमें वात्सल्य से कहते हैं, चार हाथों से खर्च कीजिए। दो हाथों से कमानेवाला नर है, पर चार हाथों से खर्च करनेवाला नारायण है।

ये सभी कर सकते हैं। सरकार की कितनी समस्याएं कम हो जाय! सामाजिक संस्थाओं की समस्याएं कितनी कम हो जाय! हम सब करने लगे तो कितने काम हो सकते हैं! ऐसा कुछ हो तो मुझे अच्छा लगे। डोक्टर दस दिनों में कोई एक दिन पेशन्ट आए तो फ्री ट्रीटमेन्ट न करे। एक वकील भी ऐसा न कर सके कि बिना फीस के मार्गदर्शन दे? एक शिक्षक दस दिनों में एक बार गरीब लड़के से बात न कर आए? मैं तो राज्य सरकार और राष्ट्र सरकार से भी कहूं। एक-एक गांव अपनी-अपनी आय में से दसवां हिस्सा निकाल दे तो गांव की सारी समस्याएं खतम हो जाय। मेरी दृष्टि से बहुत बड़ा काम हो जाय। इतने समय से मैं बोल रहा हूं और लोग थोड़ा-बहुत करते भी है। मेरी इच्छा है, सब करे। धर्मजगत भी दसवां हिस्सा निकाले। धर्मजगत को भी काफ़ी प्रेक्टिस है! शरीर शुद्ध स्नान से होगा, मन ध्यान से और धन दान से शुद्ध होता है।

'रामचरित मानस' भी आंतरिक शुचिता के लिए स्पष्ट मार्गदर्शन देता है। 'अयोध्याकांड' के प्रथम दोहे में मन को सुधारने का उपाय बताया है। 'हनुमानचालीसा' का प्रथम दोहा मन को स्वच्छ करने को कहता है -

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि ।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ।।

तुलसी ने 'मानस' में मन की शुचिता-स्वच्छता के लिए एक उपाय बताया है। गुरुचरणरज मन को स्वच्छ करेगी। रज माने व्यक्तिपूजा, एक अंधश्रद्धा, अनेक लोगों को भ्रम में डालना, इस अर्थ में नहीं। मेरी दृष्टि से गुरु का व्यक्तित्व जो उपदेशात्मक हो और साधुता से भरा हो उसमें से एक रज जितना ग्रहण करना, जो अपने स्वभाव के अनुकूल हो ऐसे एकाकी सूत्र का सेवन करना, यह मन की शुद्धि का उपाय है। प्रथम तो गुरु गुरु होना चाहिए। उपनिषद में 'गुरु' शब्द है, 'सद्गुरु' शब्द है ही नहीं। 'सद्गुरु' शब्द तो मध्यकालीन समय में नानक आदि ने दिया। बाकी 'गुरु' शब्द को किसी विशेषण की आवश्यकता नहीं है। जैसे घी के डिब्बे पर लिखना पड़े शुद्ध घी? इसकी जरूरत नहीं है। लेकिन नकली घी के आने से ऐसा लिखना पड़े। यों गुरु के आगे 'सत्' लिखने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन कुछ ऐसा आया इसलिए लिखना पड़ा। 'सद्गुरु' शब्द मेरा प्यारा शब्द है।

तुलसी ने 'मानस' में चार बार 'सद्गुरु' शब्द का उपयोग किया है। कबीर को हम सद्गुरु साहब भी कहते हैं। सद् का अर्थ सत्य है। और सत्य ही गुरु है। सत्य जैसा गुरु जगत में कोई नहीं है। किसी न किसी गुरु से सत्य प्राप्त करना चाहिए। गांधीजी ने श्रीमद् राजचंद्र तथा रस्किन से सत्य लिया। और जहां से भी सत्य मिला, उन्होंने लिया। गांधीजी ने कहा है, सत्य ही परमात्मा है। ऐसा कोई गुरु, बुद्धपुरुष मिल जाय उनकी चरणरज भी

काम कर जाय। तुलसीदासजी ने ऐसा भी कहा, मन को स्वच्छ रखने के लिए गुरुचरणरज की जरूरत है। नेत्रशुद्धि के लिए भी है। बुद्धि को स्वच्छ कौन करे?तुलसी ने इसके लिए माँ जानकी के चरणों का आश्रय लिया। परमशक्ति के चरण का आश्रय हमारी बुद्धि की शुद्धि के लिए है। परमशक्ति के चरण का आश्रय हमारी बुद्धि को शुद्ध करेगा। हमारे अहंकार को स्वच्छ जागरण करेगा। जागृत हो जाय तो अहंकार जो विकार है यह शुद्ध हो जाएगा और वह रुनझुन में बदल जाएगा।

तुलसीदास ने 'मानस' और 'विनयपत्रिका' में कुंभकर्ण को अहंकार कहा है। वह सोया ही रहता है। पर जब वह जागृत होता है तब उनके वक्तव्यों में, मानसिकता में अहंकार नहीं दिखता। रावण ने युक्ति कर मदिरापान करवा दिया। थोड़ा अभक्ष करा दिया। अहंकार पुन: सूला देता है! अहंकार जागृति से शुद्ध होता है। अंत:करण का एक पार्ट है। वह तो किसी की करुणा से भी शुद्ध हो सकता है। अपना अहंकार भी कथा, बुद्धपुरुष कुछ या ठेस लगी हो तब थोडा जागरण आया हो तब शुद्ध होता हैं। फिर से न पीने का पीना शुरू करते हैं तो अहंकार प्रबल होता है। न खाने जैसी चीजें खाने लगते हैं! बिनती है कि कथा सुनने के बाद न पीने जैसा मत पीयें और न खाने जैसा मत खाइये। अहमदाबाद में ऐसा कोई भी नहीं करता होगा! श्रीमंत और रिसेप्शन की जगह पर वहां बेहद पीते हैं, खाते हैं! मैं अपील करते-करते थक गया! तुम्हारे पास दसवें हिस्से की क्या आशा रखूं? कल्पना करे, यह खाना-पीना क्या है? एक व्यक्ति ने कहा, गाय का दूध नहीं मिलता तो कुछेक तो पीना चाहिए न! गाय का जतन कर! गाय का पालन कर! देश इतना स्वार्थी हो गया है कि गाय को तो ही पाले यदि वह दूध दे। माता कुछेक समय तक बच्चे को दूध पिलाती है तो भी क्या उन्हें हम समाधि लगने तक नहीं पालते? गाय को देश की माँ माने तो उसको पाले। अपने घर जगह न हो, फ्लेट में रहते हो तो गोसदन में से गाय गोद ले कि इतनी गायों को चारा खिलाऊंगा। आदमी गाय के दूध का सेवन करे तो भी कितना फायदा हो!

हम ध्यान रखे तो जीवन का कितना कचरा साफ़ हो जाय। हम ऐसा कुछ थोड़ा पी लेते हैं, हम ऐसा कुछ थोड़ा खा लेते हैं तो अहंकार पुष्ट होता है। मैल जमने लगता है। तुलसी ने 'मानस' में अलग-अलग उपाय बताए हैं कि हम उसमें से बाहर निकल सके। वालि में बाह्य स्वच्छता थी पर वह अहंकार के कचरे को साफ़ न कर सका। ज्यों कुंभकर्ण के जगने पर अहंकार शुद्ध हुआ यों वालि के जगने पर भी अहंकार का कचरा निकल गया। आंतरिक शुचिता आई।

इसी तरह रावण की लंका में भी स्वच्छता अभियान चला होगा। लंका में बाह्य स्वच्छता पूर्ण है। तुलसीदास लंका की स्वच्छता का वर्णन करते हैं कि बाग, उपवन, वाटिका सब सुंदर है, स्वच्छ है। पर रावण के मन में मोह है। तुलसी कहते हैं, रावण मूर्तिमंत मोह है। रावण के अंतर का मल कब गया? जिस दिन नाभि में तीर लगा। मनुष्य के मोह का नाश तभी होता है जब राम का बाण नाभि में लगे या कृष्ण की वाणी अर्जुन की नाभि में लगे। तो अर्जुन कहे, 'नष्टो मोह:'; मेरा मोह नष्ट हो जाय। मोहरूपी मल साफ़ हो जाय। सद्गुरु की वाणी मोह का नाश करती है ऐसा 'रामायण' में लिखा है -

बंदउ गुरुपद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि।

शूर्पणखा अंदर-बाहर दोनों जगह से स्वच्छ नहीं है। आंतरिक रूप से राम को पाने की इच्छा से सुंदर लगती है पर उसकी मानसिकता मलयुक्त है। पंचवटी में भगवान राम को पाने नकली रूप धारण किया है। रूप

चाहे ऐसा बना लो। प्लास्टिक सर्जरी का जमाना है। नाक-कान की सुंदरता एक सर्जरी थी। पर अंदर का स्वरूप बदलता नहीं। रूप बदल सकते हैं, स्वरूप नहीं। रूप बाह्य है, स्वरूप आंतरिक है। रूप मैला भी हो सकता है पर स्वरूप कभी अशुद्ध नहीं हो सकता। शूर्पणखा ने क्या किया? बाह्य सौंदर्य किया पर मानसिकता मलयुक्त थी। इरादा नेक न हो तो नकाब कब तक चले?

'मानस' के स्वच्छता और भीतरी शुचिता के प्रसंगों को लेकर हम संवाद कर रहे हैं। 'मानस' में 'पवित्र' शब्द है यह भी शुचिता का प्रतीक है। तीन-चार बार 'पवित्र' शब्द आया है। 'स्वच्छता' शब्द तो एक ही बार आया है। उसका मतलब शायद ये है कि 'रामायण' द्वारा एक बार स्वच्छ हो गए तो फिर जीवनभर कोई अस्वच्छ नहीं कर सकता। स्वच्छ हो जाय एक घडी में, एक ही कथा पर्याप्त होती है। पर भाई, अपना तो हाथीस्नान होता है! संस्कृत में हाथीस्नान की महिमा है। गंगा में हाथी स्नान कर बाहर निकलते ही सूंड में धूल लेकर सिर पे डालता है! वैसे कथा में बैठकर आनंद ले पर बाहर निकलते ही...! पर कथा चलती ही रहेगी। जब वक्त मिले स्नान करने आईयेगा। और यहां स्नान के साथ भोजन भी है। मुझे पता है आप सिर्फ़ भोजन हेतु नहीं आते। मेरी कथा पर ये बुद्धिजीवी लोग, पोथी पंडित, जो आलोचना करते हैं!

गंगासती-समढियाला की कथा थी। एक वरिष्ठ जन ने पत्र लिखा, बापू, मैं तीन दिनों से कथा में निरीक्षण कर रहा हूं कि कथा सुनने दस प्रतिशत और भोजन हेतु नब्बे प्रतिशत आते हैं। कुछेक मेला समझकर आते हैं। ऐसा पृथ्थकरण किया उन्होंने! वे पढ़े-लिखे होंगे पर व्यावहारिक अनुभवी नहीं! वे पहले भोजन कर बाद में सर्वे करता होगा! मैं खुश हूं। इतने के लिए इतने प्रतिशत आते हैं! कुछेक तो स्टोल खड़ा कर धंधा करते हैं! मैं नहीं स्वीकार करता। लोग खाने नहीं, नहाने आते हैं। आप यहां कथा के बगैर भोजनालय रखिए। कितने आते हैं? प्रयोग तो कीजिए। खाने का टाईम कहां है? एक सौ सत्तर देशो में सीधे लाईव टेलिकास्ट पर हजारों श्रोता सुनते हैं वे क्या तेरे घर से खाना मांगते हैं? एक बजे कथा पूरी होने पर क्या टी.वी. से थाली निकलती है? आंकडे गलत हैं। अपनी आंतर-बाह्य स्वच्छता के लिए लोग गंभीर होकर भगवद्कथा श्रवण करते हैं। नहीं तो कथा वैसी की वैसी है। लोग सुनते हैं। क्या केवल कथा में ही एकत्र होते हैं? लोकडायरो हो, संतवाणी हो, अहमदाबाद में काव्य-संगीत-गज़ल के कार्यक्रम हो रसिक लोग पहुंच जाते हैं। लोगों को श्रवण भूख है। केवल भोजन हेतु नहीं आते। मैं केवल अपनी कथा के लिए नहीं कहता। हमारे कथाजगत में जहां-जहां कथाएं होती हैं वहां कुछ न कुछ हो रहा है।

'मानस' ने भीतरी शुचिता के लिए काफी उपाय बताए। उसमें एक उपाय नामजप है। आदमी नामजप करे तो उसकी जीभ और जिन्दगी अंदर से शुद्ध हो जाते हैं। वाल्मीकिजी ने उल्टा नामजप किया तो अंदर से पवित्र हुए। यहां 'पवित्र' शब्द चार-पांच बार और 'स्वच्छता' शब्द एक बार आया है। 'शुद्ध-विशुद्ध' शब्द भी 'मानस' में आए है।

पुत्रि पबित्र किए कुल दोऊ।
सुजस धवल जगु कह सबु कोऊ।।

यहां 'पवित्र' शब्द का प्रयोग किया। ये पर्याय हैं। एक अर्थ लें तुलसी ने पवित्रता की बात करते लिखा, परिवार में एक पुत्री हो तो दो कुल को पवित्र करती हैं। बाह्य और आंतरिक स्वच्छता के लिए हम संवाद कर रहे हैं।

थोड़ा कथा का क्रम। 'अयोध्याकांड' का मंगलाचरण किया है। मैंने संतों से सुना है कि 'अयोध्याकांड' यौवन का प्रतीक है। मैं देश के युवा भाईयों-बहनों को कहूं, जब यौवन हो तब इतना करना। एक तो तुलसी ने गुरुवंदना की। युवानी में सत्त्व-तत्त्व से पूर्ण व्यक्ति को मार्गदर्शक बना ले। भले आप गुरु का नाम न दे। इसकी मुझे चिंता नहीं है। 'गुरु' शब्द बहुत ऊंचा है। जहां से अच्छा विचार मिले, अच्छा मार्गदर्शन मिले, युवानी में लेना। एक साधु की बिनती है। बड़ा दरवाजा बंद रखिए पर खिड़की खुली रखिए। जहां से संकेत मिले ले लीजिए। वो शे'र है ना?

राशिद किसे सुनाउं गली में तेरी गज़ल,
उनके मकां का कोई दरीचा खुला न था।

मेरा मन कहता है बाउल की तरह एकतारा लेकर गली-गली गाऊं। लेकिन उसके मन की कोई खिड़की खुली नहीं है! यौवन में मन-मस्तिष्क खुले रखें। जहां से अच्छा मिले, स्वीकार लें।

मैंने कई बार व्यासपीठ से कहा है। आप तक पहुंचता है। पर जतन करना, पचाना यह आप पर है। मेरा कोई दबाव नहीं है। जीवन में इतनी वस्तु जरूरी है। यह निश्चित कर ले कि आपके स्वभाव के अनुकूल कर्म, भक्ति, ज्ञानमार्ग है। कौन से मार्ग पर जाना है यह आप तय कर ले। आप तय न कर सके तो किसी पहुंचे हुए अनुभवी मार्गी से मार्गदर्शन ले। पर एक मार्ग निश्चित कर ले। यौवन में निश्चित कर ले तो अच्छा परिणाम आयेगा। पंथ माने ग्रूप या संकीर्णता या छोटे-बड़े संप्रदाय नहीं। जिसने बौद्धिकता से पगदंडी बनाई हो इनकी बात नहीं। सनातन धर्मक्षेत्र है। जिसने अपने-अपने पंथ के लिए पगदंडी बनाई है, इनकी यह बात नहीं है! यह आकाश जैसे विशाल विचार का प्रतिपादन है।

युवा अपना एक पंथ तय कर ले। एक ग्रंथ चाहे 'रामायण' हो, 'महाभारत' हो, 'कुर्रान' हो, बाईबल हो पर ग्रंथ तय कर ले। मुझे कोई आपत्ति नहीं है। एक अच्छा उपन्यास उन्नत बना दे, आलोकित कर दे तो वह उपन्यास ग्रंथ का उजाला देता है। एक कविता, एक गज़ल, गुरुग्रंथ साहब हो, ज्ञानेश्वरी हो। एक ग्रंथ जीवन में रखिए। जीवन में एक ही कंत माने पति रखिए। अपने जीवन में एक इष्टदेव रखे। कब तक भटकते रहेंगे? आप अपने घर में अनेक स्वरूप रखिए। पर आपके लिए एक निश्चित स्वरूप रखिए। इतने भगवान रखिए! आपकी श्रद्धा को नमन करता हूं। जल्दबाजी में ओफिस जाते समय वहम हो आता है कि गणपति बिना तिलक के तो नहीं रह गए? गणपति विघ्न डालेंगे तो? व्यर्थ क्यों वहम खड़े करें? कोई एक पकड़ लीजिए। कई तो खाली पादुका लेकर बैठ जाते हैं। कोई एक कंत होना चाहिए।

जीवन में एक शास्त्र, एक संत होना चाहिए। शास्त्र माने वह ग्रंथ कहा पर शास्त्रों में नहीं ऐसा कोई बुद्धमुख से निकला हो जिसका शास्त्र अनुसरण करे ऐसे कुछेक शास्त्र ऊपर से उतरते हैं। ऐसे अंदर से उर्ध्वगमन करनेवाले एकाद कोई सूत्रात्मक शास्त्र पकड़ लेना चाहिए। यौवन में यह व्यवहार हो। एक अच्छा पात्र ढूंढ लेना चाहिए। हमारे कुल की खानदानी का निर्वाह करे। हमारे आचार-विचार का रक्षण करे। हमारी आस्था के केन्द्र में सिर झुकाए। जब तुलसी 'अयोध्याकांड' का आरंभ करते हैं तब मार्गदर्शक बनते हैं और आदर्श दाम्पत्य का श्लोक लिखकर बोध देते हैं।

शिव के बाई ओर पार्वती है। मंगलाचरण का पहला मंत्र है। शृंगार रस के श्लोक की उस समय क्या आवश्यकता थी? युवाओं को संदेश दिया, तेरी धर्मपत्नी को अपने पार्श्व में रखना, प्रसन्न रखना। मेरे सिर पर गंगा

है उसी तरह तेरे सिर पर विवेक की गंगा रखना। समाज में मर्यादा न टूटे। दोनों विवेक से बैठना। यौवन में तेरे भाल पर तेजस्विता होनी चाहिए। तेज बिना संयम के आता नहीं। तप के बिना नहीं आता। पर तप बहुत कठिन है। संयम से तेज है। समाज में देखते हैं पुत्रियां क्यों तेजस्वी लगती है? दूल्हा क्यों ऐसा नहीं लगता? दुल्हन ने गोरमा की पूजा की है। गौरी की स्तुति की है। व्रत रखे हैं। तेरे भाल में संयम का तेज होना चाहिए। पर यौवन में नीलकंठ बनना। यौवन में समस्या का विष पीना होगा। मेरी रामकथा में विष की यही व्याख्या है। जीवन में आती विषम परिस्थिति ही विष है। नीलकंठ बनना। तू पी जायगा तो अंदर से जल जायगा और तू उल्टी करेगा तो तेरे परिवार को कष्ट होगा। सर्प के आभूषण पहने इसका यह अर्थ है कि यौवन में अलंकार पहनिए पर 'जे पोषतुं ते मारतुं एवो दिसे क्रम कुदरती।' कलापी ने कहा है। भूषण भुजंग न बन जाय, भूषण सर्प बनकर डंक न मारे। भूति का अर्थ है भस्म। दूसरा अर्थ है विभूति, ईश्वर-ऐश्वर्य। यौवन का अर्थ कायम यौवन रहेगा ऐसा नहीं है। वो एक बार भस्म हो जायगी। इसका ध्यान रखना। दूसरे मंत्र में राम को राजतिलक लगाने की बात आई तब कोई प्रसन्नता नहीं हुई। चौबीस घंटे में बनवास की बात आई तब कोई खेद, ग्लानि नहीं। कभी सफलता-निष्फलता में चौबीस घंटे का ही अंतर रहता है। चौबीस घंटे पहले सफलता हाथ में थी और तत्पश्चात् निष्फलता आए तब तू अपना चेहरा रघुनाथ की तरह प्रसन्न रखना।

'अयोध्याकांड' यौवन का कांड है। गुरुकृपा से व्यासपीठ को ऐसे अर्थों की जानकारी है। फिर राम ब्याह कर आए तब अनराधार सुख बरसता है। पर अति वर्षा भी विपत्तिजन्य है। चेन्नई को लीजिए। अतिवृष्टि भी दुःख है। जीवन में सुख की वर्षा होनी चाहिए। फिर धूप निकलती चाहिए ताकि गीले कपड़ें सूख जाय। चूल्हे भी जले। जीवन में थोड़ा दुःख भी आवश्यक है। यह तो सापेक्ष है। तुलसी ने 'अयोध्याकांड' में सुख का इतना सारा वर्णन किया कि फिर बनवास का दुःख आया। यह चक्र घूमता रहेगा।

'अयोध्याकांड' की यात्रा आगे बढ़ती है। अपने पास कल का दिन है जिसमें ढाई-तीन घंटे है। छः कांड बाकी है! चिंता न कीजिए। ठाकुरजी ने नरसिंह मेहता का पूरा कर दिया उसी तरह मेरा भी पूरा कर देंगे। तुलसीजी ने शास्त्रकार-वक्ताओं को एक सविनय विवेकपूर्ण इस्तेमाल करने का अधिकार दिया है। वो प्रसंग का व्यास भी कर सके और समास भी कर सके। पर ये गुरुकृपा से हो सके। कल समास पद्धति से विहंगावलोकन करते-करते मूल केन्द्रीय विचार 'मानस-स्वच्छता' के उपसंहारक सूत्रों की हम चर्चा करेंगे।

व्यासपीठ पर से एक साधु की नम्र बिनती है। अन्यथा भत लेना। महामहिम राष्ट्रपति से दसवां हिस्सा शुरू होना चाहिए। पी.एम.साहब, राज्य के सी.एम., धारासभ्य, राज्यसभा के सभ्य, अधिकारी सब दसवां हिस्सा निकाले। सरकार आपको दे उसीमें से आप ग्रान्ट दे यह तो प्रजा का धन है। उसका इस्तेमाल तो कीजिए ही क्योंकि यह देश का धन है। पर आप निजी आय में से भी निकालिए। क्या आपको दसवां हिस्सा लागू नहीं होता? मैं तो साधुओं, संस्थाओं, आश्रमों को भी कहता हूं कि आपके धर्मस्थानों में भी श्रद्धालु जगत आपको जो भी दे, आप दूसरों के लिए इस्तेमाल करते हैं, तो जगत को प्रेरणा देने के लिए आपके आश्रम की आय में से भी वंचितों के लिए दीजिए।

९

सत्संग भय का कचरा दूर कर हमें अभय बनाता है

हम नौ दिनों से 'मानस-स्वच्छता' विचार को लेकर बातें संवाद के रूप में कर रहे हैं। 'मानस' में 'स्वच्छ' शब्द एक ही बार आया है। 'पवित्र' शब्द चार बार आया है। 'शुद्ध' शब्द आठ बार आया है। इनको पर्याय मानी सगोत्र मान ले; बाकी शुद्ध, पवित्र, स्वच्छ इन सबके अलग-अलग अर्थ अपने विद्वान करते हैं। इवन 'भगवद्गोमंडल' या तो अलग-अलग शब्दकोशों में भी इनके अलग-अलग अर्थ प्राप्त होते हैं। पांच बार 'विशुद्ध' शब्द आया है। जहां संस्कृत का थोड़ा स्पर्श तुलसी ने किया वहां 'विशुद्ध' शब्द है।

विश्ववंद्य गांधीबापू का विचार स्वच्छता अभियान मेरी मति अनुसार रखा। मैंने वेदकाल से स्वच्छता अभियान की बात की। श्लोक से लोक तक सतत स्वच्छता अभियान ही चलता है। आखिर 'रामायण' की कथा क्या है? स्वच्छता अभियान ही है। 'महाभारत' का पूरा अभियान क्या है? स्वच्छता अभियान ही है कि समाज में जो ठीक नहीं है उसकी सफ़ाई हो। साहित्य भी क्या करता है? मेरी दृष्टि से स्वच्छता अभियान है। अमंगल को दूर करता है। हम में मंगल स्थापित करे; अशुभ दूर करे। यही स्वच्छता अभियान है। डोक्टर भी स्वच्छता अभियान करते हैं। मानव के रोग दूर कर स्वस्थ कर दे। सभी जगह स्वच्छता अभियान चल रहा है।

'मानस-स्वच्छता' को केन्द्र में रखकर काफी बातें की। मुझे तो 'मानस' को केन्द्र में रखकर बात करनी होती है। हमारे जीवन में एक जो कचरा है, अस्वच्छता है वो बात मैं शेर करता हूं। उसका नाम है भय, डर। भय

अस्वस्थ करता है। अभय स्वच्छता का प्रमाणपत्र है। संतवाणी और भजन में अभयपद की बात आती है। 'रामायण' भी इस शब्द का स्वीकार करती है। भय कचरा है। इसकी सफ़ाई होनी चाहिए। कईयों के जीवन में भय बहुत होता है। आदमी सतत भय में जीता है। यूं होगा? नही होगा? भय एक कचरा है। डराता है। हमारे अंदर की गलियों में भय पड़ा है। हमारी अंदर कई गलियां है। सत्संग क्या है? हमें भय के कचरे से दूर कर अभय बनाते हैं। कई आदमियों को सर्दी का भय होता है। कईयों को गर्मी का। किसी को रोग का भय लगता है। किसी को कार्य की सफलता-निष्फलता का भय लगता है।

युवा भाईयों-बहनों, यह भयरूपी कचरे को निकालकर हम कैसे निर्भय बन सके? इसका क्या साधन है? इसका उपाय क्या है? आप इतनी शांति से व्यासपीठ को सुनते हैं अत: आपके सामने बात रखने की इच्छा होती है कि हमारे अंत:करण में से भयरूपी कचरे को निकालना हो तो सत्य बड़ा साधन है। सत्य भयमुक्त करता है। गांधी इतने निर्भय क्यों थे? बंदूक की नोंक के सामने भी यह आदमी इतना निर्भय क्यों रहा? 'मानस' के पात्र रावण के मन में भी भय है। अंदर भी भय है। भय के कारण वह सच्चा संन्यासी नहीं था। सच्चा पति नहीं था। सच्चा साधु नहीं था। नकली बनकर जानकी की कुटिया के पास गया है। तुलसीदासजी को लिखना पड़ा, जिसके भय से देव-दानव कांपते हैं ऐसा रावण एक अबला की कुटिया के सामने भयभीत है! क्योंकि वहां सत्य नहीं है। सत्य का झाड़ू भय के कचरे को साफ़ करता है।

तो भय एक कचरा है। कई बार वक्ता को भय लगता है कि मैं सफल रहूंगा? एक-एक क्षेत्र में भय है! बहू को कितना भय? इस में सास बाकात है! यह तो मजाक करता हूं! भय सबको सताता है। हम सत्य को निभा सके तो भय का कचरा दूर हो जाय। गंभीरता से प्रयत्न कर सके। सत्य एकमुख है। सत्य दसमुखी नहीं है। गुरुकृपा से मेरी समझ में आया है कि सत्य एकवचन है।

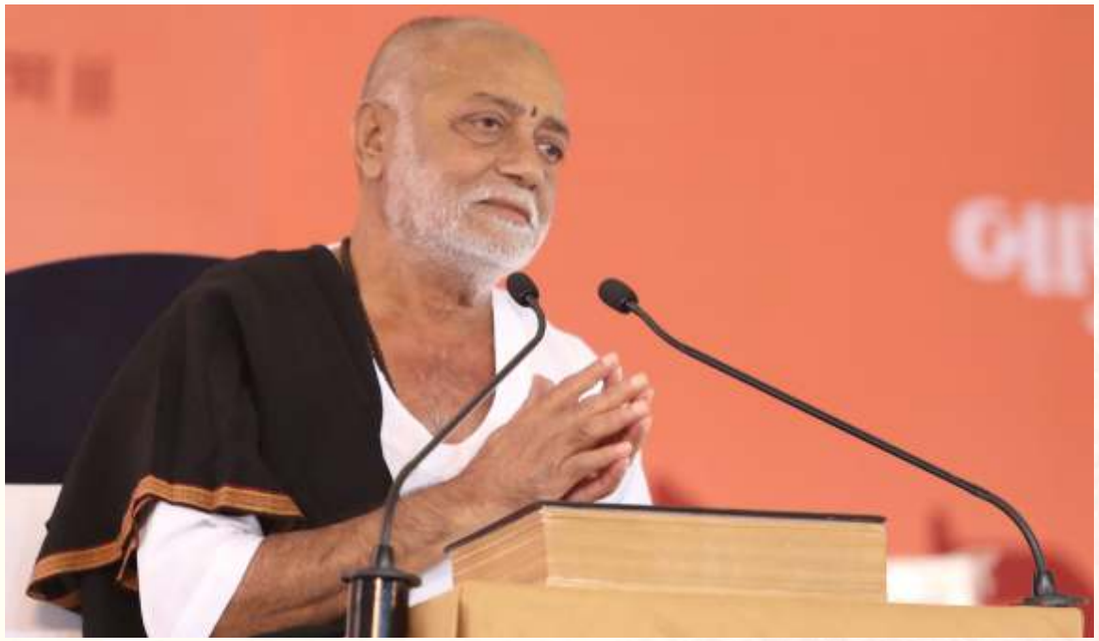

बोला सो बोला। कल किसीने पूछा, गंगासती के भजन में 'वचन विवेकी पानबाई' आता है यह कौन-सा वचन है? व्याकरण की भाषा का एकवचन है। सत्य एकमुखी है। सत्य जितनी मात्रा में आए, हम अंदर की गली स्वच्छ कर सके।

अनावश्यक संग्रह भी कचरा है। फिर वह जरूरत से ज्यादा विचार हो तो भी कचरा। जरूरत से ज्यादे फोलोअर्स को कचरा कहे तो बुरा मान जाए! गांधीबापू ने कहा, 'वणजोतुं न संघरवुं।' एकादश व्रत में, बराबर? मन में अधिक मात्रा में विचार संग्रहित हो तो कचरा है। बुद्ध सम्यक् विचार की बात करे। आपके पास अधिक व्यक्ति हो ऐसा अहंकार भी कचरा है। लोग कहे कि मेरे इतने अनुयायी है! मेरी बात को इतने लोगों ने लाईक की! जिस दिन तेरा भीतर लाईक करे उस दिन तुम समझना तू लायक है। कविता की भाषा बोलता हूं! आप उदार हैं। श्रवण के लिए आये हैं। नहीं तो इतनी बड़ी भीड़ कैसे शांत रहे? अति व्यक्ति का जमावडा, अति विचार, अति विषय यह भी कचरा है। हम भीतर से अस्वच्छ हैं।

तो उसका उपाय क्या है? उसका उपाय है त्याग। सब कुछ फेंक देना त्याग नहीं है। परंतु सम्यक् संग्रह रखना है। ये बहनें नौ दिनों से कांत रही है। इतने दिनों कांतने के बाद कपड़े का पहला थान मुझे दिया। इसमें से मैं कुर्ता बनाऊंगा। सर्दी की कथा में पहनूंगा। क्योंकि यह थोड़ा मोटा है। मैं वर्षों से खद्दर पहनता हूं। छू लूं तो पता चले कि कितने पोईन्ट, कितनी मात्रा में खद्दर है। कीमत का भी पता रहता है। व्यापार नहीं करना है। मुझे शाल ओढ-ओढ़कर पता लगता है यह डेढ़ सौ की होगी! समाज को प्रार्थना करूं, साधु-संतों को बहुत शाल मत दीजिए। उनको एक-एक मशाल दीजिए। कबीरी करिए। कबीर ने शाल बुनी। फिर मशाल भी दी। साधु-संत भी यही कर रहे हैं। शाल आदर का प्रतीक है। समाज को जोड़ने का काम करना। ताना-बाना बुनिए। राम की चद्दर है। यह कबीरा की चद्दर है। साधु-संत भी यही काम करते हैं। समाज को जोड़ रखिए। अत्यंत संग्रह रोग है। उपाय है सम्यक् त्याग; समझदारी से हटाना।

प्रेम हमें त्याग सीखाकर संग्रह के रोग में से मुक्त करता है। कचरे में से मुक्त करता है। सत्य एक मुखी है, प्रेम त्रिमुखी है। उसका एकमुख पवित्रता है, इस शब्द का उपयोग तुलसी ने चार बार किया है। दूसरा मुख्य प्रेमी में पूर्ण श्रद्धा। 'मानस' में लिखा है, 'मोहे रघुबीर भरोसो', प्रेममूर्ति भरत कहते हैं, मुझे रघुवीर पर भरोसा है। सूरदास कहते हैं, 'भरोसो दृढ इन चरनन केरो।' इसी तरह 'श्रद्धा रूपेण संस्थिता।' बिना श्रद्धा के प्रेम नहीं हो सकता। 'बिनु बिस्वास भगति नहीं।' बिना बिश्वास भक्ति नहीं हो सकती। परस्पर भरोसा रखिए। परस्पर प्रेम रखिए। दीवार हो तो छत टिके। छत बराबर हो तो दीवार टिके। नहीं तो बारिश में दीवार गिर पड़े। दीवार बराबर न हो तो छत गिर पड़े।

प्रेम का तीसरा मुख समर्पण है। बलिदान ये उसका तीसरा मुख है। भरत प्रेममूर्ति है। प्रेम के कारण उसने संग्रह के रोग का त्याग किया है। भरत के पास पवित्र प्रेम है। दूसरा हरि पर भरोसा। वह जो कहे वही बराबर। तीसरा समर्पण। कल मैं दसवें हिस्से की बात कर रहा था। कल एक युवक कहने लगा, मेरी तनख्वाह में दस प्रतिशत बढ़ोतरी हुई तो मैं दशांश कर डालूं? मैंने कहा, जल्दबाजी न कर। पर इसी विचार से समर्पण जगता है। यही वचन विवेक है। और क्या? यह आंतरिक सफ़ाई की बात है। बाह्य सफाई अभियान का परिणाम आयेगा ही। पर जब तक मानसिक स्वच्छता नहीं होगी तब तक अपूर्णता है। कईयों को तो शरीर में भी स्वच्छता अभियान करना पड़े! वही मानसिकता है! शरीर की सफ़ाई में ध्यान नहीं तो मानसिक स्वच्छता कहां से आए? शरीर की अस्वच्छता से कितने रोग होते हैं! ये भी हमें सोचना चाहिए।

तीसरा कचरा हिंसा है। आक्रमकता, कठोरता। मेरी व्यासपीठ की दृष्टि से हिंसा हमारे अंत:करण का तीसरा कचरा है। मन के हिंसक भाव किसी को नष्ट कर देते हैं। समाज में कई लोग आक्रमक होते हैं! चोटीला की कथा में बड़ी जिम्मेदारी से माताजी की सहमति से अर्ध्य स्वीकारने को कहा, 'या देवी सर्वभूतेषु अहिंसा रूपेण संस्थिता।' यह देवी की स्थापना जरूरी है। भले ही माताजी की स्तुति में 'अहिंसा रूपेण संस्थिता' नहीं है। मुझे पता है। शांतिरूपेण, श्रद्धारूपेण वे सभी स्वरूप है। बलिप्रथा हमें बंद करवानी होगी। अपनी अहंता-ममता का बलिदान कर दीजिए माँ के सामने। माँ के सामने अहंता-ममता की बलि चढ़ा दीजिए। तुलसीदासजी ने 'विनयपत्रिका' में कहा है, आपको यज्ञ करना ही है, नौरात्रि मनानी है, मनाइए। यज्ञ में शंका, वहम और अंधश्रद्धा के समिध जलाईए। बलि इन सबकी दीजिए। हिंसा, कठोरता-आक्रमकता कचरा है। आंतरिक सफ़ाई करनी है। इसका उपाय मेरी दृष्टि में करुणा है। कठोरता कैसे निकले? करुणा से जाय। आक्रमकता, हिंसा करुणा से जाय। 'करुणा रूपेण संस्थिता।' जगदंबा है। हमारे भीतर द्वारा स्वच्छ कर सके।

मेरी दृष्टि से करुणा पंचमुखी है। सत्य एक मुखी, प्रेम त्रिमुखी और करुणा पंचमुखी है। करुणा शंकर है। 'कर्पूर गौरव करुणावतारं।' शंकर के पांच मुख है। गरुकृपा से करुणा के पांच मुख समझ में आए हैं। करुणा का पहला मुख आंसू है। आंसू बहाती आंख देखिए। शायद ऐसी आंख हरि की भी नहीं होगी! आध्यात्मिक जगत में आंख की महिमा है। ज्ञान में पंख की महिमा है। करुणाजगत में आंख की महिमा है। सत्य जिह्वा पर, प्रेम हृदय में और करुणा आंख में रहे, ऐसा नियम है। बच्चे का प्रथम संपर्क माता की करुणा के साथ होता है। उसकी लोरी के सत्य के साथ, हृदय के दूध के साथ होता है। मेरी समझ अनुसार करुणा का एक मुख अश्रु है। साहब, करुणावान रो देते हैं। हिंसा नहीं, आक्रमकता नहीं करे, दो आंसू गिरा देंगे। शायद करुणा को कहना पड़े, मेरी कोई सुनता नहीं है! मैं अरुण्यरुदन करता हूं! ये शब्द गांधीजी के है। मुझे लगता है, मेरा भी अरुण्यरुदन चल रहा है।

करुणा का पहला मुख आंसू है। दूसरा मुख आश्रय है। मेरी जिम्मदारी से मेरी दृष्टि से, तलगाजरडी दृष्टि से, तीसरा मुख है दोषदर्शन न करना। करुणा दोषदर्शन न करे। करुणा का तीसरा मुख अच्छाई देखना है। माँ को विकलांग बच्चा विकलांग नहीं दिखता। वह दुलारा-प्यारा लगता है। यह तीसरा एक महत्त्वपूर्ण दर्शन है। करुणा दोषदर्शी नहीं, गुणदर्शी है। चौथा मुख सहनशीलता है। जिनमें ज्यादा करुणा है उसे ज्यादा सहन करना पड़ता है। कोई पूछे, कहां तक सहन करे? सहनशीलता को तराजू पर नहीं तौल सकते। सहन करना करुणा का स्वभाव है।

ये सब कचरे को साफ़ करने थोड़े से उपाय है। भय, अनावश्यक संग्रह, आक्रमकता, कठोरता, उग्रता जैसे कचरे को साफ़ करने हमें सत्य, प्रेम और करुणा के प्रयोग करने पड़ेंगे। गांधीजी ने सत्य के प्रयोग किए। ईसुने प्रेम के प्रयोग किए। बुद्ध ने करुणा के प्रयोग किए। अवतारी पुरुषों ने काफ़ी सफ़ाई की। अब फ़िर से नई सफ़ाई की जरूरत है।

इस कथा में हम आंतर्-बाह्य स्वच्छता की बातें करते थे। संवाद रचते थे। इस केन्द्र को याद रखियेगा। कथा के छ: कांड बाकी है। मेरी शुरू से यही दशा है! पर क्या करे यार? 'अयोध्याकांड' में दशरथजी सभा में बैठे है। दर्पण में देखा तो पाया कि मुकुट टेढा हो रहा है। इसका अर्थ है कि योग्य उत्तराधिकारी को राज्य सौंप देना चाहिए। यह विचार दर्पणदर्शन से आया है। अयोध्या में दर्पण है यह बड़ी बात है। लंका की करुणा यह है कि वहां दर्पण ही नहीं है! सुवर्ण है पर छोटा-सा

दर्पण नहीं है! वहां निज दर्शन नहीं है, परदर्शन है। अयोध्या में निजदर्शन है। गुरु की आज्ञा से राम को गद्दी देने का निर्णय किया। गुरुजी ने कहा, अभी ही कर डाले। पर दशरथ ने एक दिन की मुद्दत दे डाली। एक रात बीच में आई। कैकेयी की ममता की रात आई। मंथरा ने कैकेयी की बुद्धि भ्रष्ट कर दी। कैकेयी ने दो वरदान मांगे।

राम को राज्य मिलने के बदले वनवास मिला। भगवान राम-लक्ष्मण-जानकी वनयात्रा करते-करते चित्रकूट पहुंचे। खाली रथ लेकर सुमंत पहुंचे। पुत्र वियोग के कारण दशरथ ने छ: बार 'राम' बोलकर प्राणत्याग दिए। भरत को समाचार भेजे। पितृक्रिया हुई। सभी चित्रकूट आए। चर्चा शुरू होती है। जनकराज भी जनकपुरी से आए हैं। निर्णय हुआ, प्रभु प्रसन्न रहे ऐसा हम करे। यह प्रेम का समर्पण है। निर्णय किया गया कि भरत चौदह वर्ष तक अयोध्या में रहे और राम वन में रहे। भरत की आंख में आंसू देखकर राम को लगा, चौदह वर्ष के लिए भरत को कुछ चाहिए। उसे पद नहीं, पादुका चाहिए। सत्ता नहीं, सत् चाहिए। प्रभुता नहीं, प्रेम चाहिए। इसीलिए स्वयं भगवान ने पादुका दी है। अयोध्या और जनकपुर समाज बिदा लेता है।

एक दिन भरतजी वशिष्ठजी के द्वार पर गए हैं, 'आप आज्ञा दे तो मैं नंदिग्राम में निवास करूं? वल्कल पहनूं? मेरा हरि बन में रहे तो मैं यहां कैसे रहूं?' वशिष्ठजी बरिष्ठ है। इनमें विशिष्ट प्रज्ञा है। उन्होंने कहा, भरत, मुझे ऐसा लगता है, हम जो कहे वो धर्म है पर तू जो कहे यह धर्म का सार है। तो मैं सहमत हूं। राम जननी तेरे कारण जी रही है पर जिस दिन माँ का दिल दुखाया तो तेरी रामभक्ति सफल नहीं होगी। पहले माँ कौशल्या की आज्ञा ले। भरत कौशल्या के पास जाते हैं, 'माँ, मेरा जन्म तुझे दु:ख देने के लिए हुआ है! मेरा जन्म न हुआ होता तो राम को बन में न जाना पड़ता। लक्ष्मण भी न गया होता। जानकी भी नहीं। तुझे वैधव्य भी न मिलता। सभी का कारण मैं हूं। मैं ही दु:ख दाता हूं। तो हे माँ, एक दु:ख ज्यादा सहन कर लेना। मैं नंदिग्राम में रहूं? झोंपडी में रहूं? वल्कल पहनूं? मेरा हरि वहां होगा तो मैं यहां जी नहीं पाऊंगा।' एक क्षण में माँ ने गांठ बांध ली कि भरत को जीवित रहने देना है तो वो जैसा खुश रहे ऐसा ही करना पड़ेगा। भरत के सिर पर हाथ रख कहा कि बाप, तेरा मन नंदिग्राम में लगता है तो जाओ। जीवन में कैसे कडुए घूंट पीने पड़ते हैं!

'अयोध्याकांड' पूरा होता है और 'अरण्यकांड' शुरू होता है। चित्रकूट में तेरह वर्ष रहकर राम स्थलांतर करते हैं अत्रि के आश्रम में। अत्रि ने प्रभु की स्तुति की -

नमामि भक्त वत्सलं । कृपालु शील कोमलं ।।
भजामि ते पदांबुजं । अकामिनां स्वधामदं ।।

वहां से आगे बढ़कर सरभंग, सुतीक्ष्ण महात्माओं को मिलते हुए प्रभु कुंभज ऋषि के पास आए। आसुरी वृत्ति की सफाई हेतु चर्चा हुई। प्रभु के पंचवटी में निवास की सलाह हुई। जटायु से मिले। उनके साथ मैत्री की। भगवान पंचवटी में गोदावरी तट पर निवास करते हैं। लक्ष्मणजी ने पांच आध्यात्मिक प्रश्न पूछे। प्रभु ने जवाब दिए। पंचवटी में एक दिन शूर्पणखा आई। दंडित हुई। खर-दूषण के उत्तेजित होने पर उन्हें निर्वाण दिया। रावण मारीच को साध जानकी का अपहरण करवाता है। गीधराज जटायु ने बलिदान दिया। सीता अपहरित हुई। अशोकवाटिका में रावण उन्हें रखता है। मारीच का वध कर निर्वाण दिया। भगवान लौटते हैं। जानकी बिना की शून्य पंचवटी देखकर मानवलीला करते रामजी रुदन करते हैं। मानवलीला में राम को रोना ही चाहिए। सीताखोज में जटायु मिलते हैं। उनका अग्निसंस्कार किया। पितातुल्य आदर दिया। फिर शबरी के आश्रम में आए। नवधा भक्ति की चर्चा हुई। शबरी योगाग्नि में शरीर अर्पण कर देती है। भगवान नारद को पंपा सरोवर में मिलते हैं।

'अरण्यकांड' पूरा हुआ। 'किष्किन्धाकांड' में राम-लक्ष्मण जानकी की खोज करते आगे बढ़े। सुग्रीव ने दूर से देखा। हनुमानजी को भेजा। यहां से 'मानस' में उनकी एन्ट्री होती है। हनुमानजी ब्राह्मण के रूप में आते हैं। रामजी का परिचय हुआ है। हनुमानजी के माध्यम से सुग्रीव-राम की मैत्री होती है। प्रसंग का सार यह है कि हनुमान के माध्यम से सुग्रीव जैसे विषयी जीव का विश्वास का घनीभूत रूप कह सकते हैं ऐसे राम की भेंट हुई। इसका अर्थ यह हुआ कि हनुमानजी जैसे जागृत बुद्धपुरुष को मिलने पर हम जैसे विषयी जीव की मैत्री राम से हो सकती है, ब्रह्म से हो सकती है। ऐसा हो तो हमारे अंदर के वालि का नाश हो। अहंकार का निर्वाण होता है। प्रवर्षण पर्वत पर भगवान चातुर्मास करते हैं। सुग्रीव को राज और अंगद को युवराज पद मिला। चार माह बीत गए। सुग्रीव विषयी होने के कारण राम को दिया वचन भूल जाता है। प्रभु ने लक्ष्मण को भेजकर थोड़ा सावधान किया।

जानकी खोज का अभियान चला। दसों दिशाओं में बंदर भेजे गए। दक्षिण टुकडी के नायक अंगद है। हनुमानजी सभ्य है। मार्गदर्शक जामवंत है। आखिर में हनुमानजी नमन करते हैं। प्रभु ने मुद्रिका दी। हनुमानजी पर्वताकार बनते हैं। युवाओं को भगवत्कार्य करने हेतु, राष्ट्रकार्य के लिए निकलना हो तो जामवंत जैसे मार्गदर्शक के पैर छूकर शुभकामना लेकर निकलना है। हनुमानजी ने हमें ऐसा बोध दिया। हनुमानजी लंका में प्रवेश करते हैं। वे एक-एक मंदिर में घूमते हैं पर सीता कहीं दिखी नहीं। विभीषण ने सीतादर्शन हेतु युक्ति पूछी। विभीषण वैष्णव है। वैष्णव भक्तिदर्शन की युक्ति बता सकते हैं। हनुमानजी सीता तक पहुंचते हैं। बीच में रावण आता है। माँ दु:खी देखी। हनुमानजी ने मुद्रिका डाली। प्रकट हुए। परिचय दिया। पुत्र जैसा स्नेह कर आशीर्वाद दिए। हनुमानजी ने फल खाए। राक्षस मारे गए। अक्षयकुमार का क्षय किया।

हनुमान को बांधकर लंका में ले गए। मृत्युदंड की बात होती है। विभीषण आते हैं। उसने नीति प्रयोग

किया। फिर पूंछ जलाने की बात हुई। पूंछ जले तो पूर्णभक्ति प्राप्त हो। पूंछ जलनी चाहिए। उसके जलने से पूर्णभक्ति प्राप्त होती है। हर एक को छोटी-बड़ी पूंछ होती है। पर पूंछ दिखाई नहीं देती, मूंछ दिखती है! पूंछ क्या है? पांच में पूछा जाऊं! पांच लोग मुझे पूछ-पूछ कर काम करे! यह अहंकार जलना चाहिए। उसकी प्रतिष्ठा को जलाने के नेटवर्क बनाए रखे हैं! उसको जलाने की योजना करे पर हनुमानजी जैसा रामोपासक होना चाहिए। माँ को पा चुका हो तो उसको जलाने की कोशिश करेगा उसकी मान्यताओं को ही जला देगा और सत्य समझायेगा। हनुमानजी समुद्र में स्नान करते हैं। माँ ने चूडामणि दिया। सब प्रभु के पास आए। जामवंत ने उस समय राम को हनुमंतकथा सुनाई। इस ओर रावण की सभा मिली। रावण ने विभीषण का त्याग किया। विभीषण राम की शरण में आता है। विभीषण ने कहा, व्रत रखिए। तीन दिन बैठिए। समुद्र हमें मार्ग दे तो बल प्रयोग न करे। तीन दिन पूरे हुए। समुद्र ने कोई जवाब नहीं दिया। तब भगवान ने बाण चढ़ाया। तब समुद्र ब्राह्मणरूप लेकर प्रभुशरण आता है, 'आप सेतु बनाइए।' सेतुबंध राम का स्वभाव है। यह निर्णय किया गया। 'सुन्दरकांड' समाप्त हुआ।

'लंकाकांड' के आरंभ में सेतुनिर्माण हुआ। प्रभु ने कहा, यह उत्तम धरणी है। मेरी इच्छा है, शंकरस्थापना करूं। शिव का स्थापन हुआ। लंका में प्रभु का प्रवेश हुआ। इस ओर रावण अपने अखाडे में आता है। बहुत बड़ी मेहफ़िल जमी है। दूसरे दिन पुन: समाधान का प्रयोग हुआ कि रावण मान जाय तो युद्ध नहीं करना है। अंगद गया। संधि नहीं हुई। युद्ध अनिवार्य बना। बहुत बड़ा युद्ध चलता है। प्रभु एक के बाद एक को निर्वाण देते हैं। आखिर में रावण को भी निर्वाण देते हैं। विभीषण का राजतिलक हुआ। हनुमानजी ने सीताजी को समाचार दिए। माँ जानकी अग्नि में से बाहर निकले। सीता-राम का पुन: मिलन हुआ। पुष्पक तैयार हुआ। प्रभु और मित्रवृंद अयोध्या की यात्रा के लिए उड़ान भरते हैं। कुंभज आदि ऋषि के आश्रम में जाते हैं। इस ओर हनुमानजी अयोध्या पहुंचते हैं। पूरा निषादकुल प्रभु को मिलने दौड़े हैं। भगवान ने केवट से कहा कि तूने नौका में बिठाया था तो उतराई बाकी है। बोल, अब क्या दूं? तो कहे, यह तो दूसरी बार दर्शन करने की मेरी चतुराई थी! केवट सजल नयनों से बोला, मैंने आपको नौका में बिठाया था। आप मुझे अयोध्या पुष्पक में बिठाकर न ले जाय? प्रभु ने छोटे समाज को आदर दिया। 'लंकाकांड' पूरा होता है।

'उत्तरकांड' के आरंभ में करुणरस छाया हुआ है। भगवान कब आयेंगे और नहीं आये तो क्या होगा? हनुमानजी ने डूबते को जहाज मिले इस तरह भरतजी को समाचार दिए। उन्होंने रामजी को भी समाचार दिए। पुष्पक हवाई जहाज अयोध्या पर ऊतरा। जो भालू और बंदर प्रभु के साथ बैठे थे वे ऊतरे तब मनुष्य अवतार में थे। रामकथा एक ऐसा अभियान है कि बंदर और भालू को मनुष्य बना दे। प्रभु ने जन्मभूमि को प्रणाम किया। गुरुदेव को प्रणाम किया। भरत-राम आलिंगनबद्ध हुए तब पता न चला कि इसमें कौन राम है या कौन भरत है? प्रभु ने ऐश्वर्य के साथ अमित रूप धारण किया। सभी को भावानुसार प्रभु दिखते हैं। प्रभु को लगा, कैकेयी लज्जित है तो सबसे पहले वहां गए। फिर कौशल्या-सुमित्रा से मिले। वशिष्ठ ने दिव्य सिंहासन मंगवाया। राम सिंहासन के पास नहीं गए, सिंहासन राम के पास आया। सत्ता सत्य के पास आई है। पृथ्वी, माताएं, दिशाएं, भास्कर, जनता सब को प्रणाम कर प्रभु विनम्रता से जानकी सहित बिराजमान हुए। विश्व को रामराज्य देते हुए प्रथम तिलक ठाकुर के भाल में किया। तुलसी कहते हैं -

प्रथम तिलक बसिष्ट मुनि कीन्हा।
पुनि सब बिप्रन्ह आयसु दीन्हा।।

रामराज्य का स्थापन हुआ। वेदों ने स्तुति की। मित्रों की आवमगत की गई। भगवान ने हनुमान के सिवा सबको बिदाई दी। क्योंकि छ: माह हो जाने पर सबको घर याद आ रहे थे। भगवान ने मनोवैज्ञानिक सूत्र पकड़ा कि आप सब यहां रहकर आपके संसार को याद करे इससे अच्छा है कि आप अपने संसार में जाईए। वहां जाकर मुझे याद करना। प्रभु कितने प्रेक्टिकल है! हरि कितने व्यावहारिक है!

भगवान ने नरलीला बताई। जानकी ने दो पुत्रों को जन्म दिया। उसी तरह तीनों भाईयों के यहां दो-दो पुत्र जन्मे हैं। अयोध्या के वारिस की बात कर रघुकुल कथा तुलसी ने पूर्ण कर दी। सीता का दूसरी बार का त्याग विवाद-अपवाद है। तुलसी को संवाद चाहिए। शायद तुलसी की इच्छा है सीता-राम की छबि यों बरकरार रहे। अब इन्हें अलग नहीं करने हैं। बाद की कथा में कागभुशुंडिजी का चरित्र है। भुशुंडि के आश्रम में याज्ञवल्क्य ने कथा पूर्ण की या नहीं यह नहीं बताया है। महादेव पार्वती सन्मुख कैलास के ज्ञानपीठ पर कथा कहते हैं। शिव ने भी कथा को विराम दिया है। गोस्वामी तुलसी भी शरणागति घाट पर बैठकर अपने मन को कथा कहते थे। उन्होंने अंतिम संदेश दिया कि शठ मन, तू राम भज। मतिमंद तुलसीदास पर थोड़ी कृपा हुई तो वह परमविश्राम को पा गया।

बाप! इन चार आचार्यों ने अपने-अपने घाट से रामकथा को विराम दिया। इन सभी का आश्रय लेकर नौ दिनों के लिए एक बार फिर अहमदाबाद में तुलसी वल्लभनिधि ट्रस्ट द्वारा आयोजित इस रामकथा का पवित्र हेतु, स्वच्छता हेतु आयोजित रामकथा को मेरे तलगाजरडा घाट से बिदा देता हूं। मैं व्यासपीठ पर से नीचे ऊतरता हूं तब मेरी मानसिकता यही रही है कि सबकुछ कह दिया है और बहुत कुछ बाकी रह गया है!

'मानस-स्वच्छता' केन्द्रीय विचार बना। संवादी सूर में बातें की है। मेरे केन्द्र में युवा है। नौ दिनों की 'मानस-स्वच्छता' कथा में से बाह्य-स्वच्छता और आंतरिक शुचिता का कोई सूत्र, कोई बात, कोई चौपाई आपके स्वभाव के अनुकूल मिले उसे अपना दीपक समझना। अच्छा लगा हो तो सोचिए। बाकी नौ दिन मौज की यह नुकसानी का धंधा नहीं है। मुझे तो इतना ही कहकर जाना है कि होश में रहिए। विवेक में रहिए। हम अपने राष्ट्र को स्वच्छ रखें और अंतर को भी पवित्र रखें। आशीर्वाद देने का अधिकार नहीं है। हैसियत भी नहीं है। व्यासपीठ पर बैठा हूं अत: प्रभु को प्रार्थना कर सकता हूं। सबका जीवन प्रसन्न रहे। घर में प्रसन्नता पर्व मनाइए। प्रसन्नता बनी रहे। ऐसी ठाकुरजी के चरणों में प्रार्थना करता हूं।

खुश रहो, हर खुशी है तुम्हारे लिए।
छोड़ दो आंसूओं को हमारे लिए।

'रामायण' की कथा क्या है? स्वच्छता अभियान ही है। यह 'महाभारत' का पूरा अभियान क्या है? स्वच्छता अभियान ही है कि समाज में जो ठीक नहीं है उसकी सफ़ाई होनी चाहिए। साहित्य क्या करता है? स्वच्छता अभियान ही करता है। हमारे अमंगल को हर लेता है। मंगल को स्थापित करता है। या तो अपने अशुभ को हर लेता है और शुभ जो अशुभ से दब गया था वह खोल देता है। यह सब स्वच्छता अभियान है। डोक्टर क्या करते हैं? स्वच्छता अभियान ही करते हैं। मानव के शरीर में रहे हुए रोग को दूर कर स्वस्थ करता है। आखिर यह सब स्वच्छता अभियान ही है।

मानस–मुशायरा

न हारा है इश्क न दुनिया थकी है।
दीया जल रहा है हवा चल रही है।
मेरे राहबर मुझको गुमराह कर दे,
सुना है कि मंज़िल करीब आ रही है।

–खुमार बाराबंकवी

राशिद किसे सुनाउं गली में तेरी गज़ल,
उनके मकां का कोई दरीचा खुला न था।

–राशिद

आग है पानी है मिट्टी है हवा है मुझमें।
तब तो मानना पड़ेगा कि खुदा है मुझमें।

–किशन बिहारी 'नूर'

जो पहले दिया सो अब मिलता है,
फरियाद न कर, फरियाद न कर।
कर नेक अमल और हर को सिमर,
उत्पात न कर, उत्पात न कर।

–'दिल' साहब

अगर वो अज़नबी है तो मेरे जहन में रहता क्यों है?
अगर वो संगदिल है तो शीशे का मसीहा क्यों है?

•

इससे बढ़कर और क्या मिलत हमें दादे–वफ़ा,
हम तेरे नाम से दुनिया में पहचाने गये।

क्वचिदन्यतोऽपि

शब्द चित्र बना सकते हैं, और चरित्र भी निर्मित कर सकते हैं

कलाग्रन्थ लोकार्पण और अवोर्ड अर्पण समारोह में मोरारिबापू का प्रासंगिक वक्तव्य

सर्व प्रथम गुजरात कला प्रतिष्ठान के दशाब्दी पर्व के अवसर पर कलागुरु नायकसाहब की चेतना को मेरा प्रणाम। कवि काग की पंक्ति है-

मारी तिजोरीमां भर्या छे अढळक नाणां,
पण एनी कुंचीओ कौने सोंपवी?

इस नायकबापा को अपनी कला और विद्या की बेहद संपत्ति की चाबी किसे सौंपे इसकी खोज करते रमणीकभाई मिल गए तो उन्हें सौंप दी। 'गुजरात कला प्रतिष्ठान' की दशक की यात्रा में हमनें जो देखा, मिलना हुआ, सुना। पर जो आज आंखों से देखा तो लगा कि रमणीकभाई, आपने बहुत बड़ा काम किया है।

मैं शब्दोपासक हूं। झूठी प्रशंसा करके मैं शब्दों को खोखला नहीं करता। मैं जातना हूं, शब्दोपासक शब्दों का व्यर्थ उपयोग करे तो माँ सरस्वती शाप देती है। मैं इससे बचना चाहता हूं। इसलिए कहता हूं, उन्होंने कला के लिए अद्‌भुत कार्य किया है। जो स्वान्त: सुखाय है। जो सर्वसुखाय बने इस रीति से किया। अत: मैं उन्हें साधुवाद देता हूं। भामती स्वरूपा उनकी धर्मपत्नी को भी खूब-खूब धन्यवाद देता हूं। आज के उत्सव में मंच पर आसीन आदरणीय कामदसाहब, हमारे समाज के विधविध क्षेत्र के समस्त जयेष्ठजन, गोविंदचाचा, पूज्य स्वामी, जिनकी वंदना की वो पुत्री श्रीधराणी से लेकर कलारत्न और समाजरत्न तक हमने प्रणाम किए वे समस्त कला और विद्योपासकों को नमन कर मैं अपनी प्रसन्नता व्यक्त करता हूं।

मेरी समझ में हमारे यहां तीन शब्द है १. साधना २. आराधना ३. उपासना। मैं 'रामायण' का गायक हूं तो कहता हूं कि 'रामायण' में अहल्या ने साधना की, आराधना शबरी ने की और लंका की राक्षसी पर साधुचरित त्रिजटा ने उपासना की। उपासना माने किसी परम सत्य के पास बैठना। त्रिजटा सीता के पास बैठी थी। आराधना माने गुरु के वचन पर भरोसा रखकर निरंतर पुकारना। कृष्ण दवे के शब्दों में कहूं तो 'ए आवशे, ए आवशे, ए आवशे', ऐसे भाव से आराधना होनी चाहिए। 'राम आयेंगे', ऐसी साधना पाषाणवत् बनकर अहल्या ने की। मुझे लगा है कि कलाजगत में, चित्रजगत में या कोई भी कला हो उसमें साधना, आराधना और उपासना हो तो ही सार्थक हो सके। भीतर से पुकार उठे कि मुझे भी सर्जन करना है। शास्त्र कहते हैं, हमारे यहां अनेक प्रमाण है पर अंतिम प्रमाण तो सर्जक की अंत:करण की प्रवृत्ति ही है।

सतां हि संदेहपदेषु वस्तुषु प्रमाणम् अंत:करणप्रवृत्तय:।

उनके अंतर में जो पुकार उठती होगी उसमें आराध तत्त्व रहा होगा, ऐसा शास्त्रों में कहा गया है। रमणीकभाई ने कहा, मैं घंटों तक बैठा रहता था। जब महर्षि वाचस्पति भाष्य पर भाष्य रचते थे तब दीपक बुझने को होता था और भामती आकर प्रज्वलित करती थी और इसे आश्चर्य होता था कि यह कौन है मेरे घर में? वह आदमी यह भी भूल गया कि वे ब्याहता हैं। स्त्री ने कहा, मैं आपकी किंकरी हूं, धर्मपत्नी हूं। वाचस्पति की आंखें भर आई। उन्हों ने कहा कि मैं अपने भाष्यग्रंथों का नाम 'भामती टीका' रखूंगा। ऐसा भामती भावभरा काम हुआ। यह आदमी घंटों तक बैठा रहे यह मेरी दृष्टि से साधना है। तीसरा उपासना; वे नायकबापा के पास बैठे होंगे जो परम चेतना है। 'रामचरित मानस' में लिखा है कि भगवान शंकर एक ऐसा देव है कि 'सकल गुण धाम', उनमें सभी कलाएं समाहित है। परम तत्त्व शिव सभी में उतरते हैं किसी न किसी रूप में या किसी मात्राभेद के रूप में! ऐसा एक अद्‌भुत कार्य हो रहा है। अब सूई में धागा पिरोनेवाली बात विज्ञान युग में नहीं रही। हमनें प्रगति की है। अच्छी बात है। इसका जतन बहुत जरूरी है। सरकार, समाज या इसमें रुचि रखनेवाले भी करे। एक व्यक्ति जो ऐसा प्रतिष्ठान रच सके, दस वर्षों से एक महान यज्ञ करे, इसमें आहुति देने का एक घंटें का समय मुझे भी मिला इसका मैं आनंद व्यक्त करता हूं।

मैं चित्रकार नहीं हूं पर मुझे हनुमानजी का चेहरा चित्रित करना आता है। मुझे कागज-पेन दीजिए। ऐसे अवसर पर आया हूं तो कुछ नखरा मैं भी बताऊं! इतने में पास हो जाय तो पास हो जाय न यार! थेंक्यू यार! तो बचपन से मुझे हनुमानजी का चित्र बनाना आता है। मैंने बनाया पर मेरा तो यह क्षेत्र नहीं है। इस क्षेत्र को नमन करता हूं। मुझे आनंद है। मैं ट्रेनिंग कोलेज में पी.टी.सी. कर रहा था। तब चित्र बनाने का पिरियड होता था। मुझसे कहा गया बापू, आप 'रामायण' गाते हैं बचपन से तो राम का चित्र बनाईए। मैंने राम का चित्र बनाने की कोशिश की। मेरे अध्यापक ने कहा कि 'तुमने राम का चित्र बनाने की कोशिश की है पर रावण का चित्र बन गया है!' फिर मैंने बंद किया कि यह अपनी लेन नहीं है! यह शाहबुद्दीनभाई कहते हैं। फिर प्रायश्चित्त स्वरूप मैंने रावण पर दस कथा शब्दों से चित्रित की। शब्द भी चित्र बना सकते हैं। शब्दों में चित्र बनाने की ताकत है। शब्द में सामर्थ्य है कि चरित्र निर्माण भी कर सके। आज ऐसी एक अद्‌भुत कला की सेवा हो रही है। पता नहीं, समाज इस ओर ध्यान देता है

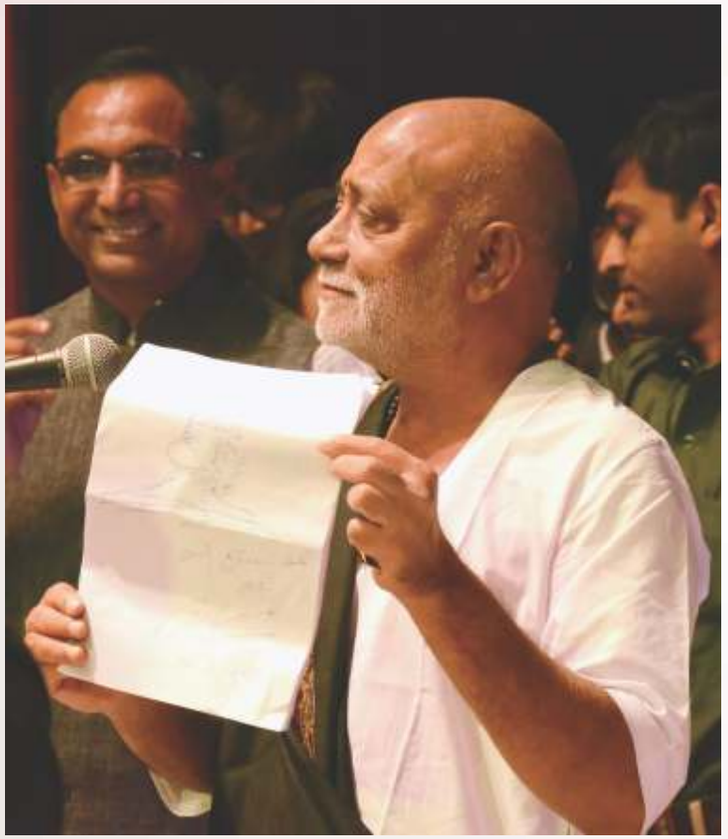

बिदा लूं कि एक आदमी का किंमती घोडा चोरी हो गया। बहुत कीमती था। पांचाल जाति का था। ऐसे घोडे की मौत पर सौराष्ट्र में लोग पंद्रह-पंद्रह दिन शौक मनाने जाय कि आपका घोडा नहीं रहा! ऐसे घोडे की चोरी हो गई। फिर सबको ऐसा लगा कि इसका कीमती घोडा चोरी हो गया तो कितना दु:खी होगा? पर वहां देखा कि वह तो खुश था, हंस रहा था! सब ने पूछा, हम तो सोच रहे थे, आप दु:खी होंगे पर आप तो खुश है! इसका कारण क्या है? उसने कहा, 'इसलिए कि मैं घोडे पर बैठा होता तो मैं भी चोरी हो जाता!' साहब, घोडा चोरी हो जाय तो कोई हर्ज़ नहीं। इस देश का असवार चोरी नहीं होना चाहिए। इस देश का कलाकार खोना नहीं चाहिए। इस देश का विद्यापुरुष गुम नहीं होना चाहिए। ऐसा असवार खो न जाय। अत: गुजरात कला प्रतिष्ठान का यज्ञ प्रज्वलित हुआ है। चाहे रमणीकभाई ऐसा कहे, मैंने दीप प्रज्वलित किया है। पर यह दीप जो ऐसा ही प्रज्वलित रहेगा तो इसमें मुझे कबीर की मशाल के दर्शन हो रहा है। अंत में हमारे गुजराती के समर्थ कवि रमेश पारेख की दो पंक्तियां कहकर बिदा लेता हूं-

सांई तने जो रंगनी समजण लगीर होत।
तुं ये वणे छे वस्त्र, तो तुंये कबीर होत।

या नहीं! पर एक साधु के रूप में मैं इसका आनंद ले रहा हूं। कला में कितनी ताकत है! मैंने कई बार कहा है, पुन: कहता हूं कि यह कला का सामर्थ्य है कि भगवान कृष्ण में कला थी फलत: काल को अपना मंच बनाकर उस पर कला नर्तन करती थी। कला में शक्ति है कि काल के सिर पर नर्तन करे। कालिय नाग को मंच बनाया। उस पर 'मधुराधिपतेरखिलमं मधुरम्।' कृष्ण ने नर्तन किया। ऐसी कला की उपासना इस प्रतिष्ठान द्वारा हो रही है। इस दशाब्दी प्रसंग पर हाज़िर रहने का आनंद है। और यह लगातार जारी रहना चाहिए।

अंत में इतना ही कहूंगा कि मुझे बोलने की इच्छा तो बहुत है और मेरा काम यही है। मैं यही कहकर

('कलानुं अनुष्ठान' कलाग्रंथ लोकार्पण और अवोर्ड अर्पण समारोह के अवसर पर सुरत (गुजरात) में प्रस्तुत वक्तव्य: दिनांक १०-३-२०१६)

राष्ट्रीय या सामाजिक सफ़ाई को हमने आवश्यक गुण माना नहीं और ऐसे पाला नहीं। अपनी प्रथा से हम अमुक ढंग से नहाते हैं। अन्यथा जो नदी, तालाब या कुएं के तट पर हम श्राद्ध और ऐसे अन्य धर्म-विधियां करते हैं और जो जलाशय में हम पवित्र होने हेतु स्नान करते हैं उसका पानी व्यय करने या गंदा करने की घिन हमें नहीं होती। हमारी यह कुसूर को मैं एक बड़ा दुर्गुण समझता हूं। और हमारे गांवों की एवं हमारी पवित्र नदियां के पवित्र तटों की लांछन लगे ऐसी दुर्दशा या गंदगी में से पैदा होते रोगों वह दुर्गुण के फलस्वरूप हम सहते हैं।

जहां शरीर की स्वच्छता, घर की स्वच्छता और गांव की स्वच्छता हो, युक्ताहार और आवश्यक व्यायाम हो, वहां न्यूनतम रोग होते हैं। और ऐसा कह सकते हैं कि उपर्युक्त सफ़ाई के साथ दिल की सफ़ाई हो तो रोग असंभवित बन जाते हैं। दिल की सफ़ाई रामनाम के बिना नहीं हो सकती। इतनी-सी बात गांव के लोग समझ जाएं तो वैद, हकीम या डाक्टर की आवश्यकता नहीं रहती।

– महात्मा गांधी

॥ जय सीयाराम ॥